

राजस्थान दुड़े

बेनकाब हुए
दोस्ती का दंभ
मरने वाले

5

पाक की नापाक
हाकतें थमना
कठिन

8

बेतुके बयानों से
बवाल

19

Scan Me



LOCATION

कैंसर का ईलाज, हम हैं आपके साथ...



PET CT स्कैनर मशीन



रेडियोथेरेपी मशीन

एक ही छत के नीचे कैंसर का निःशुल्क* सम्पूर्ण ईलाज निःशुल्क रहने की व्यवस्था, आने जाने की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध

कैंसर
PET CT SCAN
प्रतिदिन उपलब्ध

कैंसर रेडियोथेरेपी
(सिकाई)
प्रतिदिन उपलब्ध

कैंसर सर्जरी एवं
दूरबीन ऑपरेशन

कैंसर कीमोथेरेपी
कैंसर इम्युनोथेरेपी

**CT Guided Biopsy/
FNAC IHC
Mammography**



डॉ. अभिषेक शर्मा
MD, DM (Medical Oncology)
कैंसर रोग विशेषज्ञ
पूर्व - टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल, मुम्बई



डॉ. मोहित भारद्वाज
MBBS, MS, FMAS, CCEPS
M Ch Surgical Oncology (AIIMS)
कैंसर सर्जरी एवं दूरबीन कैंसर सर्जन



डॉ. मुकुल चोबीसा
MD AIIMS Jodhpur
रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट



डॉ. गौरव गहलोत
MBBS, MD
रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट

जोड़-धूटना, कूल्हा प्रत्यारोपण



डॉ. अमित शर्मा
MBBS, MS (Orthopedics)
Consultant Joint Replacement & Orthopedics Surgeon
Ex-Consultant Shalby Hospital, Ahmedabad

पश्चिमी राजस्थान में पहली बार 3D Augmented
धूटना प्रत्यारोपण सर्जरी



न्यूरो स्पाइन सर्जरी
दिमाग व रीढ़ की हड्डी के निःशुल्क ऑपरेशन

डॉ. राकेश कुमार सिहाप



MS Mch - न्यूरो एवं स्पाइन सर्जरी
पूर्व चिकित्सक PGI Chandigarh
पूर्व चिकित्सक AIIMS Rishikesh

- एंडोरेकोपिक व माइक्रोरेकोपिक न्यूरो व स्पाइन सर्जरी
- ब्रेन ट्यूमर सर्जरी • लकवा • नसों की कमज़ोरी • स्ट्रोक यूनिट

ECHS, RGHS, CGHS, Indian Oil, Railways, ESIC, Oil India, ONGC, HPCL, EIL व सभी इंश्योरेन्स कंपनी, TPA योजना में निःशुल्क कैंसर ईलाज उपलब्ध



गोयल हॉस्पीटल

रेजीडेंसी रोड, जोधपुर (राज.)
www.goyalhospital.org

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें - 7412025320, 8769707913



एस के जी कैंसर हॉस्पीटल

झालामण, जोधपुर (झालामण चौराहे से सिर्फ 3 कि.मी. दूरी पर)
www.skgcancerhospital.com



राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online



RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 5, अंक 6, जून, 2025
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक
दिनेश रामावत
राजनीतिक सम्पादक
सुरेश व्यास
सम्पादक
अजय अस्थाना
प्रबंध सम्पादक
राकेश गांधी

ब्लूटो प्रभारी
जयपुर - बलवंत राज मेहता

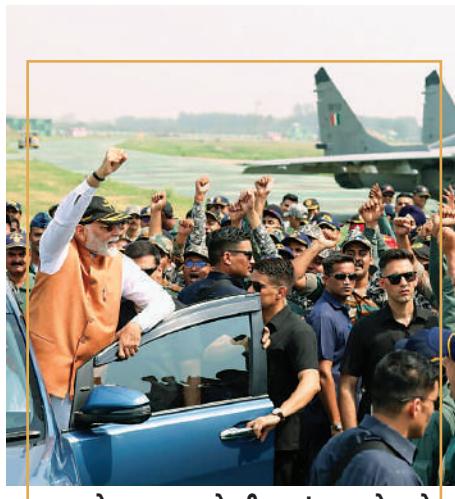
ऐखाचित्र- राजेंद्र यादव

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लॉर, एम.आर. हाईटस
महावीर कॉलोनी, भारकर सर्किंग,
रातनाडा, जोधपुर - 342011
हाटसप्पे नंबर - 9828032424
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा
में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में
किया जाएगा।

• मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं
प्रकाशक पूर्ण अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लॉर,
महावीर कॉलोनी, रातनाडा, जोधपुर-342011 से
प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 01 पारश्वनाथ
इंडस्ट्रीजल एरिया, रिलायंस वेरर हाउस के पास,
मोगरा कला, जोधपुर-342802 में मुद्रित,
सम्पादक : अंजय अस्थाना।

अंदर के पेजों पर

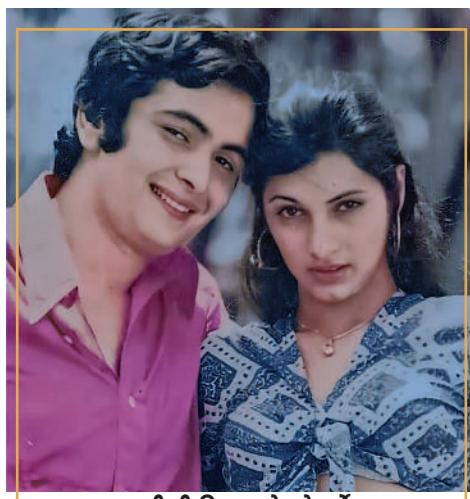


05... बेनकाब हुए दोस्ती का दंभ भरने वाले

- 4.. अपनी बात - राजनीति नहीं, एकजुटा दिखाने का वक्त
- 8.. पाक की नापाक हरकतें थामना कठिन
- 11.. परमाणु छाते के पार एक भारतीय सूर्योदय
- 13.. वैरिक नंगों पर भारत की निरायिक आवाज
- 15.. आक्रोश नहीं, समर्थ भारत का नया रूप
- 19.. बेतुके बयानों से बवाल
- 26.. विरासत तो मिली, वाइस नहीं
- 28.. खुलकर सामने आ गई आंतरिक कलह
- 30.. कठिन चुनौती में नीतीश कुमार



16... कुर्सी के लिए इस बार बढ़ेगी रार!



38... पहली ही फिल्म से बड़े पर्दे पर राज

- 33.. कभी आंतरिक विकास और जीवन की दिशा थी शिक्षा
- 35.. टेस्ट क्रिकेट के स्वर्णिम युग का पटाखेप
- 41.. परिवर्तन व प्रेरणा का माध्यम है साहित्य

नियमित कालम

- 17... बोल हरि बोल
- 18... बात बेलगाम
- 37... रचना की बजाय आत्म-प्रचार पर जोर
- 42... ग्रहों की चाल



राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

राजनीति नहीं, एकजुटता दिखाने का वक्त



दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

भाजपा और प्रधानमंत्री
नरेंद्र मोदी जहां
ऑपरेशन सिंदूर को
अपने पक्ष में भुनाने की
पूरी कोशिश कर रहे हैं,
वहीं कांग्रेस नेता राहुल
गांधी व कांग्रेसाध्यक्ष
मलिलकार्जुन खरगे
कभी ऑपरेशन सिंदूर
पर सवाल उठाते हैं
तो कभी पाकिस्तान
को पहले सूचना दे
दिए जाने की बात पर
सरकार को धेरने की
कोशिश कर रहे हैं। केंद्र
सरकार ने बहुदलीय
प्रतिनिधिमंडलों को
विदेशों में भेजकर
पाकिस्तान में पल रहे
आतंक को बेनकाब
करने की रणनीति
अपनाई है और इसके
अच्छे नतीजे भी सामने
आ रहे हैं।



भा रत और पाकिस्तान के बीच पहलगाम हमले के बाद शुरू हुए ऑपरेशन सिंदूर को भले ही स्थगित कर दिया गया है, लेकिन आज भी दोनों देशों के बीच तनाव में कमी महसूस नहीं की जा रही। पाकिस्तान लगातार पहलगाम हमले के बाद साठ साल पुराने सिंधु जल समझौते को स्थगित किए जाने के मामले में गैदड भभकियां दे रहा है। भारत के खिलाफ उसका गलत सूचनाएं फैलाने वाला प्रोपेरेंडा वार अब भी जारी है। पाकिस्तानी की कथित निर्वाचित सरकार ने सेनाध्यक्ष जनरल असीम मुनीर को फिल्ड मार्शल बना दिया। इसके बाद मुनीर के भी भड़काने वाले बयान लगातार सामने आ रहे हैं। इधर, भारत स्थिति पर नजर रखे हुए हैं तो इस मुद्दे पर भाजपा-कांग्रेस में राजनीति भी शुरू हो गई है।

भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां ऑपरेशन सिंदूर को अपने पक्ष में भुनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी व कांग्रेसाध्यक्ष मलिलकार्जुन खरगे कभी ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठाते हैं तो कभी पाकिस्तान को पहले सूचना दे दिए जाने की बात पर सरकार को धेरने की कोशिश कर रहे हैं। केंद्र सरकार ने बहुदलीय प्रतिनिधिमंडलों को विदेशों में भेजकर पाकिस्तान में पल रहे आतंक को बेनकाब करने की रणनीति अपनाई है और इसके अच्छे नतीजे भी सामने आ रहे हैं। इन प्रतिनिधिमंडलों में भाजपानीत एनडीए के अलावा कांग्रेस व अन्य दलों के सांसद भी हैं, लेकिन कांग्रेस अपने ही नेताओं को प्रतिनिधिमंडल में शामिल किए जाने के मुद्दे पर भी सरकार से तनाती करती नजर आई है।

जाहिर है कि पाकिस्तान ने हमेशा आतंक को पाला पोसा है और पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई और पाकिस्तान सेना के इशारे पर भारत में आतंकी हमलों में सैकड़ों-हजारों निर्दोष लोगों की जान गई है। पाकिस्तान खुद इस बात को मान चुका है कि उसने अमरीका जैसे देशों के दबाव में आतंकियों को पनपाने का काम किया। ऐसे में मोदी सरकार की इस नीति की सराहना की जानी चाहिए कि उसने पाकिस्तान के एक्सपोज करने के साथ- साथ भारत की संयुक्त कार्रवाई से दुनिया को अवगत करवाया जा रहा है। ऐसे वक्त में जब राजनीति हो तो पीड़ा होती है।

दुनिया में भारत की पहचान न सिर्फ सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश, बल्कि एक जिम्मेदार मूल्क के रूप में है। सम्भवतः पहली बार भारत ने आतंक को जबाब देने के लिए ऑपरेशन सिंदूर जैसा आक्रामक नजरिया दिखाया है। हालांकि इससे पहले मोदी के पहले व दूसरे कार्यकाल में सर्जिकल स्ट्राइक हुए हैं, लेकिन इस बार पाकिस्तान को साफ संदेश दे दिया गया है कि उसने दुबारा हिमाकत की तो और सख्त लहजे में जबाब देने में भारत सक्षम है।

हालांकि वैश्विक परिस्थितियों और खासकर चीन-पाकिस्तान के गठजोड़ ने दक्षिण एशिया में कड़ी सामरिक चुनौतियां खड़ी की हैं, लेकिन भारत आज तक संयम के साथ ही हर स्थिति का जबाब देने का पक्षधर रहा है। इधर, अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की चेष्टा भी भारत-पाकिस्तान के बीच शांति कायम रखने की बाजाय इसे और भड़काने की नजर आती है। वे लगभग नौ बार कह चुके हैं कि उन्होंने आपसी व्यापार का हवाला देकर दोनों देशों का झगड़ा रुकवाया। इधर, चीन को चिंता है कि भारत ने पाकिस्तान पर ज्यादा सख्ती की तो उसके पाकिस्तान में निवेश किए गए अरबों डॉलर ढूब जाएंगे, इसलिए वह भी पाकिस्तान को परोक्ष-अपरोक्ष रूप से समर्थन दे रहा है। उसने भारत के खिलाफ बांग्लादेश ही नहीं, नेपाल जैसे देशों को भी भड़काने में कोई कमी नहीं रखी है। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों का फर्ज बनता है कि वे ऐसे समय में अपना फायदा देखने वाली संकुचित राजनीति की बजाय इन हालात को राष्ट्र की अस्मिता पर चुनौती के रूप में देखें। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार संसद में कहा था कि सरकारें आती हैं व जाती है, लेकिन देश का मस्तक नीचा नहीं होना चाहिए। उनकी यह बात खुद भाजपा और अन्य सभी दलों के लिए आज भी सामयिक है। सरकार को भी चाहिए कि वे खुद श्रेय और सियासी फायदा उठाने की कोशिश से बचे और इस कठिन समय में सभी सियासी दलों को विश्वास में लेते हुए इस संवेदनशील मुद्दे से निपटने का प्रयास करें। वहीं विपक्षी दलों का भी कर्तव्य बनता है कि वे कोई ऐसी बयानबाजी न करें कि जिससे देश को दुनिया के समने नीचा देखना पड़ा।

सीख: ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत को मिला कूटनीतिक अनुभव, कौन साथ और कौन नहीं, स्पष्ट रूप से आया सामने

बेनकाब हुए दोस्ती का दंभ भरने वाले



राजेश कसेरा वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीति विश्लेषक

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद भारत कूटनीतिक रूप से बहुत बदल गया। खासकर ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने तो भारत को इतने कड़वे अनुभव दिए कि यह स्पष्ट हो गया कि घर के अंदर और बाहर कौन साथ में खड़ा है और कौन नहीं? खासकर जो गहरी दोस्ती का दंभ भरते थे, वे भी बेनकाब हो गए। फिर चाहे वे अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प हो या रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन। पाकिस्तान के साथ युद्ध के मुहाने पर खड़े भारत को इस दौरान इतनी बड़ी-बड़ी सीख मिली कि देश के कर्णधारों के दिमाग के सारे छेद खुल गए तो आंखों के सामने पड़ा परदा भी हट गया।



पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत के कंधे को सहला कर दर्द बांटने वाले दुनिया के शक्तिशाली और समृद्ध देशों ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद चुप्पी साध ली। किसी ने भारत की इस सख्त कार्रवाई पर कोई टिप्पणी नहीं की। भारत ने 7 मई की कार्रवाई के बारे में दुनिया को बताया तो सब हैरान रह गए। किसी ने उम्मीद तक नहीं की थी कि भारत 26 मार्सम लोगों की निर्मम हत्या का इस करत जवाब देगा। आतंक और आतंकियों को पालने वाले पाकिस्तान को घर में घुसकर मारेगा। आतंकियों के नौ ठिकानों को नेस्तनाबूद कर देगा। भारत अपनी संसद पर वर्ष 2001 में हुए कायराना हमले से लेकर 2025 की पहलगाम त्रासदी तक इस खोफनाक रूप से अपना बदला चुकाएगा, इसकी कल्पना तक किसी ने नहीं की होगी। तभी तो देश की दो जाबांज महिला अफसरों कर्नल सौफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बारे में देश और विश्व को विस्तृत जानकारी दी तो ये स्पष्ट हो गया कि दुनिया में दमदार तरीके से आगे बढ़ने का एक ही गत्ता है और भारत को मजबूत आर्थिक और सैन्य शक्ति बनना ही होगा।

दुनिया को पता पाकिस्तान दोषी, फिर भी चुप हैं

बीते 40 वर्षों की बात करें तो पाकिस्तान की 30 से किए गए आतंकी हमलों में 20 हजार से ज्यादा भारतीयों ने अपनी जान गवाई। दुनिया में कहीं पर भी बड़े आतंकी हमले हुए तो उनका सीधा कनेक्शन पाकिस्तान के साथ निकला। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने संबोधन में अमेरिका और ब्रिटेन में हुए हमलों के बारे में बताया था। इन हमलों के मास्टरमाइंड भी पाकिस्तान में मिले थे। भारत बरसों से संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ दुनिया के शक्तिशाली देशों को पाकिस्तान की करतूतों के बारे में बताता रहा। सबको पता है कि पाकिस्तान आतंक और आतंकियों को पाल रहा है। आतंकियों के सबसे ज्यादा प्रतिबंधित संगठन उसके मुल्क में पल रहे हैं। वहां की सरकार और सेना का उनको प्रश्न है। इसके बावजूद किसी देश ने पाकिस्तान पर कड़ी कार्रवाई करने का काम नहीं किया। उल्टे भारत को सवालों के बेरे में खड़ा किया। यही कारण रहा कि इस बार भारत ने एक और कूटनीतिक रणनीति के तहत दुनिया के 33 देशों में अपने 51 प्रतिनिधियों को सबूतों के साथ भेजा। इन 33 देशों का चयन काफी सोच-समझकर किया गया। इन देशों में 15 देश संयुक्त राष्ट्र सुक्ष्म परिषद (यूएनएससी) के स्थायी या अस्थायी सदस्य हैं। पांच अन्य देश जल्द ही सदस्य बनने वाले हैं। बाकी देशों को इसलिए चुना गया, क्योंकि उनकी आवाज वैश्वक मंच पर दम रखती हैं। ये देश भारत के आतंकवाद विरोधी रूख को समझने और समर्थन देने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। भारत इन दौरों के जरिए दुनिया को बताना चाहता है कि वह आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर अडिग है। सिंधु जल संधि को निलंबित करने का फैसला भी तब तक लागू रहेगा, जब तक पाकिस्तान आतंकवाद को समर्थन देना बंद नहीं करता।

भारत ने दुनिया को बताई अपनी नीति-दण्डनीति



ऑपरेशन सिंदूर पर संघर्ष विराम के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में कई बड़ी बातें कहीं। पहला यह कि खून और पानी साथ नहीं बहेगा। उन्होंने कहा कि टेरर और ट्रेड साथ नहीं चलेगा। आतंक फैलाने वाले देशों के साथ भारत न तो कारोबार करेगा और न उन्हें कोई विशेष दर्जा देगा। भारत की इस बदली नीति की वजह है बढ़ती आर्थिक ताकत। भारत की स्वदेशी हथियार तकनीक, चाहे वह आकाश मिसाइल हो या रूस के सहयोग से विकसित ब्रह्मोस, उन्होंने अपनी अचूक मारक क्षमता दिखाई है। एक तरफ देश आर्थिक तौर पर समृद्ध हो रहा है तो दूसरी तरफ सैन्य क्षमता भी बढ़ रही है। शांति के लिए मजबूत आर्थिक और सैन्य ताकत जरूरी है। आर्थिक और सामरिक ताकत की वजह से ही भारत अपनी नीति बदल रहा है। भारत की अब तक की नीति रही कि वह किसी दूसरे देश के मामले में न हस्तक्षेप करेगा और न किसी दूसरे देश का हस्तक्षेप मंजूर करेगा। ऑपरेशन सिंदूर इस नीति में बदलाव का वाहक बनकर आया। पहले भारत आतंक के खिलाफ विदेशी धरती पर कार्रवाई के लिए विदेशी ताकतों पर निर्भर रहता था। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने दिखाया कि वह अपनी जनता की रक्षा के लिए किसी की मंजूरी का इंतजार नहीं करेगा।



भारत ने यह संदेश भी दिया कि आतंकी और उसके मास्टरमाइंड कहीं छिप नहीं सकते। भारत उन्हें खोज निकालेगा और उन्हें किए की सख्त सजा देगा। भारत ने यह भी दिखाया कि अगर पाकिस्तान आतंकी कार्रवाई के खिलाफ जवाबी हमला करेगा तो उसे करारा जवाब दिया जाएगा। आजादी के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर बड़ा मुद्दा रहा है। पाकिस्तान हरसंभव मंचों, अंतरराष्ट्रीय विरादी आदि के सामने कश्मीर राग अलापता रहा। इसके जरिए जरूरी सहयोग और संसाधन हासिल करता रहा। दोनों देशों के बीच कश्मीर का नैरेटिव संदैव हावी रहा। लेकिन मौजूदा दौर में हालात बदल गए हैं। कश्मीर की बजाय आतंक बड़ा नैरेटिव बनकर उभर गया। राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान से सिर्फ आतंक और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर बात होगी। भारत की नई और बदली नीति का ही ये स्पष्ट संकेत है।

ज्ञान और सीख : कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं, केवल स्थायी हित



भारत की पाकिस्तान पर की गई कड़ी सैन्य कार्रवाई का किसी बड़ी शक्ति चाहे अमेरिका हो, रूस हो, ऑस्ट्रेलिया हो या क्वाड का एक और सदस्य जापान, किसी ने खुलकर समर्थन नहीं किया। इन देशों की दूरी ने यही ज्ञान और सीख भारत को दी कि किसी भी राष्ट्र का कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता, केवल उनके स्थायी हित होते हैं। दुनिया में भारत की बढ़ती ताकत, साख और आत्मनिर्भर बनने की सोच से मित्र और शत्रु दोनों ही नाराज दिखते।

रूस और ऑस्ट्रेलिया भी नहीं निभा पाए सच्ची दोस्ती



पहलगाम में हुए नृशंस आतंकी हमले के बाद रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रथानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की और 26 पर्यटकों की कूर हत्या की निंदा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमले के दोषियों को न्याय के कटघरे में लाया जाना चाहिए। लेकिन जैसे ही भारत ने आॅपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, उन पर हमले शुरू किए और इसके बाद पाकिस्तान ने भारत पर ड्रोन और मिसाइलों से हमले किए तो उनका कोई बयान नहीं आया। इसी तरह से ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने भी पहलगाम हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी से बात की थी। उन्होंने दुनिया को झकझोर देने वाली बेतुकी हिंसा के लिए अपनी संवेदनाओं का इजहार किया और दोषियों को जवाबदेह ठहराए जाने की अपील भी। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने भी पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान समर्थन नहीं दिखाया।

भारत को खला रूस का बदलता रवैया

भारत में सालों से यही कहानी सुनाई जाती रही कि 1971 में पाकिस्तान के खिलाफ लड़ाई में रूस ने किस तरह से मदद की थी। भारतीय जनमानस के मन में रूस की दोस्ती इतनी गहराई से बसी कि ये लोक कथाओं का हिस्सा बन गई। भारत के लोग हर हाल में रूस पर भरोसा करते हैं, जबकि शायद कोई भारतीय होगा जो अमेरिका पर आंख मूंदकर भरोसा करने की सलाह देगा। वह भी तब जब अमेरिका ने पिछले कुछ सालों में टेक्नोलॉजी और डिफेंस सेक्टर में भारत की जबरदस्त मदद की। लेकिन पाकिस्तान के साथ संघर्ष में रूस की चुप्पी सबको खली। इन हालात में भारत को बहुधुरीय कूर्तनीति अपनानी होगी। फ्रांस, अमेरिका, जापान और इजरायल जैसे देशों के साथ साझेदारी को और गहराई देनी होगी, जिससे कि चीन और पाकिस्तान के खिलाफ मजबूत सुरक्षा तंत्र विकसित किया जा सके। रूस के साथ संबंध बनाए रखें, लेकिन उस पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहें। भारत को यह समझना होगा कि विश्व राजनीति भावनाओं से नहीं, बल्कि हितों से संचालित होती है।

इतिहास गवाह, भारत कभी किसी का मोहताज नहीं रहा



इतिहास गवाह है कि भारत ने अकेले 1971 की लड़ाई में अमेरिका के समर्थन के बावजूद पाकिस्तान को हराया था। 1998 में परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका समेत यूरोप देशों ने प्रतिबंध लगा दिए, फिर भी भारत डटा रहा। भारत ने अपने दम पर ही 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 में पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक किए। वह भी बिना वैश्वक समर्थन की उम्मीद किए। 2025 में भी दुनिया के समर्थन के बिना पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। इन अनुभवों से सीख लेकर भारत को अपनी डिफेंस ताकत को और मजबूत करना होगा। अर्थव्यवस्था को मजबूत करना होगा। एक ताकत के तौर पर विश्व में उभरना होगा, ताकि भविष्य में किसी के समर्थन का मोहताज तक नहीं होना पड़े।

आतंकियों के 'भाईजान' की आगे की राह और मुरिकलभरी पाक की नापाक हरकतें थमना कठिन



हरीश मलिक
वरिष्ठ पत्रकार और लेखक

भारत ने पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत करके और 100 से ज्यादा आतंकियों का सफाया करके पाकिस्तान के झूट को एक बार फिर एक्सपोज कर दिया है। हालात यह हैं कि अब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सरकार ने वैश्विक आतंकवादी मसूज अजहर को 14 करोड़ रुपए का मुआवजा देने का फैसला किया है। पाक का तर्क है कि आतंकवादियों के खिलाफ भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' में आतंकी मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्य और 4 करीबी सहयोगी मारे गए।



प हलगाम में आतंकी हमले के जवाब में भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद सोशल मीडिया पर कई दिलचस्प मीम्स की भी बाढ़-सी आ गई। इनमें से ही एक था- ऑपरेशन सिंदूर तो ज्ञानी है, हस्ती-मंडप अभी बाकी है। इसे एक पुरानी कहावत के जरिए पाकिस्तान ने चरितार्थ कर दिखाया है। यह कहावत है कि कितनी ही कोशिश कर लें कुते की पूँछ टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। पाकिस्तान और उसके प्रधानमंत्री इतना बड़ा ऑपरेशन होने के बाबजूद कुछ ऐसा ही कर रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद यह दुनियाभर के सामने आ गया है कि पाकिस्तान आतंकवादियों की सबसे बड़ी शारणगाह बना हुआ है। पाकिस्तान और उसके हुक्मरां पहले इसे लगातार नकारते रहे हैं, लेकिन अब भारत ने पाकिस्तान में नौ आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत करके और 100 से ज्यादा आतंकियों का सफाया करके पाकिस्तान के झूट को एक बार फिर एक्सपोज कर दिया है। हालात यह हैं कि अब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सरकार ने वैश्विक आतंकवादी मसूज अजहर को 14 करोड़ रुपए का मुआवजा देने का फैसला किया है। पाक का तर्क है कि आतंकवादियों के खिलाफ भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' में आतंकी मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्य और 4 करीबी सहयोगी मारे गए। इसी मुआवजे से पता चलता है कि पाकिस्तानी सरकार किस तरह आतंकवादियों का समर्थन करती है। भारत ने पाकिस्तान को लोन देते समय पहले ही आईएमएफ को चेताया था कि पाक सरकार लोन का पैसा आतंकवाद को पालने-पोसने में खर्च करेगी। भारत की बात अक्षरशः सच साबित हुई है।

पाक में जैश के मरकज तबाह

पहलगाम के आतंकी हमले में आतंकियों ने निर्दोष हिंदू पर्यटकों की धर्म पूछ-पूछकर निर्दयता से हत्या कर दी थी। इसके बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ ताबड़तोड़ एक्शन लिए। सबसे पहले सिंधु जल समझौते को रद्द कर दिया, साथ ही पाकिस्तान के लिए अपना एयरस्पेस भी बंद कर दिया था। इसके बाद सबसे बड़ा एक्शन 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू हुआ, जिसके तहत पीओके और पाकिस्तान में जैश-ए-मोहम्मद के मुख्य प्रशिक्षण अड्डे मरकज सुभान अल्लाह पर कई हवाई हमले किए गए। यह स्थान बहावलपुर के पास कराची-तोरखम राजमार्ग पर लगभग 15 एकड़ में फैला हुआ है। जैश के वास्तविक प्रमुख मसूद अजहर, मुफ्ती अब्दुल रजूफ असगर, मौलाना अम्मार और अन्य बड़े आतंकवादी भी यहां रहते थे। भारतीय मिसाइल स्ट्राइक के ताबड़तोड़ हमलों में सौ से अधिक आतंकी मारे गए। इन आतंकियों में मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्य और 4 करीबी सहयोगी भी शामिल थे।

आतंक का आका चौदह करोड़ मसूद को देगा



पाकिस्तान सरकार भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान मारे गए वैश्विक आतंकवादी मसूद अजहर को 140 मिलियन पाकिस्तानी रुपए का मुआवजा देने जा रही है। क्योंकि 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान उसके 14 परिजन मारे गए थे। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने प्रत्येक मृतक के लिए एक करोड़ रुपए मुआवजा मंजूर किया है, जो मारे गए लोगों के कानूनी उत्तराधिकारियों को दिया जाएगा। इसका अर्थ यह है कि मसूद अजहर को कुल 14 करोड़ रुपए तक मिलेंगे। पाकिस्तानी मीडिया में अजहर के हवाले से जारी एक बयान में पुष्टि की गई है कि मारे गए 14 लोगों में उसकी बड़ी बहन और उसका पति, एक भतीजा और उसकी पत्नी, एक भतीजी और उसके परिवार के अन्य पांच बच्चे शामिल थे। अपने परिजनों के शवों पर बिलखते आंतकी अजहर ने यह भी कहा कि इस हमले में मैं ही क्यों नहीं मर गया?

पुलवामा और संसद पर हमले का आरोपी...

काबिले जिक्र है कि मसूद अजहर एक वैश्विक आतंकवादी है। उसे 2019 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा "वैश्विक आतंकवादी" घोषित किया गया था। उसने 2019 में पुलवामा में आत्मघाती हमले की साजिश रची थी। इस हमले में सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। भारत ने इसके बाद भी सर्जिकल स्ट्राइक करते पाकिस्तान में आतंकियों के अड्डों को तहम-नहस कर दिया था। इसके अलावा 2001 में संसद पर हुए हमले में भी मसूद अजहर का नाम सामने आया था। इस हमले के बाद भारत और पाकिस्तान युद्ध की कगार पर आ गए थे। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान ने आतंकवादियों के समर्थन में भारत पर हमला करने का प्रयास किया, जिसे भारत ने जबरदस्त तरीके से विफल कर दिया था। एक दर्जन पाकिस्तानी एयरबेसों और सैन्य प्रतिष्ठानों को बुरी तरह तबाह कर दिया।

UNSC में पाकिस्तान को घेरेगा भारत



भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) की प्रतिबंध समिति की आगामी बैठक में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मामला जोर-शोर से उठाने की तैयारी कर ली है। आतंकियों के खिलाफ प्रतिबंध लगाने वाली संयुक्त राष्ट्र की समिति के साथ भारतीय अधिकारी काम कर रहे हैं। इसके तहत भारतीय अधिकारी लश्कर-ए-तैयबा की फ्रेंटल शाखा द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF) की भूमिका पर विस्तृत सबूत पेश करेंगे। इसी ने 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले की जिम्मेदारी ली थी। इसमें 26 निर्दोष नागरिकों की जान गई थी। भारत अब TRF को वैश्विक आतंकी सूची में डालने और इसके नेताओं पर यात्रा प्रतिबंध तथा आर्थिक पार्बद्धियां लगाने की मांग करेगा। भारत एक और जहां TRF को वैश्विक आतंकी संगठन घोषित करवाने की कोशिश करेगा, वहां दूसरी ओर पाकिस्तान की भूमिका को उजागर कर अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसे धेरने की रणनीति अपनाएगा। बेहद हैरानी की बात है कि एक और भारत में आपराधियों के घरों पर बुलडोजर चलाया जा रहा है। वहां, दूसरी ओर पाकिस्तान ऐसे दुर्दात आतंकवादी के पक्ष में खड़ा हो गया है और भारतीय हमलों में नष्ट हुए घरों के पुनर्निर्माण के लिए मुआवजा योजना का प्रावधान किया है। भारतीय रक्षा अधिकारियों ने चिंता जताई है कि इन पुनर्निर्मित ढांचों का उपयोग दोबारा आतंकी गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। भारत ने पहले भी पाकिस्तान के आतंकी नेटवर्क को उजागर करने के प्रयास किए हैं, लेकिन चीन कई बार पाकिस्तान का दोस्त बनाकर अपनी वीटो का इस्तेमाल करता है। सूत्रों का कहना है कि हाल ही में UNSC में पहलगाम हमले की निंदा वाले प्रस्ताव से TRF का नाम हटावाने में भी चीन ने पाकिस्तान की मदद की थी। इसके साथ ही, भारत पाकिस्तान को फिर से एफएटीएफ (FATF) की ग्रेडिंग में डालने के लिए प्रयास तेज कर रहा है और पाकिस्तान को दी जाने वाली अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सहायता को भी चुनौती देने की रणनीति बना रखा है। यह कूटनीतिक मोर्चा ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया का हिस्सा है, जिसमें भारत ने नियंत्रण रेखा पार किए बिना पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर स्पष्ट संदेश दिया था कि आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाशत नहीं किया जाएगा।

'ऑपरेशन सिंदूर' के तात्कालिक प्रभाव

'ऑपरेशन सिंदूर' के तात्कालिक प्रभाव अब सामने आने लगे हैं। इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान के 'भाईजान' बने तुर्की, अजरबैजान और चीन की भारत में दुकान बंद होने की तैयारी है। तुर्की और अजरबैजान के खिलाफ तो भारत में ट्रेड स्ट्राइक के तहत इन देशों का हर स्तर पर विरोध शुरू हो गया है। पाकिस्तान ने जो चीन की फुस्स मिसाइल और तुर्की के ड्रोन भारत पर हमले में इस्तेमाल किए, उनके अवशेष अब देश में मौजूद हैं। चीन और तुर्की अब इन सबूतों को नकार नहीं सकता है। भारत ने जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान को 'ऑपरेशन सिंदूर' में ऐसी चोट दी कि वो घुटनों पर आ गया और सीजफायर के लिए गिड़गिड़ाने लगा। पाकिस्तान को सबक सिखा दिया गया है अब उसके 'भाईजान' चीन, तुर्की और अजरबैजान को भी आर्थिक चोट पहुंचाई जाएगी।



उदयपुर के तुर्की से ट्रेड रिलेशन खत्म

तुर्की द्वारा पाकिस्तान का समर्थन किए जाने के बाद एशिया की बड़े बाजार में से एक उदयपुर की मशहूर मार्बल मंडी ने तुर्की के साथ अपने सभी ट्रेड रिलेशन खत्म करने का ऐलान किया है। उदयपुर मार्बल प्रोसेसर्स समिति ने यह फैसला राष्ट्रिहित और देशभक्ति के चलते लिया है। समिति ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर इस फैसले की जानकारी दी है और स्पष्ट किया है कि वे हर उस कदम का समर्थन करेंगे, जो भारत सरकार राष्ट्रिहित में उठाएं। उदयपुर में 50 से अधिक बड़े व्यापारी तुर्की से मार्बल आयात करते थे। भारत हर साल तुर्की से करीब 14 लाख टन मार्बल आयात करता है, जिसमें से 5,000 करोड़ रुपए का व्यापार अकेले उदयपुर से होता था।

तुर्की से सेब खरीदना पूरी तरह बंद

तुर्की के खिलाफ पुणे के व्यापारियों ने भी 'ट्रेड स्ट्राइक' का ऐलान कर दिया है। वे अपने देश के हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, ईरान और अन्य क्षेत्रों से सेब मंगवा रहे हैं। महाराष्ट्र के पुणे में व्यापारियों ने तुर्की से आयात होने वाले सेबों की बिक्री पूरी तरह बंद कर दी है। स्थानीय बाजारों से ये सेब गायब हो गए हैं और ग्राहकों ने भी इसका बहिष्कार कर दिया है। हर साल पुणे के फलों के बाजार में तुर्की सेबों की हिस्सेदारी लगभग 1,000 से 1,200 करोड़ रुपए की होती है, लेकिन अब यह कारोबार ठप हो गया है।

बॉयकॉट तुर्की सोशल मीडिया पर ट्रेंड



तुर्की और अजरबैजान जैसे देशों की इकोनॉमी में ट्रूरिज्म का बहुत बड़ा रोल है। इन दोनों के देश की कुल जोड़ीयों का 10 फीसदी हिस्सा ट्रूरिज्म से ही आता है। अजरबैजान की बात करें तो यहां 70 प्रतिशत पर्यटक भारत से ही जाते हैं। 'ऑपरेशन सिंदूर' का एक और इफेक्ट सोशल मीडिया पर हैशटैग बॉयकॉट-तुर्की ट्रेंड करना भी है। वहाँ ट्रेवल एजेंसियों ने भी अजरबैजान और उज्जेकिस्तान के लिए दूर दिप लेना कैंसिल कर दिया है। ऑल ईंडिया ट्रूरिस्ट फेडरेशन के मुताबिक दिनों में सिर्फ पूर्वांचल से 15000 से ज्यादा पर्यटकों ने अपना प्लान और टिकट कैंसिल करा लिया है। उम्मीद की जा रही है कि ये संख्या 25 हजार से 30 हजार के बीच जा सकती है। ट्रैवल कंपनियां भी इसमें लोगों का साथ दे रही हैं। कॉक्स एन्ड किंग, एसओटीसी और इज्ज माय ट्रिप जैसी ट्रैवेल कम्पनियां लोगों से कोई कैंसिलेशन चार्ज भी नहीं ले रही हैं।



चीनी अखबारों का सोशल मीडिया खाता बंद

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के दो भौंपू ग्लोबल टाइम्स और शिन्हुआ न्यूज के सोशल मीडिया अकाउंट्स के बाद अब टीआरटी वर्ल्ड के एक्स अकाउंट को भी बंद कर दिया गया है। टीआरटी वर्ल्ड, तुर्की का ब्रॉडकास्टर है, जो 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद लगातार भारत के खिलाफ प्रोपोगेंडा फैला रहा था। तुर्की और चीन के ब्रॉडकास्टर लगातार भारत के खिलाफ फर्जी खबरें और भ्रामक जानकारियां फैला रहे थे।

बलूचिस्तान की आजादी की गुहार... ऑपरेशन सिंदूर से उत्साहित बलूच नेता मीर यार बलूच ने पाकिस्तान से आजादी की घोषणा करते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय और भारत से समर्थन मांगा है। उन्होंने बलूचों को 'पाकिस्तानी' कहने से बचने की अपील की और POK पर भारत के रुख का समर्थन किया। पाकिस्तान में अलगाववाद की उठ रही आवाजों में से सबसे मुख्य आवाज बलूचिस्तान की है। यहां लंबे समय से पाकिस्तान से अलग होने की मांग की जाती रही है। पाकिस्तान ने बलूचिस्तान की आवाज को कई बार कूरता से दबाया है और कई बलूच नेताओं की हत्याएं भी की गई हैं। अब इस संघर्ष में बड़ा मोड़ आया है और पाकिस्तान के दोबारा टूटने की संभावनाएं मजबूत हो गई हैं।

सिलेबस में आएगा 'ऑपरेशन सिंदूर'

राजस्थान देश का ऐसा पहला राज्य बनने जा रहा है जो ऑपरेशन सिंदूर को स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम में शामिल कर रहा है। बताया जा रहा है कि एक पुस्तक को नया नाम 'सिंदूर' दिया जा रहा है। इसमें भारत द्वारा पाकिस्तान



को दिए मुहतोड़ जवाब की वीरगाथा अब स्कूल और कालेजों में पढ़ाई जाएगी। इस बार स्टूडेंट्स के सिलेबस में बदलाव किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप इसी सत्र से पहले फेज में कक्षा एक से पांचवीं तक का पूरा सिलेबस बढ़ेगा। उसके दूसरे और तीसरे फेज में 6 से 12 तक का सिलेबस बदलेगा। ऐसे में सरकार नए शिक्षा सत्र से स्कूली पाठ्यक्रम में बदलाव और अपग्रेडेशन कर रही है। इसमें स्टूडेंट्स को देश प्रेम जागृत करने के लिए भारतीय सेना के साहस और उनके द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' में किए गए भरपूर एकशन के बारे में बताया जाएगा।

परमाणु छाते के पार एक भारतीय सूर्योदय



विवेक श्रीयास्तव  लेखक

स्टीकता के साथ किया गया सैन्य हस्तक्षेप, संयमित शक्ति प्रदर्शन और सीमित समय में आॅपरेशन की समाप्ति— यह सब इस

ओर इशारा करता है कि अब भारत 'सहने' के युग से निकलकर 'कहने और करने' के युग में प्रवेश कर चुका है।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया— “अब परमाणु की धमकी नहीं चलेगी। भारत शांति चाहता है, लेकिन समर्पण नहीं करेगा।”

“अब जितने भी थे छंटने लगे हैं फलक से, ये कोई और ही सूरज है जो उग आया है।” ये सूरज केवल उजाला नहीं लाता, यह तेज देता है। ऐसा तेज जो आंखों को चौंधिया दे, मगर आत्मा को एक नई दृष्टि दे। आॅपरेशन सिंदूर उसी तेज का नाम है— भारत की सैन्य नीति, रणनीतिक आत्मविश्वास और वैशिक भूमिका का वह ऐलान, जो न तो केवल शर्यू की कहानी है, न ही केवल तकनीक का उत्सव, बल्कि एक ऐसी विचारधारा है जो कहती है: “अब भारत चुप नहीं रहेगा, अब भारत जवाब नहीं, पहल करेगा।”

परमाणु घमंड के विरुद्ध संयमित साहस

पाकिस्तान के केराना एयरबेस पर स्थित वह गुप्त न्युक्लियर टनल— चीन के तकनीकी सहयोग से निर्मित— वर्षों से भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए छाया संकट बना हुआ था। यहां छिपे आठ परमाणु वॉरहेड्स पाकिस्तान के तथाकथित “न्युक्लियर डिटर्रेंस” का आधार थे। यह वह छाता था जिसकी ओट में आतंकी भेजे जाते थे, सीमाएं लालची जाती थीं, और अंतरराष्ट्रीय मंच पर घुड़की दी जाती थी।

लेकिन भारत ने इस बार इतिहास को नए सांचे में ढाला।

स्टीकता के साथ किया गया सैन्य हस्तक्षेप, संयमित शक्ति प्रदर्शन और सीमित समय में आॅपरेशन की समाप्ति— यह सब इस ओर इशारा करता है कि अब भारत 'सहने' के

युग से निकलकर 'कहने और करने' के युग में प्रवेश कर चुका है।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया— “अब परमाणु की धमकी नहीं चलेगी। भारत शांति चाहता है, लेकिन समर्पण नहीं करेगा।”

“वो जो कहते थे हमें छू भी नहीं सकते, आज खुद धूल में मिल चुके हैं उनके मंसूबे।” भारतीय सेना ने अद्वितीय संयोजन दिखाया— बिना किसी वॉरहेड के नुकसान पहुंचाए, केराना टनल की परिधि को निष्क्रिय कर दिया। यह कोई सामान्य सैन्य कार्रवाई नहीं थी— यह उस 'डर की राजनीति' का खात्मा था जिस पर पाकिस्तान दशकों से सवार था।

तकनीक की तलवार: तेजस, ब्रह्मोस और विश्वास



आज भारत 'आयातक' से 'निर्यातक' की कुर्सी पर बैठा है। तेजस लड़ाकू विमान—जिनका कभी विरोध हुआ था—अब दुनिया भर में मांगे जा रहे हैं।

ब्रह्मोस मिसाइल—एक प्रतीक बन चुकी है 'स्टीक और स्वदेशी शक्ति' का। आकाश मिसाइल से लेकर रक्षा प्रणाली तक, भारत अब सिर्फ़ 'मेड इन इंडिया' नहीं, 'डिफेंड बाय इंडिया' की पहचान बना रहा है।

वर्दे भारत एक्सप्रेस जैसे नागरिक उपकरण होंगे या ड्रोन टेक्नोलॉजी, एआई आधारित सैन्य निगरानी हो या स्पेस-बेस्ड वॉरफेर, हर मोर्चे पर भारत ने एक नई परिभाषा गढ़ दी है।

"अब तक जो गुनगुनाते थे किसी और का नाम,

अब वो भी पूछते हैं—'ये भारत है क्या?"

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में यह बदलाव महसूस किया जा रहा है। रूस, अमेरिका, फ्रांस, इजरायल—सब भारत को अब न केवल एक सहयोगी, बल्कि एक संभावित शक्ति केंद्र मानने लगे हैं।

जहां कभी भारत 'मध्यस्थ' की भीख मांगता था, आज वह साफ़ कहता है—“सीजफायर हमारी शर्तों पर होगा, और कोई मध्यस्थ नहीं चाहिए।”

डोनाल्ड ट्रम्प के हालिया बयानों से भले ही भ्रम फैला हो, लेकिन भारत ने स्पष्ट कर दिया—“अमेरिका केवल दर्शक रहा, निर्णायक नहीं। सीजफायर पाकिस्तान की मांग थी, भारत की नहीं।”



नूर खान एयरबेस: भ्रम का अंत

नूर खान एयरबेस, जिसे पाकिस्तानी सामरिक विशेषज्ञ 'अजेय' मानते थे—भारत के हवाई हमले ने वहां की नींव हिला दी। यह केवल एक सैन्य पराजय नहीं थी, यह "मानसिक पराजय" थी।

“जिनकी परछाइयों से डरते थे वो,
अब अपने ही साए से कांप रहे हैं।”

यह इतिहास की वह घड़ी थी जब भारत ने एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र के डिटोरेंस को निष्क्रिय कर अपनी रणनीतिक सूझबूझ का परचम फहरा दिया।

जननायक का नेतृत्व, जनबल का संकल्प

प्रथानमंत्री का आदमपुर एयरबेस पहुंचना केवल एक 'फोटो ऑप' नहीं था—यह रणभूमि और राजनीति के बीच की खाई को पाटने का एक प्रतीक था। एक स्पष्ट संदेश—“भारत का नेतृत्व अब केवल कुर्सियों से नहीं, सरहदों से तय होगा।”

“जो दुश्मन को देख मुस्कुरा सके,
वो सिर्फ़ नेता नहीं, जननायक होता है।”

भारत: अब प्रतिक्रिया नहीं, रणनीति बनाता है

भारत अब वैश्विक राजनीति में एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है। चाहे वह संयुक्त राष्ट्र हो, जी20, या बिक्स—भारत अब केवल एक 'भागीदार' नहीं, एक 'निर्णायक' बन चुका है।

“अब तो नक्शे बदलने लगे हैं मेज़ों पर,
भारत का नाम ऊंचा है सब जज्बों पर।”

आत्मबल ही असली अस्त्र है

ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, यह विश्वास की घोषणा थी। एक ऐसा विश्वास जो कहता है—अब भारत को कमज़ोर समझने की भूल कोई न करे।

अब भारत जवाब नहीं, शुरुआत करता है।

अब भारत चुप नहीं, तेज़ है।

“अब न तोपों से डर लगता है, न धमकियों से,

हमने अपने विश्वास से बड़ा कोई अस्त्र नहीं देखा।”

यह लेख केवल एक विजय गाथा नहीं, एक चेतावनी है—मित्रों को आश्वस्त करने वाली और शत्रुओं को भयभीत करने वाली। भारत अब शांति का पक्षधर है, पर चुपचाप सहने वाला नहीं।

वैरिवक मंचों पर भारत की निर्णायक आवाज



राकेश गांधी वरिष्ठ पत्रकार

जब विदेशी मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व हो रहा था, तब देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट किया कि आँपरेशन सिंदूर किसी भी प्रकार की आक्रामकता नहीं, बल्कि आत्मरक्षा का उदाहरण है। राजनाथ सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा, “पाकिस्तान अगर आतंकवादियों को संरक्षण देना बंद नहीं करता, तो उसे और अधिक गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

पा किस्तान के खिलाफ ‘आँपरेशन सिंदूर’ कार्रवाई के बाद भारत ने जिस सजगता और रणनीतिक स्पष्टता के साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने अपना पक्ष रखा, वह एक परिपक्व लोकतंत्र की पहचान है। इस मिशन की संवेदनशील पृष्ठभूमि और इसके राजनीतिक-सैन्य आयामों को विश्व के समक्ष स्पष्ट करने का कार्य भारतीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने न केवल कुशलतापूर्वक किया, बल्कि इस दौरान भारत की आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति को भी मजबूती से रेखांकित किया। यह प्रतिनिधिमंडल कोलंबिया, पनामा और बहरीन जैसे देशों के दौरे पर गया, जिसका नेतृत्व कांग्रेस सांसद डॉ. शशि थरूर ने किया। उनके साथ भाजपा के तेजस्वी सूर्या, शाशांक मणि, मिलिंद देवडा और एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन औवैसी जैसे विभिन्न दलों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित रहे। विदेश नीति में यह बहुदीय एकजुटता अपने-आप में एक सशक्त संदेश था कि आतंकवाद के मुद्दे पर भारत पूरी तरह एकमत है।

बहरीन में ओवैसी का दो-टक बयान

एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन औवैसी ने बहरीन में बेहद स्पष्ट शब्दों में कहा, “पाकिस्तान आतंकवादियों का पोषक है, न कि पीड़ित।” उन्होंने मुंबई, पुलवामा और पठानकोट जैसे हमलों का उल्लेख करते हुए यह रेखांकित किया कि भारत आतंकवाद का शिकार रहा है, और पाकिस्तान उसकी पनाहगाह। उनकी यह शैली भले ही आक्रामक कही जाए, लेकिन यह बात अंतरराष्ट्रीय जगत को साफ़ संकेत देती है कि भारत अब किसी भी स्तर पर नरमी बरतने को तैयार नहीं।

विदेशी प्रतिक्रिया: बहरीन के एक वरिष्ठ सांसद ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल की दृढ़ता की सराहना करते हुए कहा कि उनके देश को भी आतंकवाद के खतरों का अनुभव है और भारत के साथ सहयोग मजबूत किया जाएगा।

कोलंबिया में शशि थरूर का सधा उत्तर

कोलंबिया में जहां वहां की सरकार ने पाकिस्तान में मारे गए आतंकियों पर शोक जताया, वहां भारत की प्रतिक्रिया अत्यंत संतुलित और तर्कसंगत रही। डॉ. शशि थरूर ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा, “आतंकवादियों और उनकी कार्रवाई में मारे गए सैनिकों के बीच कोई नैतिक समता नहीं की जा सकती।” उन्होंने स्पष्ट किया कि आँपरेशन सिंदूर एक आत्म रक्षात्मक कदम था, जिसे भारत ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों के दायरे में रहकर अंजाम दिया, और इसमें किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थिता की आवश्यकता नहीं है। उनका यह वक्तव्य न केवल भारतीय पक्ष की संवेदनशीलता को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि भारत अपनी रक्षा को लेकर कितना जागरूक और आत्मनिर्भर है।

विदेशी प्रतिक्रिया: कोलंबिया के अधिकारियों ने थरूर के शांत और तर्कसमत स्पष्टीकरण को गंभीरता से लिया और यह स्पष्ट किया कि उनके बयान का उद्देश्य किसी पक्ष विरोध का समर्थन नहीं था। कोलंबिया के विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि उनकी सरकार आतंकवाद के किसी भी रूप की निंदा करती है।



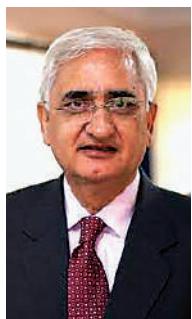
पनामा में भाजपा नेताओं की सजग कूटनीति



पनामा में भाजपा नेताओं—तेजस्वी सूर्या, शशांक मणि और मिलिंद देवड़ा ने संयम और दृढ़ता से पाकिस्तान के दोहरे मापदंडों की आलोचना की। उन्होंने आईएमएफ जैसे संस्थानों को चेताया कि आतंकवाद को पनाह देने वाले राष्ट्रों को वित्तीय सहायता देने से पहले उनके आतंकवादी नेटवर्क और समर्थन प्रणाली की समीक्षा आवश्यक है।

विदेशी प्रतिक्रिया: पनामा की संसद के सदस्यों ने भारतीय नेताओं की चिंता को साझा किया और कहा कि वैश्विक वित्तीय संस्थानों को अब अपनी नीति में ऐसे मुद्दों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

सलमान खुर्शीद और कनिमोई के सधे स्वर



दूसरे दलों से प्रतिनिधित्व करते हुए सलमान खुर्शीद (कांग्रेस) और कनिमोई (डीएमके) ने स्लोवेनिया और यूरोपीय प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात में भारत की आतंकवाद विरोधी

नीति को मानवीय और न्यायसंगत बताया। खुर्शीद ने कहा, “पीओके भारत का अभिन्न अंग है और आॅपरेशन सिंदूर इसका प्रतीक है कि भारत अब और सहन नहीं करेगा।” कनिमोई ने इस बात पर जोर दिया कि भारत किसी भी देश के नागरिकों के प्रति दुर्भावना नहीं रखता, लेकिन आतंक का समर्थन करने वालों के प्रति उसकी नीति कठोर है।

विदेशी प्रतिक्रिया: स्लोवेनिया के विदेश मामलों के उपमंत्री ने भारत के दृष्टिकोण को गंभीरता से सुना और कहा कि यूरोपीय संघ भी आतंकवाद के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देता रहेगा।

डेनमार्क में एम.जे. अकबर की ऐतिहासिक अपील



पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ पत्रकार एम.जे. अकबर ने डेनमार्क में वहां के शीर्ष सांसदों, नीति-निर्माताओं और कूटनीतिक प्रतिनिधियों से भेंट की। अपनी बैठक में उन्होंने आॅपरेशन सिंदूर की पृष्ठभूमि और भारत की आतंकवाद-निरोधी नीति का सारांगर्भित और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परिचय दिया। अकबर ने कहा, “भारत न केवल एक राष्ट्र है, बल्कि एक सभ्यता है, जिसने हजारों वर्षों तक शांति, सहिष्णुता और न्याय को जीवन का आधार माना है। जब यह देश एक बार निर्णायक कदम उठाता है, तो वह महज जबाब नहीं देता, बल्कि एक सिद्धांत की रक्षा करता है। आॅपरेशन सिंदूर उसी सिद्धांत की अभिव्यक्ति है — जहां संप्रभुता, आत्मरक्षा और वैश्विक आतंकवाद के विरुद्ध नैतिक साहस का प्रदर्शन हुआ है।” उन्होंने यह भी जोड़ा कि भारत आतंकवाद के खिलाफ युद्ध को धर्म, नस्ल या राष्ट्र से नहीं जोड़ता, बल्कि इसे मानवता के विरुद्ध अपराध मानता है। उन्होंने डेनमार्क से अपील की कि वह आतंकवाद के संदर्भ में “मौन” की बजाय “सिद्धांत आधारित स्पष्टता” अपनाए। पाकिस्तान को लेकर कहा, ‘पाकिस्तान सरकार के दो चेहरे हैं, उसकी जुबान दोहरी है, हम किससे बात करें। पाकिस्तान जहरीली जुबान में बात करता है और उससे बातचीत सिर्फ एक धोखा है।’

विदेशी प्रतिक्रिया: डेनमार्क की संसद के वरिष्ठ सदस्य मैड्स फुगलेडे ने कहा कि, “हम एम.जे. अकबर की ऐतिहासिक और मानवतावादी व्याख्या से प्रभावित हैं। डेनमार्क भारत को लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षक मानता है और आतंकवाद के खिलाफ उसकी लड़ाई को समर्थन देने के लिए इच्छुक है।” डेनिश विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने भी माना कि पीओके में आतंकवादी गतिविधियों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समीक्षा आवश्यक है, और भारत की चिंताएं पूरी तरह वैध हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की घरेलू प्रतिक्रिया

जब विदेशी मंत्रों पर भारत का प्रतिनिधित्व हो रहा था, तब देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट किया कि आॅपरेशन सिंदूर किसी भी प्रकार की आक्रमकता नहीं, बल्कि आत्मरक्षा का उदाहरण है। राजनाथ सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा, ‘पाकिस्तान आग आतंकवादियों को संरक्षण देना बंद नहीं करता, तो उसे और अधिक गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।’



विदेशी प्रतिक्रिया: अमेरिका, फ्रांस और अॉस्ट्रेलिया जैसे देशों ने भारत के आत्मरक्षात्मक अधिकार को मान्यता दी और पाकिस्तान से आतंकवाद पर निर्णायक कार्रवाई करने की अपील की।

भारत की एकता और संप्रभुता का संदेश

■ आॅपरेशन सिंदूर के पश्चात विश्व मंत्रों पर भारतीय नेताओं की आवाज एक स्वर में गूंजी — भिन्न राजनीतिक दलों से होने के बावजूद उनके शब्दों में एक ही भाव था: भारत की संप्रभुता सर्वोपरि है, और आतंकवाद के प्रति उसकी नीति समझौताविहीन है। इस बहुपक्षीय प्रतिनिधित्व ने यह भी सिद्ध किया कि भारत की विदेश नीति अब केवल सरकार की नीति नहीं, बल्कि पूरे देश की सामूहिक आवाज बन चुकी है।

■ ऐसे दौर में जब अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भ्रम और दोगली नीतियां आम हैं, भारत का यह स्पष्ट और एकजुट रुख न केवल प्रशंसनीय है, बल्कि अनुकरणीय भी।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पीएम मोदी की पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी

आक्रोश नहीं, समर्थ भारत का नया रूप



अजय अरथाना
वरिष्ठ पत्रकार

भारतीयों के खून से खेलना पाकिस्तान को महंगा पड़ेगा। ये भारत का संकल्प है और दुनिया की कोई ताकत हमें इस संकल्प से डिंगा नहीं सकती है। अगर पाकिस्तान ने आतंकियों को सपोर्ट करना जारी रखा, तो उसको पाई-पाई के लिए मोहताज होना होगा। पाकिस्तान को भारत के हक का पानी नहीं मिलेगा।



ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री की पहली जनसभा वीरों की धरती राजस्थान के बीकानेर के पलाना में हुई। पाकिस्तान सीमा से 100 किलोमीटर दूरी से मोदी ने पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा- 'पाकिस्तान को आतंक की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, ये सिर्फ आक्रोश नहीं, समर्थ भारत का नया रूप है। अब हर आतंकी हमले की पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी और ये कीमत पाकिस्तान की सेना और पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था चुकाएगी। भारत से सीधी लड़ाई में पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी है। इसलिए ही पिछले कई दशकों से आतंकवाद को भारत के खिलाफ लड़ाई का हथियार बनाया हुआ है। आजादी के बाद पाकिस्तान आतंक फैलाता था, निर्दोष लोगों की हत्याएं करता था, भारत में डर का माहौल बनाता था। लेकिन पाकिस्तान एक बात भूल गया कि अब मां भारती का सेवक मोदी यहां सीना तानकर खड़ा है।'

अब बात होगी सिर्फ पीओके पर

प्रधानमंत्री ने ये भी स्पष्ट कहा, 'मोदी का दिमाग ठंडा रहता है, लेकिन लहू गर्म रहता है और अब तो मोदी की नसों में गर्म सिंदूर बह रहा है। भारतीयों के खून से खेलना पाकिस्तान को अब महंगा पड़ेगा। पाकिस्तान के साथ न तो व्यापार होगा, न ही बातचीत होगी। यदि बात होगी तो सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को वापस लेने की। पाकिस्तान ने अगर आतंकियों को एक्सपोर्ट करना जारी रखा तो उसको पाई-पाई के लिए मोहताज होना होगा। पाकिस्तान को भारत के हक का पानी नहीं मिलेगा। ये भारत का संकल्प है और दुनिया की कोई ताकत हमें इस संकल्प से डिंगा नहीं सकती।'



एटम बम की भभकियों से अब नहीं डरने वाले

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद से निपटने के तीन सूत्र तय कर दिए हैं। पहला ये कि भारत पर आतंकी हमला हुआ तो करारा जवाब मिलेगा, जिसका समय और तरीका हमारी सेनाएं तय करेंगी और शर्तें भी हमारी होंगी। दूसरा एटम बम की गोदड़ भभकियों से भारत डरने वाला नहीं है और तीसरा, हम आतंक के आकाऊं और आतंक की सरपरस्त सरकार को अलग-अलग नहीं देखेंगे, उन्हें एक ही मानेंगे। पाकिस्तान का ये स्टेट और नॉन-स्टेट एक्टर वाला खेल अब नहीं चलेगा। पूरी दुनिया में सात अलग-अलग गुप्त भेजे जा रहे हैं, जिनमें हर पार्टी के नेता हैं और विदेश नीति के जानकार शामिल हैं। अब पाकिस्तान का असली चेहरा पूरी दुनिया को दिखाया जाएगा।'

जो सिंदूर मिटाने निकले थे, उन्हें मिट्टी में मिलाया है

- प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'पांच साल पहले जब बालाकोट में देश ने एयर स्ट्राइक की थी, उसके बाद मेरी पहली जनसभा राजस्थान में ही हुई थी। अब इस बार जब ऑपरेशन सिंदूर हुआ तो उसके बाद मेरी पहली जनसभा फिर यहां राजस्थान के बीकानेर में आप सभी के बीच हो रही है। राजस्थान की वीरभूमि के तप से ही ऐसा संयोग बना है।'
- प्रधानमंत्री ने चूर्ण में कहा था, 'सौंगंध मुझे है इस मिट्टी की, मैं देश नहीं मिटने दूँगा..., मैं देश नहीं झुकने दूँगा।' उन्होंने इस बार राजस्थान की धरती से देशवासियों से कहा -

जो सिंदूर मिटाने निकले थे,
उन्हें मिट्टी में मिलाया है।

जो हिंदुस्तान का लहू बहाते थे,
उनसे हर करते का हिसाब चुकाया है।

जो सोचते थे भारत चुप रहेगा,
आज वो घरों में दुबके पड़े हैं।

जो अपने हथियारों पर घमंड करते थे,
आज वो मलबे के ढेर में दबे हुए हैं।

ये शोध-प्रतिशोध का खेल नहीं,
ये न्याय का नया स्वरूप है।

ये ऑपरेशन सिंदूर है।

ये सिफे आक्रोश नहीं है,
ये समर्थ भारत का रीढ़ रूप है।

ये भारत का नया स्वरूप है।

पहले घर में घुसकर किया था वार,
अब सीधा सीने पर किया प्रहार है।

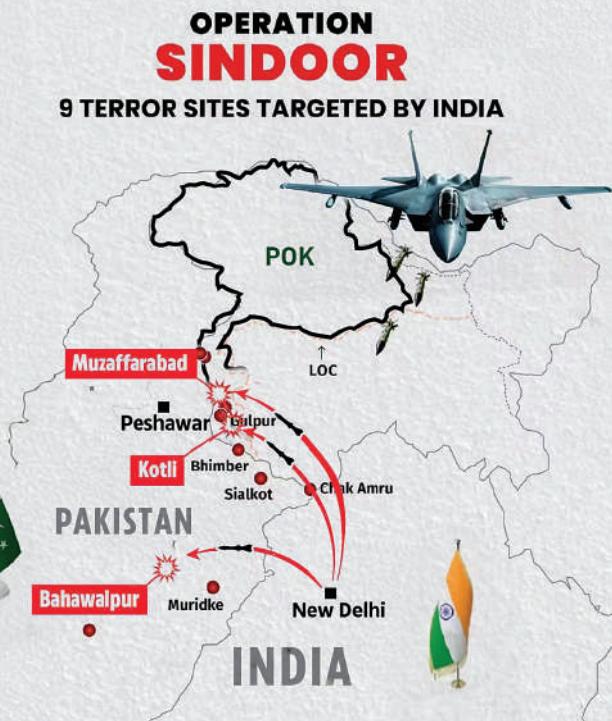
आतंक का फन कुचलने की,

यही नीति है,

यही रीति है,

यही भारत है,

नया भारत है।



22 अप्रैल के हमले का जवाब 22 मिनट में

प्रधानमंत्री ने कहा, '22 अप्रैल को आतंकवादियों ने धर्म पूछकर हमारी बहनों की मांग का सिंदूर उजाड़ दिया था। वो गोलियां पहलगाम में चली थीं, लेकिन उन गोलियों से 140 करोड़ देशवासियों का सीना छलनी हुआ। इसके बाद हर देशवासी ने एकजुट होकर संकल्प लिया था कि आतंकवादियों को मिट्टी में मिला देंगे और उन्हें कल्पना से भी बड़ी सजा देंगे। देश की सेना के शौर्य से हम सब उस प्रण पर खरे उतरे हैं। सरकार ने तीनों सेनाओं को खुली छूट दी और तीनों सेनाओं ने मिलकर ऐसा चक्रव्यूह रचा कि पाकिस्तान को घुटने टेकने पड़े। 22 तारीख के हमले के जवाब में हमने 22 मिनट में आतंकियों के 9 सबसे बड़े ठिकाने तबाह कर दिए। ऑपरेशन सिंदूर से दुनिया और देश के दुश्मनों ने देख लिया कि जब सिंदूर बारूद बन जाता है तो नतीजा क्या होता है।' मोदी ने कहा, 'जब दिल्ली से यहां आया तो बीकानेर के नाल एयरपोर्ट पर उतरा। पाकिस्तान ने इस एयरबेस को भी निशाना बनाने की कोशिश की थी, लेकिन वे इस एयरबेस को रत्तीभर भी नुकसान नहीं पहुंचा पाया। वहीं, यहां से कुछ ही दूर सीमापार पाकिस्तान का रहीमराह खान एयरबेस अगले कई दिनों के लिए बंद हो चुका है। भारत की सेना के अचूक प्रहार ने इस एयरबेस को तहस-नहस कर दिया है।'

देशनोक करणी माता मंदिर में धोक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गुरुवार को सुबह अपनी बीकानेर यात्रा के दौरान देशनोक स्थित विश्व प्रसिद्ध करणीमाता मन्दिर पहुंचे। उन्होंने मन्दिर में दर्शन कर देश की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। मोदी ने मन्दिर में माता की आरती उतारी तथा मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने मन्दिर में दर्शन कर प्रसाद भी चढ़ाया। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा तथा केन्द्रीय कानून एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुनराम मेघवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

दो चुटकी 'सिंदूर' की कीमत पता चलने पर बोले शरीफ बाबू

'अब हम अपना कटोरा और बड़ा करेंगे'

पा किस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को उनके देशवासी मजाक में पांच शादियों वाला शौहर पीएम भी कहते हैं। सियासत और अदावत में कमज़ोर शरीफ इस मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान से दो कदम आगे ही हैं। इतना ही नहीं वे युद्ध और शांति जैसे अहम मुद्दे पूल में स्वीमिंग करते हुए तय करते हैं। 'ऑपरेशन सिंदूर' में मिली करारी हार के बावजूद अपनी सेना के समक्ष ढींग हांकने वाले पीएम शरीफ का एक साक्षात्कार तो बनता है। पीओके में मिसाइल स्ट्राइक में ध्वस्त आतंकियों के मरकज में उनसे हुई मजाकिया बातचीत के चुनिंदा अंश...

▪ हरीश मलिक, वरिष्ठ लेखक

?

आर्थिक तंगी के बीच आपने युद्ध लड़ा! इससे पाकिस्तान को क्या फायदा हुआ?

शरीफ : क्या आप किसी हट्टे-कट्टे आदमी को भी खदें सकते हैं। नहीं ना। यदि वह लूला-लंगड़ा, बीमार और अपाहिज हो तो आपको उस पर दया आना स्वाभाविक है। युद्ध से हमने कई घाव और ले लिए हैं। भारत हमारी बर्बादी के बीड़ियों दिखा-दिखाकर एक तरह से हम पर दया ही कर रहा है। अब हम वैश्विक दीन-हीन बन गए हैं। खुदा ने बहुत अच्छा अवसर बख्ता है। अब हम आराम से अपना कटोरा बड़ा कर सकते हैं। हमारी दुर्दशा और बदलाली से इंशाअल्लाह भी ख भी निश्चित रूप से ज्यादा मिलेगी।

?

पाकिस्तान तीन दिन में टायं-टायं फिरस हो गया! आपने ने कहा था कि हम किसी से डरने वाले नहीं हैं। तैयारी पूरी कर रखी है।

शरीफ : हां, हमारी तैयारी तो एकदम दुरस्त रही थी। आप चाहें तो इसकी तस्वीक पाक सेना प्रमुख असीम मुनीर से भी कर सकते हैं। हमारी इंटेलीज़ेंस एजेंसी आईएसआई से यह भनक मिलते ही कि भारत 'ऑपरेशन सिंदूर' के सकता है, हम दोनों ने ही अपने रिश्तेदारों और करीबियों को तत्काल ही विदेश में शिफ्ट कर सेफ कर दिया था। हमारे ऊपर मिसाइल आती तो हमारी भी पूरी तैयारी थी। हां, मुनीर साहब को कश्मीर को पाकिस्तान के 'गले की नस' नहीं बताना चाहिए था। इसे हिंदोस्तान ने बहुत गंभीरता से ले लिया और इसी का परिणाम है कि हमारा मुल्क हारकर गले-गले तक शर्मिदा हो गया है।

?

इस जंग में तो भारत का साथ कई मुस्लिम मुल्कों ने भी दिया है?

शरीफ : बिल्कुल दिया है। हमने ऐसे मुल्कों की लिस्ट बनाने का आर्डर कर दिया है, जिन्होंने हिंदोस्तान का साथ दिया है। उनका ही असली आर्थिक नुकसान होने वाला है, क्योंकि हमने आर्डर में यह भी जोड़ा है कि ऐसे मुल्कों से लिया गया कर्ज कभी अदा ना किया जाए। भले ही वो चक्रवर्ती स्कायर ब्याज ही क्यों ना लगा दें। पाक को तो रिवाज रहा है- ऐसा कोई सगा नहीं, जिसको हमने ठगा नहीं।



?

पीएम मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए सेना को खुली छूट दी थी। इस पर आप क्या कहेंगे?

शरीफ : हां, हम मानते हैं कि ये हमसे गलती हुई हमें नकल नहीं करनी चाहिए थी। तुम्हारे बजारी आजम की तरह हमने भी अपनी सेना को खुली छूट दे दी। लेकिन हमारी सेना ने इसका गलत अर्थ निकाल लिया। उनको लगा कि छूट का मतलब है जंग लड़ो या ना लड़ो तुम्हारी मर्जी। आर्मी के कुछ बड़े अफसर तो इसका अपना अर्थ निकालकर जान बचाकर विदेश में भाग छूटे। ये लोग जंग में पाकिस्तान जिंदाबाद की जगह 'पाकिस्तान जिंदा भाग' के नारे लगाने लग गए। छूट देने का हमें जंग में बहुत नुकसान हुआ है।

?

सेना से ज्यादा छूट तो आपने आतंकवादियों को दी हुई है। ट्रेनिंग कैंप से लेकर आतंकी अब हमले धर्म पूछकर करने लगे हैं?

शरीफ : आपका सवाल कुछ हद तक सही है। हमारे रिश्ते अड़ेसी-पड़ोसी से चाहे जैसे हों, लेकिन कट्टर भाइयों से बड़े गहरे और दोस्ताना है। दुनिया पता नहीं क्यों इन्हें आतंकवादी कहती है। ये जो सबसे अधिक कट्टरता से अपना धर्म निभाते हैं। बताइए, अपने धर्म का उसूल मानना क्या गलत है? इसके बावजूद हिंदुस्तानी मिसाइलों ने हमारा वर्ल्ड क्लास इंस्टीट्यूट और मरकज उड़ा दिए।

?

लेकिन वो तो आतंकी मसूद अजहर और हाफिज सईद के मुख्यालय और ट्रेनिंग कैंप थे?

शरीफ : आपने ठीक फरमाया। लेकिन ये नाम हिंदुस्तान वालों ने ही दिए हैं। हमारे लोगों के लिए तो वहीं कालेज-यूनिवर्सिटी हैं। वे वहां पवित्र किताब पर अमल करना सीखते और सिखाते हैं। इतना ही नहीं, जगत के लिए जंग तक की परवाह नहीं करते। वो तो आपके बजारी आजम ने पहले हमारा पानी बंद किया और फिर मिसाइलों से आग लगाई। आग बुझाने को पानी होता तो किसी भी हृद तक जा सकते थे।

?

अच्छा, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप तो कह रहे हैं कि सीजफायर के लिए पाकिस्तान गिर्जिगिराया था?

शरीफ : अरे आप किस गणी की बाज पर यकीं कर रहे हैं। वो पहले बोले- 'भारत-पाक में मैंने सीजफायर कराया।' उसके बाद पलटी मार ली- 'मैंने सिर्फ वॉर प्रॉब्लम में मदद की, मध्यस्थिता नहीं की।' पहले हमारे मित्र देश चीन पर इतना टैरिफ लगा दिया। उसने हड़काया को कम कर दिया। और तो और, हमसे भी छोटे देश यूक्रेन के राष्ट्रपति ने ट्रंप को उनके ही दफ्तर में हड़का दिया था। फिर भी वो बाज नहीं आते। जिस पर चाहे प्रतिबंध लगा देते हैं। सबके फटे में टांग अड़ाते हैं। वो कौन होते हैं हमारा सीजफायर डिक्लेयर करने वाले? आप बताइए, जिस देश के एगरबेस, ड्रोन और मिसाइलों की हालत बद-से-बदर हो गई हो, वो भला दूसरे देश के राष्ट्रपति के सीजफायर डिक्लेयर करने का वेट क्यों करेगा?

?

फिर आप जंग हारकर भी 'योम-ए-तशक्कुर'

(जीत पर धन्यवाद दिवस) का उत्सव दों प्रान्त मना रहे हैं?

शरीफ : आपने कई बार सुना होगा कि गंभीर किसके संक्रमण के चलते किसी व्यक्ति के हाथ या पैर कटने पड़े। लेकिन इससे उसकी जान तो बच गई। अब आप कहते हैं कि जान बच जाने पर व्यक्ति खुशी भी ना मनाए! सांसों से बड़ी नियामत और क्या होगी! जो तो चल रही है ना। और हमारी सेना पहली बार थोड़ी हारी है, जो इसका रंज मनाए। हमारी तो हारने में पी-एचडी है। हर बार हार पर बेजार हमारे पुराने हुक्मरां होते थे। इस बार हारकर भी जश मनाकर दुनियाभर को कंपायूज कर दिया है।

चलते-चलते... विराट कोहली ने अचानक टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा क्यों कर दी?

उसे डर था कि सीजफायर की तरह कहीं ट्रंप ही उसका संन्यास डिक्लेयर ना कर दें।

इतिहास के संदूक से गहलोत की दूरबीन

अ शोक गहलोत राजनीति के बो अनुभवी नाविक हैं, जिनकी नाव चाहे कितनी ही बार राजस्थान की लहरों में हिंचकोले खा ले, लेकिन जब भी राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय सागर में कोई तूफान उठता है, वो तुरंत अपनी दूरबीन लेकर मचान पर चढ़ जाते हैं। हालिया भारत-पाक सीजफायर की घोषणा पर जैसे ही अमेरिका का नाम आया, गहलोत जी ने अपने इतिहास के संदूक से एक पुरानी दूरबीन निकाली, जिस पर नेहरू और इंदिरा जी की तस्वीरें जड़ी थीं, उन्होंने उस दूरबीन से 1961 का गोवा देखा, 1974 का सिक्किम देखा, और फिर सीधे 2025 की मोदी सरकार की छत पर निशाना साथा। इतिहास के खजाने से किसी निकालने में उन्हें वैसी ही महारत है, जैसे कोई रसोई में से सूखे मसाले छांटकर नई रेसिपी बना दे। फर्क बस इतना है कि ये रेसिपी ट्रिवटर पर परोसी जाती है, और स्वाद कुछ-कुछ खट्टी स्मृतियों जैसा होता है। गहलोत जी का व्यंग्य और विवेक, दोनों उस ताले जैसे हो गए हैं जो हतिजेरी में फिट बैठता है— चाहे तिजेरी पुरानी हो या राजनीति नहीं। फर्क बस इतना है कि चाबी अब जनता के हाथ में है, और वह तय करेगी कि इतिहास की दूरबीन से देखना है या भविष्य की आंख से। कहना न होगा, गहलोत जी इतिहास के बो पत्रे हैं, जो हर बहस में अचानक खुल जाते हैं— और फिर बंद करने में समय लग जाता है।



पदोन्नति का प्रमोशनल इंटेलिजेंस

रा जस्थान पुलिस की इंटेलिजेंस शाखा में तैनात कुछ ऐसा कर दिखाया जो बड़े-बड़े अफसर भी सपने में सोचते हैं— जाते-जाते दो-दो पदोन्नतियां ले उड़े! सरकार भी असमंजस में पड़ गई— उन्हें बधाई दी जाए या रिलीविंग ऑर्डर? गुप्ता जी का सरकारी करियर एकदम मसालेदार रहा। एसडीआरएफ की कमान को लेकर जो कुर्सी-प्रेम उपजा, उसमें अफसर कम और कुर्सी ज्यादा प्रतिष्ठित हो गई। जब तबादला आदेश आया, तो उन्होंने कुर्सी नहीं छोड़ी और जब कोर्ट की रोक लगी, तो कुर्सी भी अदालत की संपत्ति बन गई। ऐसे ही अधिकारियों से प्रेरणा लेकर कुर्सियां स्थायी संपत्ति घोषित की जानी चाहिए। सरकार ने भी कमाल किया— एक तरफ प्रमोशन का लड़ थामाया और दूसरी तरफ वेतनमान में एक चरण की कटौती कर दी, जैसे मिटाई के साथ कड़वी गोली मुफ्त। जनवरी 2025 से उनका प्रमोशन मात्र होगा, यानी रिटायरमेंट के बाद भी उनका ओहदा बोलेगा— “मैं तो चला, लेकिन मेरी फाइलें अब भी दौड़ रही हैं!” गुप्ता जी ने रिटायर होते-होते ये तो साबित कर ही दिया कि सच्चा इंटेलिजेंस बो नहीं जो दूसरों की खबर रखे, बल्कि वो है जो रिटायरमेंट को भी प्रमोशनल मौके में बदल दे!

डोटासरा का लोकतांत्रिक अखाड़ा— शेर भी, सेनापति भी!

रा जस्थान की राजनीति में अगर कोई नेता शब्दों के भाले फेंकने में पद्धति का विभूषण मांग सकता है, तो वो हैं गोविंदसिंह डोटासरा। बयान ऐसे देते हैं कि सुनने वाला सोच में पड़ जाए— ये नेता हैं या ‘कथकली’ के कलाकार, हर बात में नाटकीयता का पुट ज़रूर मिलेगा। हालिया बयान में डोटासरा बोले— “पेरेड आंतकियों की होनी चाहिए, ना कि जनता की आवाज उठाने वालों की!” सुनकर लगा जैसे साक्षात् लोकतंत्र खुद कंधे पर झोला टांगे उनके पीछे चल पड़ा हो! पर असलियत ये है कि जब उनके नेता सत्ता में थे, तब किसी

की आवाज उठती तो धारा 144 पहले और सवाल बाद में आते थे। डोटासरा जी अपने कार्यकर्ताओं को शेर कहते हैं— वो भी ऐसे शेर जो ट्रिवटर पर गुरते हैं, कोर्ट समन पर बिल्ली बन जाते हैं, और चुनाव में इंकाएम देखते ही गुफा की तलाश शुरू कर देते हैं। “शेर हैं हम” की हुंकार सुनकर जंगल के असली शेर भी शर्म से सिर झुका लेते होंगे। उनके बोलते वक्त संविधान जेब में, और विपक्ष की खाल मुंह में! राजनीति को अखाड़ा बनाना कोई इनसे सीखे— जहां भाषण तलवार, बयान ढाल, और हर माइक एक युद्धघोष!

आक्या और भ्रष्टाचार का भूत

रा त के ग्यारह बजे विधायक चंद्रभानसिंह आक्या का कफिला चितौड़ लौट रहा था। पर रुकिए! यह कोई सामान्य वापसी नहीं थी, यह तो जैसे भ्रष्टाचार की अर्थी निकालने का समय था! ओछड़ी टोल प्लाजा के पास उन्होंने देखा कि परिवहन विभाग का इंस्पेक्टर एक गाड़ी वाले से ‘अनौपचारिक टैक्सी’ वसूल रहा था। विधायक की आंखें ऐसे चमकीं जैसे रावण ने संजीवी बूटी देख ली हो। वो गाड़ी से उतरे, और गरजे, “ये क्या तमाशा है?” इंस्पेक्टर की हालत तो ऐसे हो गई जैसे प्रैक्टिकल में बिना तैयारी के छात्र की। विधायक ने लताड़ लगाई, जनता ताली बजा रही थी, जैसे ‘रियलिटी शो’ का फिनाले चल रहा हो। कहते हैं, इंस्पेक्टर इतनी तेजी से भागा कि चीत भी शरमा जाए। विधायक जी बोले, “राजनीति में पहली बार इतना खुला भ्रष्टाचार देखा।” भाई साहब! पहली बार देखा या पहली बार रुककर देखा? खैर, मानना पड़ेगा— जो काम सीबीआई और एसीबी न कर पाई, वो हमारे विधायक ने चंद मिनटों में कर दिखाया! आशा है अगली बार वो कोई और ‘भूत’ भी पकड़ लाए— जैसे महंगाई, बेरोजगारी और गड़बूं का! जनता कह रही है— “विधायक नहीं, भ्रष्टाचार के भूमासुर हैं आक्या !”

वीआईपी दर्थन और डिप्टी सीएम की लाइन

भ कतों की भीड़ में जैसे ही एक खास साड़ी चमकी, लगा कोई बड़ी हस्ती आई है। लोग सोच ही रहे थे कि शायद फिर कोई वीआईपी लाव-लश्कर लेकर सीधा खाटू वाले बाबा की आरती थाली में उतरने वाला है, तभी पता चला— अरे ये तो डिप्टी सीएम दिया कुमारी हैं! और चौकाने वाली बात ये कि लाइन में खड़ी हैं! अब राजस्थान की गर्मी में आम जनता की तरह लाइन में लगना कोई सामान्य सियासी अभ्यास तो है नहीं। नेताओं के लिए लाइन में लगना वैसे ही होता है जैसे बुलेट ट्रेन को बैलगाड़ी की रफतार से चलाना। मगर दिया जी ने ये कारनामा कर दिखाया। लोग बोले— “देखो, नेता भी इंसान हो सकते हैं!” और कुछ बोले— “सादगी नहीं, स्टाइल में साथु बनना है अब राजनीति का नया ट्रेंड।” अब अफसर बेचारे परेशान, बोले— “मैडम अगर सब ऐसे लाइन में लगने लगे तो हमारे लाल बत्ती वाले बोर्ड का क्या होगा?” पंडित जी भी बोले— “अब वीआईपी आरती पैकेज कौन खरीदेगा?” मगर दिया कुमारी मुस्काई— जैसे कह रही हों, ‘प्रभु के दरबार में सब बराबर हैं... और राजनीति में कैमरे बराबरी के गवाह !’

• बलवंत

राजनीति में खुद को कमजोर क्यों साबित कर रही है कांग्रेस

बेतुके बयानों से बवाल



सुरेश व्यास वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

समझ में नहीं आ रहा कांग्रेस को क्या होता जा रहा है। कभी उसके नेता बिना सिर-पैर की बातों से बबाल खड़ा कर देते हैं तो कभी ऐसे ही बयानों की बदौलत कांग्रेस के हाथों में आती बाजी फिसलती नजर आती है। भाजपा ने तो टार्गेट ही कांग्रेस को कर रखा है और कांग्रेस नेता हैं कि सत्ता जाने के बाद आई सांगठानिक कमजोरी के बाद अपने बयानों से ही पार्टी को विकल्प के रूप में पेश करने के मौके दर मौके खो रहे हैं।

दे श की ग्रांड ओल्ड पार्टी कांग्रेस पिछले डेढ़ दशक से ऐसी स्थिति में पहुंच गई है कि कांग्रेस के समर्थकों को भी लगाने लगा है कि पार्टी आखिर करना क्या चाह रही है। देश में वर्ष 2014 में हुए नरेंद्र मोदी युग के उदय के बाद से पार्टी की चमक जैसे भाजपा के तेज में लुप्त होती जा रही है। भाजपा है कि उसने कांग्रेस की कमज़ोरी का पूरा फायदा उठाते हुए उसे ही टार्गेट कर रखा है और कांग्रेस लगातार मोदी और भाजपा की चातों में उलझती जा रही है। इसके चलते धीरे-धीरे लोग भी यह मानने लगे हैं कि लाख विफलताओं के बावजूद आज मोदी का विकल्प कोई नहीं है। लोग भले ही लुभावनी बातों पर भरोसा करना छोड़ चुके हैं, लेकिन इन्हें ये नजर नहीं आ रहा है कि आखिर विकल्प क्या है। कांग्रेस एक विकल्प हो सकती है, लेकिन खुद उसके नेता ऐसे काम कर रहे हैं कि भाजपा को बिना कुछ किए ही कांग्रेस पर लगातार बढ़त मिलती जा रही है।

तजा मामला जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 निर्दोष लोगों पर आतंकी हमले और इसके बाद मोदी सरकार की ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों को नैस्तनाबूद करने की स्ट्राइक से जुड़ा है। जब हमला हुआ, तब इसकी टाइमिंग को लेकर देश और दुनिया में कई जगह सवाल उठे। कई लोगों ने इसे बिहार व अन्य

'गला काट देंगे'



राज्यों में होने वाले चुनावों में राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश के रूप में भी देखा, लेकिन जब ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान पर प्रहार किया गया तो देश में राष्ट्रवाद का जज्बा उफान पर चला आया। चार दिन की सैन्य कार्यवाही के बाद मोदी सरकार फिर लोगों के निशाने पर आई, लेकिन कांग्रेस के नेताओं ने बेतुके बयान देकर भाजपा को हमलावर होने का मौका दे दिया।

ऐसा नहीं है कि कांग्रेस आलाकमान इससे अनभिज्ञ है, लेकिन उस वक्त क्या किया जाए जब इसकी शुरुआत ही कांग्रेस के प्रभावशाली और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने ही कर दी। पहले तो उन्होंने सर्वदलीय बैठक में पहलगाम हमले के पीछे सुरक्षा में चूक का सवाल उठाया और सरकार ने भी माना कि कहीं न कहीं तो चूक हुई है। इसके बाद सबकुछ ठीक चल रहा था। भारतीय सेनाओं के हाथ करारी मार खाया पाकिस्तान प्रोपेंडा युद्ध पर उत्तर आया था और अपने प्रमुख हवाई अड्डों को गङ्गे में तब्दील होता देखने के बाद भी कथित सीजफायर को अपनी जीत बताते हुए पीठ थपथपा रहा था। झूठ की सारी हदें पाकिस्तान ने पार कर दी और यहां तक कह दिया कि उसने भारत के राफेल विमान मार गिराए हैं। वायु रक्षा प्रणाली एस-400 को नैस्तनाबूद कर दिया है, लेकिन कहीं से भी इसके समर्थन में वो कोई सबूत पेश नहीं कर पाया।

उस दौर में भी भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार रक्षात्मक रूप में नजर आ रही थी। सिवाय पाकिस्तान को सबक सिखाए जाने की बातों के साथ सेना का मनोवैज्ञानिक बढ़ावने वाली बातें हो रही थी। गैर भाजपाई दल ही नहीं, कांग्रेस भी सरकार के हर कदम के साथ थी, लेकिन जैसे ही अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर संदेश के जरिए भारत-पाकिस्तान में सीजफायर हो जाने का ऐलान किया, मोदी सरकार भी डिफेंसिव हो गई। कांग्रेस समेत कई दलों ने सवाल उठाए कि कहीं डोनाल्ड के दबाव में तो भारत ने हमले रोकने का फैसला नहीं किया। जबकि हकीकत यह है कि दस मई की सुबह बुरी तरह मार खाने के बाद पाकिस्तान ने पानी मांग लिया और खुद उसके डायरेक्टर जनरल मिलिट्री ऑपरेशन्स (डीजीएमओ) ने भारत में अपने काउंटर पार्ट को फोन करके हमले रोकने का आग्रह किया।

पाकिस्तान पर निर्णायक हमलों के बाद भी कथित सीजफायर परोक्ष रूप से देश के सैन्य नेतृत्व को भी नागवार गुजारा होगा, लेकिन ये देश की सेनाओं का अनुशासन ही है कि वे सरकार के फैसले पर सवाल नहीं उठाते। फिर भी पूर्व सेना प्रमुख वीपी मलिक ने तो कह भी दिया कि एक दिन इंतजार और करना चाहिए था। इस स्थिति में कांग्रेस ने मोदी सरकार को धेरना का मौका गंवा दिया। कम से कम कांग्रेस सोची समझी रणनीति के तहत मोदी और भाजपा को ऑपरेशन सिंटूर का सियासी फायदा लेने से तो रोक ही सकती थी, लेकिन कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर के एक बयान पर सवाल उठाते हुए कह दिया कि पाकिस्तान को सैन्य कार्यवाही की सूचना पहले ही दे दी गई थी। राहुल ने यह भी पूछ लिया कि इससे वायुसेना को कितना नुकसान हुआ और हमारे कितने विमान दुश्मन ने मार गिराए? हालांकि विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि जयशंकर के बयान का गलत मतलब निकाला गया है, लेकिन कांग्रेस नेताओं ने विदेश मंत्री को जयचंद तक कह दिया और इस मुद्दे पर मोदी को धेरने की नाकाम कोशिश कर ली।

इधर, राहुल के बयान से भाजपा को हमलावर होने का मौका मिल गया और उसने बिना समय गंवाए कांग्रेस की राष्ट्रवाद पर कथित कमज़ोरी को लपक लिया। भाजपा प्रवक्ता संबिंद पात्रा ने तो यह भी कह दिया कि आतंकी हाफिज सईद ने एक बार राहुल गांधी की तारीफ की थी और अब इसका करण समझ में आने लगा है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी परोक्ष रूप से कांग्रेस को निशाना बना रहे हैं। गुजरात के बाद बिहार और यूपी के दौरं में उन्होंने ऑपरेशन सिंटूर को भुनाने की पूरी कोशिश करते हुए कांग्रेस को धेरने का मौका नहीं चूका।



आपकी जानकारी के लिए 🙏

Translate post



5:30 PM · 29/05/25 · 8.6K Views

Indo-Pak troops exchange sweets

By Daily Excelsior · January 15, 2014



Indo-Pak Army officers exchange sweets at Aman Setu in Uri sector on Tuesday.

Srinagar, Jan 14: For the first time since last year's tension between Indian and Pakistani troops along the Line of Control (LoC), troops of the two countries held flag meetings and exchanged sweets at the LoC on the occasion of Eid-e-Milad, the birth anniversary of Prophet Muhammad (SAW).

कांग्रेस ने एक गलती और की। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजकर दुनिया को पाकिस्तान ही हरकतों से अवगत करवाने की कोशिशों पर भी कांग्रेस ने परोक्ष रूप से सवाल उठा दिए। हालांकि उसने इस रणनीति का खुला विरोध तो नहीं किया, लेकिन प्रतिनिधिमंडलों में अपने नेताओं के नामों को लेकर की गई आपत्ति ने कांग्रेस की किरकिरी ही करवाई। केंद्र सरकार ने कांग्रेस सांसद शशि थरूर को नेतृत्व सौंपा तो कांग्रेस ने कहा, 'हमने तो इनका नाम ही नहीं दिया था।' मनीष तिवारी के नाम पर भी आपत्ति रही, लेकिन कांग्रेस ने यहां भी मौका गंवा दिया। दरअसल, विदेशी दौरों में विपक्षी नेताओं को भेजने की सरकार की नीति पर मोदी सरकार ने 2014 के बाद से ब्रेक लगा दिया था। अब जब मोदी सरकार पूर्ववर्ती सरकारों के रास्ते पर आई तो कांग्रेस शुगर कोटेड दवा के रूप में इसे भुना सकती थी। खैर, इतना ही नहीं, विदेशों में मोदी सरकार की ओर से पाकिस्तान को दिए गए जवाब को लेकर थरूर के बयान भी कांग्रेस नेताओं को गास नहीं आए और कांग्रेस के एक नेता ने तो थरूर को भाजपा को सुपर प्रवक्ता तक बता दिया। केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने इस पर सवाल उठाया कि क्या कांग्रेस चाहती है कि उसके नेता विदेशों में जाकर अपने प्रधानमंत्री की खिलाफत करें? फिर भी इस मुद्दे पर बयानबाजी बढ़ने लगी तो कांग्रेस आलाकमान को डर सताया और ऐसे बयानों से बचने की नसीहत देनी पड़ी।

कांग्रेस ने सरकार की विदेश नीति पर भी सवाल उठाए। इस वक्त में ये भी उचित नहीं कहे जा सकते। जाहिर है कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद मित्र देशों ने भी नपेतुले बयान देकर भारत का समर्थक कहलाने से गुरेज किया, लेकिन क्या कांग्रेस को इस वक्त इस पर सवाल उठाना चाहिए?



सवाल यह है कि आखिर कांग्रेस और इसके नेता इतने नासमझ क्यों हो गए हैं कि जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद लोगों के मन में राष्ट्रवाद की भावना हिलोरे मार रही है तो इस पर सवाल कैसे उठाए जा सकते हैं? कांग्रेस के अध्यक्ष मालिकार्जुन खरणे और राहुल गांधी के बयान मायने रखते हैं और वे ही कभी नुकसान का सवाल उठाए या पूरे ऑपरेशन को एक छोटा सा युद्ध कहे तो फिर जनता कांग्रेस को क्यों सुनेगी? वह तो मोदी की बातों पर ही ऐतबार करेगी।



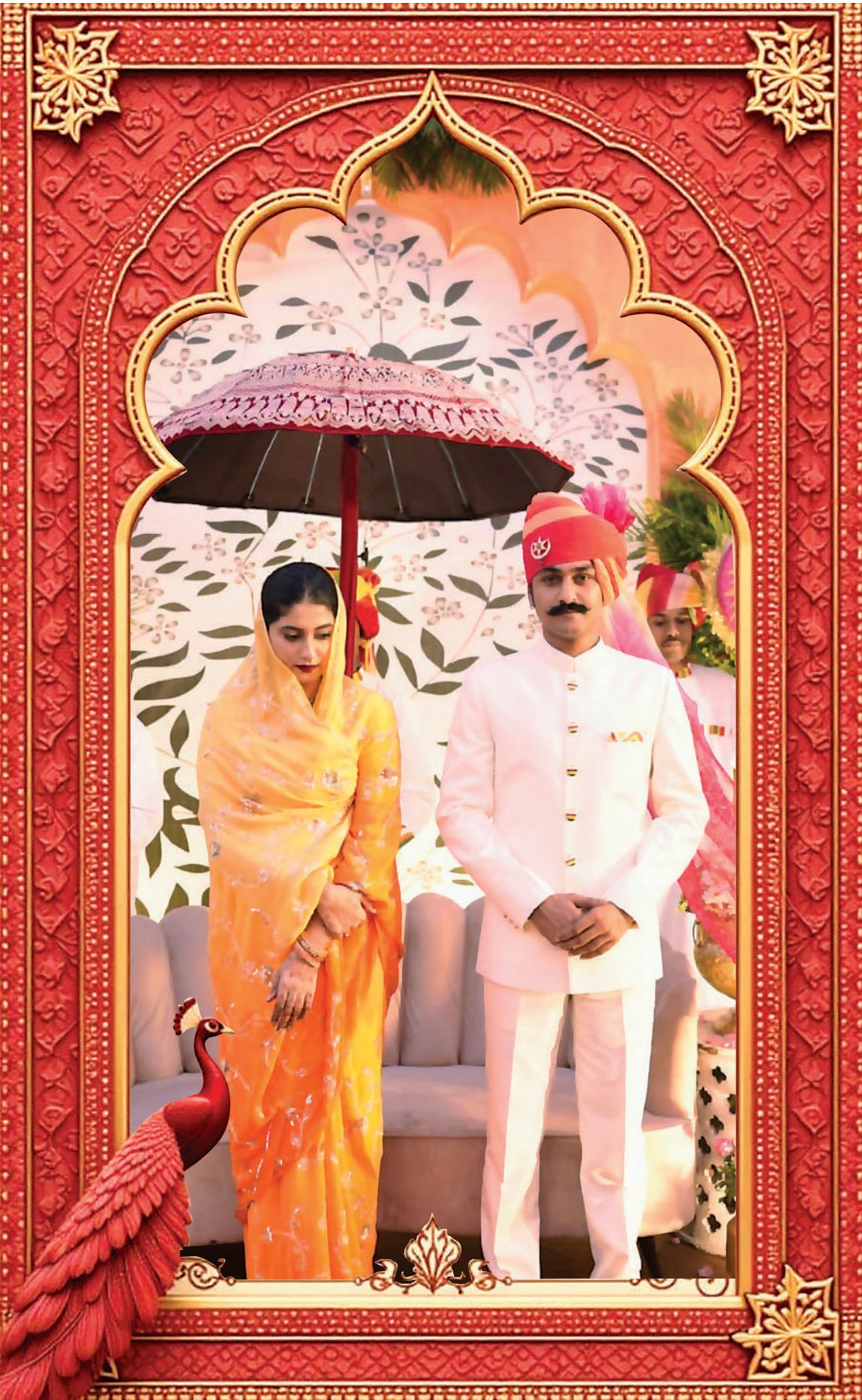
वरिष्ठ पत्रकार नीरज चौधरी जैसे राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि ये कांग्रेस के भीतर चल रही वर्चस्व और वैचारिक लड़ाई का नतीजा है। ऐसा नहीं है कि कांग्रेस के शशि थरूर, मनीष तिवारी और पूर्व में विदेश राज्यमंत्री रहे आनन्द शर्मा जैसे नेताओं ने ही विदेशों में केंद्र सरकार की कार्यवाही का समर्थन करते हुए पाकिस्तान की पोल खोली है। पहले भी अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेताओं का तत्कालीन सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ विदेशों में सफलता पूर्वक इस्तेमाल किया है। उस वक्त विपक्ष में रही भाजपा ने सवाल तो नहीं उठाए। अब कांग्रेस अपनी अंदरूनी कशमकश के कारण खुद न सिर्फ एक्सपोज हो रही है, बल्कि अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम भी कर रही है।

■ छ्यातनाम स्तम्भकार और विश्लेषक आनन्द कोचिकुडी के शब्दों में, 'कांग्रेस में आज जो मतभेद है, वह सिर्फ राष्ट्रवाद या राष्ट्रीय सुरक्षा के सवाल तक सीमित नहीं है। यह एक बहुत बड़ा वैचारिक टकराव है।' 2024 के चुनाव से पहले जाति जनगणना पर पार्टी अध्यक्ष खड़गे को लिखे आनंद शर्मा के पत्र को याद करें, जिसमें उन्होंने बताया था कि यह "पहचान की राजनीति का समर्थन या उसमें शामिल न होने" की उनकी नीति से ऐतिहासिक रूप से अलग है। शर्मा ने 1980 के चुनाव में इंदिरा गांधी के आँखों का हवाला दिया, "न जात पर न पात पर, मुहर लगेगी हाथ पर", और मंडल आयोग की रिपोर्ट पर राजीव गांधी के भाषण का, "अगर जाति को हमारे देश में जातिगाद को स्थापित करने के लिए परिभाषित किया जाता है तो हमें समस्या होगी..."।

■ दरअसल, कांग्रेस दो धड़ों में बंटी हुई दिख रही है। एक धड़ा राहुल गांधी के नेतृत्व के पीछे- पीछे चलने की हौड़ में है और दूसरा धड़ा जो साल 2020 में गांधी परिवार की नीतियों के सामने जी-23 के रूप में सामने आया था, व्यक्तिगत राज्यमंत्री का विरोध करता है। जब जी-23 बना था, उस वक्त कांग्रेस नेता कपिल सिंघल ने कहा था कि हम जी-23 हैं, जी हुजूर-23 नहीं। आज वही बात फिर सामने आने लगी है। कांग्रेस एक बार फिर जी-हुजूर-थ्योरी वाले नेताओं के जाल में फँसती जा रही है और इसके चलते ही पिछले लोकसभा चुनावों से पहले बने प्रमुख विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' के अस्तित्व पर भी सवाल उठने लगे हैं।

■ पहले भी कांग्रेस चौकीदार चोर जैसे अभियानों से मार खा चुकी है, लेकिन पिछले चुनाव में जैसे ही कांग्रेस ने रुख बदल और मोदी विरोध के साथ आमजन से जुड़े मुद्दों की बात की तो जनता साथ आई और बरसों बाद कांग्रेस की लोकसभा में सीटें 93 तक पहुंची। उस वक्त उम्मीद की गई थी सशक्त विपक्ष मोदी को काबू में रखने में कामयाब होगा, लेकिन कांग्रेस फिर अडानी-अम्बानी के रास्ते पर आ गई और संसद में भी उसे मोदी सरकार पर अंकुश लगाने में कामयाबी नहीं मिल सकी। ताज्जुब तो इस बात का है कि कई ठोकरें खाने के बाद भी कांग्रेस सम्प्रभु नहीं रही और बेतुके बयानों से अपनी स्थिति खुद कमज़ोर करती जा रही है। //

फालनाव दतिया राजघराने का रिंग सेवा



राजस्थान व मध्य प्रदेश
सुपुत्र कुंवर आदित्यराज
समारोह में पारंपरिक वि
सिंह बोध और रेलवे पुलिस
सरकार हिम्मत



रेमनी व तिलक दस्तूरी समारोह संपन्न



के 2 बड़े राजधाने आपस में रिश्त में बंध गए। उदयपुर के आरिका पैलेस में 14 मई रात फालना ठिकाने के ठाकुर अभिमन्यु सिंह के सिंह और मध्य प्रदेश के दतिया राजधाने की राजकुमारी आदिति राजे सिंह की रिंग सेरेमनी और तिलक दस्तूरी समारोह संपन्न हुआ। विधि-विधान और धार्मिक अनुष्ठानों का पालन किया गया। दतिया राज परिवार से विधायक महाराज घनश्याम सिंह, पूर्व गृह मंत्री महेंद्र फोर्स के विधिविधान अधिकारी राजीव सिंह समेत कई गणमान्य व्यक्तियों उपस्थित रहे। फालना राजपरिवार की ओर से घाणेरात राजधाने के सिंह, वाणीद राजपरिवार के सरकार अजीत सिंह और पूर्व विधायक कान सिंह कोटड़ी सहित अन्य प्रमुख ठिकानेदार मौजूद थे।

मारवाड़ के प्रमुख ठिकानेदारों में से एक फालना ठिकाने के ठाकुर अभिमन्यु सिंह के सुपुत्र कुंवर आदित्यराज सिंह और मध्यप्रदेश के दतिया राजधाने के रिपुणजय सिंह बुंदेला (जूदेव) की सुपुत्री राजकुमारी सुश्री आदितिराज सिंह के साथ रिंग सेरेमनी और तिलक दस्तूरी समारोह पूर्ण राजशाही परिवेश, विधि-विधान, धार्मिक अनुष्ठानों, पारम्परिक तौर तरीकों, पूर्व शाही ठाट-बाट के साथ गत (14 मई 2025) को उदयपुर के आरिका पैलेस में सम्पन्न हुआ। जात रहें कि फालना राजधाना परिवार हमेशा से ही अपने पारिवारिक कार्यक्रम में पारंपरिक रसमों और अनुष्ठानों को महत्व देता है।

राजधाना परिवार के तिलक दस्तूरी और रिंग सेरेमनी के भव्य समारोह में राजस्थान और मध्यप्रदेश के पूर्व राजपरिवार के सदस्य, IAS, IPS, अधिकारीगण, बिजनेस घरानों के सदस्य, उद्योगों की हस्तियों ने शामिल होकर दोनों राजपरिवारों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर दतिया राज परिवार के प्रमुख सदस्य महाराज घनश्याम सिंह (विधायक) पूर्व गृह मंत्री महेन्द्र सिंह बोध दतिया, राजपरिवार सदस्य और रेलवे पुलिस फोर्स के सीनियर अधिकारी राजीव सिंह, सोनकच राजपरिवार के दिविजय सिंह बघेल, और राजपरिवार के दीवान मानवातासिंह, बेरचा राजपरिवार के प्रवीण सिंह वैस, धर्मेन्द्र सिंह परमार उर्फ बच्चू राजा, प्रथीपाल सिंह जिगना, जैवेन्द्र सिंह, अरविंद डांगी (विधिविधान नेता) रामकरण सिंह गुजरात आदि सभी दतिया परिवार की तरफ से उपस्थित हुए। वहीं फालना राजपरिवार की तरफ से घाणेरात राजधाने के सरकार हिम्मत सिंह, चाणोद राजपरिवार के सरकार अजीत सिंह, दिलीप सिंह यरकाणा, पूर्व विधायक कान सिंह कोटड़ी, नरपति सिंह लोहारकी, विरेन्द्र सिंह कोठारिया, विश्वविजय सिंह लुणा सहित मारवाड़, मेवाड़, हाड़ौती, जयपुर, पीलीबंगा, सिरोही आदि क्षेत्रों से प्रमुख ठिकाणेदार सहित, फालना ठाकुर अभिमन्यु सिंह एवं कुंवर आदित्यराज सिंह के स्कूल कॉलेज समय के साथी मित्रगण आदि लोगों ने शिरकत की।



राजस्थान कांग्रेस में इस बार बहुत कुछ दिलचस्प होने के संकेत कुर्सी के लिए इस बार बढ़ेगी याद !



मनीष गोदा
वरिष्ठ पत्रकार

मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए राजस्थान कांग्रेस में दावेदारी आमतौर पर दो ही चेहरों के बीच रही है। इनमें अशोक गहलोत स्थाई चेहरा रहे हैं, बाकी चेहरे बदलते रहे हैं। जैसे 1998 में प्रमुख दावेदार परसराम मदरेणा और अशोक गहलोत थे, 2003 में सिर्फ गहलोत, 2008 में सीपी जोशी और गहलोत थे, तो 2013 में फिर सिर्फ गहलोत थे। इसके बाद 2018 व 2023 में सचिन पायलट और गहलोत दावेदारी में थे, लेकिन 2028 में बड़ी कुर्सी का मुकाबला चतुष्कोणीय या बहुकोणीय होता दिख रहा है।



रा जस्थान में कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति अने वाले समय और खासतौर पर अगले विधानसभा चुनाव के दौरान दिलचस्प होती नजर आ रही है। राजनीति में हालांकि कब क्या समीकरण बन जाएं, अभी कहना थोड़ा मुश्किल होता है, लेकिन राजस्थान कांग्रेस में पहले जो कुछ होता रहा है और अभी जो कुछ चल रहा है, उससे आने वाले समय में प्रदेश की बड़ी कुर्सी यानी मुख्यमंत्री पद के लिए मचने वाली रार का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

पिछले पांच-छह चुनाव की बात करें तो मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए राजस्थान कांग्रेस में दावेदारी आमतौर पर दो ही चेहरों के बीच रही है। इनमें अशोक गहलोत स्थाई चेहरा रहे हैं, बाकी चेहरे बदलते रहे हैं। जैसे 1998 में प्रमुख दावेदार परसराम मदरेणा और अशोक गहलोत थे, 2003 में सिर्फ अशोक गहलोत ही थे। इसके बाद 2008 में सीपी जोशी और अशोक गहलोत थे, तो 2013 में फिर सिर्फ अशोक गहलोत थे। इसके बाद 2018 व 2023 में सचिन पायलट और अशोक गहलोत दावेदारी में थे, लेकिन 2028 में बड़ी कुर्सी का मुकाबला चतुष्कोणीय या बहुकोणीय होता दिख रहा है। यानी बड़ी कुर्सी के दावेदारों की जो रेस हमने पिछले चुनाव में भाजपा में होती देखी थी, वह इस बार कांग्रेस में नजर आ सकती है। इसके लक्षण अभी से नजर आने लगे हैं और यह तय मानिए कि कोई नाटकीय घटनाक्रम नहीं हुआ तो जैसे-जैसे समय गुजरेगा, यह लक्षण और गहरे होते जाएंगे।

जानिए कौन दिख रहे हैं दावेदार

प्रदेश की इस सबसे बड़ी कुर्सी के लिए यह आंकड़ा जल्दबाजी लग सकता है, लेकिन राजनीति करने वाले और इन्हें देखने वाले जानते हैं कि पांच साल का समय बहुत ज्यादा नहीं होता। बड़े लक्ष्य के लिए तैयारी भी बड़ी करनी पड़ती है। यही कारण है कि कांग्रेस में इस बार पूर्व सीएम अशोक गहलोत और पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट जैसे चेहरे तो हैं ही, लेकिन इनके साथ मौजूदा नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली भी नए दावेदारों के रूप में तेजी से आगे बढ़ते दिख रहे हैं।

जारी है गहलोत-पायलट का कोल्ड-वार



पूर्व सीएम अशोक गहलोत और पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट के बीच खिंची तलवारें अभी म्यानों में नहीं लौटी हैं। दोनों के बीच कोल्ड-वार जारी है और इसका एक प्रमुख संकेत यह है कि पार्टी भले ही सत्ता से बाहर है, लेकिन दोनों नेताओं के बीच सामान्य मूलाकातें आज भी नहीं होती। पार्टी के कार्यकर्ताओं में मूलाकातें भले ही हो जाएं, लेकिन वे भी औपचारिक ही रहती हैं। दोनों के समर्थकों के बीच सोशल मीडिया पर बहस का दौर अभी कुछ थमा हुआ नजर आ रहा है, लेकिन यह तय है कि समय बीतने के साथ यह फिर तेज होगा।

डोटासरा-जूली के बीच दिख रही खींचतान...हाल में सम्पन्न हुए विधानसभा के बजट सत्र के दौरान पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के बीच सदन में वर्चस्व की लड़ाई साफ तौर पर नजर आई। एक आसानी से खत्म किए जाने वाले मुद्दे को लेकर डोटासरा ने ऐसा हांगामा कराया कि पहली बार राज्यपाल के अधिभाषण पर नेता प्रतिपक्ष का भाषण नहीं हो पाया और बाद में जब स्पीकर से टकराव के मामले में डोटासरा फंसे तो उनकी नाराजगी के बावजूद जूली गतिरोध खत्म करने को राजी हो गए। इस पर डोटासरा ऐसे नाराज हुए कि फिर सदन में ही नहीं आए।

यह सिर्फ कुछ दिखती हुई स्थितियां हैं, अंदरखाने तो और भी बहुत कुछ चल रहा है, लेकिन ये दिखती हुई स्थितियां संकेत दे रही हैं कि जैसे-जैसे चुनाव का समय नजदीक आएगा, बड़े नेताओं की यह दरारें और गहरा सकती हैं। कांग्रेस के साथ सबसे बड़ी समस्या यही है कि यहां कार्यकर्ता पार्टी से ज्यादा नेता के वफादार होते हैं। यह हम पहले कई बार देख चुके हैं और गहलोत-पायलट संघर्ष में तो साफ तौर पर देख चुके हैं। यह समस्या इस बार भी खत्म होती नजर आ नहीं रही और यही कारण है कि अभी भले ही बड़ी कुर्सी की लड़ाई का आंकलन थोड़ा समय से पूर्व लग रहा होगा, लेकिन राजनीतिक संकेतों का नियमित अध्ययन करते रहना चाहिए।



दावेदारों का दम...आइए अब जानने की कोशिश करते हैं कि ये दावेदार हैं कितने दमदार, यानी किस दम पर इनकी दावेदारी नजर आ रही है

अशोक गहलोत - अभी भी पूरा दम

जैसा हमने पहले बताया कि 1998 से लेकर पिछले चुनाव तक दावेदारों में अशोक गहलोत



स्थाई रहे, बाकी बदलते रहे। वैसा ही इस बार भी है। उम्र के कारण कुछ लोग उनकी दावेदारी कमजोर मान रहे हैं, लेकिन प्रदेश के मुद्दों को लेकर आज भी वे

जितने सक्रिय हैं, उनका कांग्रेस का कोई दूसरा नेता नजर नहीं आता। पिछले दिनों एक बार फिर वे यह बात दोहरा चुके हैं, 'मैं जब तक जिदा हूं प्रदेश की लोगों की सेवा करते रहना चाहता हूं।' उनका यह बयान जाहिर करता है कि उम्र को वे आज भी कोई बाधा नहीं मानते और राजनीति में उनके जितना माहिर खिलाड़ी कोई है नहीं। ये बात वे अनिवार्य बार साबित कर चुके हैं। आलाकमान का भरोसा उन पर आज भी कायम है। यही कारण है कि आपरेशन सिंटूर की प्रेस कॉफ्रेंस के लिए उन्हें दिल्ली जूलाया जाता है। चर्चा यह भी है कि आने वाले दिनों में राष्ट्रीय स्तर पर कोई बड़ी जिम्मेदारी उन्हें मिल सकती है। बाकी उन्हें नजदीक से जानने वाले यह मानते हैं कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर उनकी दावेदारी तभी खत्म होगी, जब वे खुद चाहेंगे और खुद वे कई बार कह चुके हैं कि 'मैं तो छोड़ना चाहता हूं, लेकिन यह कुर्सी मुझे नहीं छोड़ती।'

सचिन पायलट - लोकप्रियता में कोई कमी नहीं

प्रदेश में जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते हैं या यू-ट्यूब प्रत्रकारिता करते हैं वे सचिन पायलट की लोकप्रियता को जम कर भुनाते हैं। पायलट



के बारे में सोशल मीडिया पर आप कुछ भी लिखिए, वह मिनिटों में बायरल होता है और यह बताता है कि युवाओं के बीच उनकी लोकप्रियता किस हृद तक है। उन्होंने 2014 में पार्टी की कमान तब सम्भाली जब पार्टी का ग्राफ गर्ट में था और वहां से वे पार्टी को सरकार बनाने की स्थिति में ले आए। इसके अगे की कहानी सब जानते हैं, लेकिन आज तक उन्होंने जिस तरह का धैर्य रखा

है, उसकी तारीफ एक बार स्वयं राहुल गांधी कर चुके हैं। पायलट आज भी राष्ट्रीय पदाधिकारी हैं और प्रदेश में भी पूरी तरह सक्रिय हैं और पार्टी में अपने कद के चलते इस बार सबसे बड़े दावेदार वही माने जा रहे हैं।

गोविंदसिंह डोटासरा - टशन में कोई कमी नहीं

गहलोत सरकार की राजनीतिक आपदा ने गोविंदसिंह डोटासरा को जो अवसर दिया, उसे उन्होंने बेकर नहीं जाने दिया। वे पिछले पांच साल से पार्टी के प्रदेश



अध्यक्ष हैं और इस दौरान उन्होंने खुद को दमदार नेता के रूप में पार्टी और प्रदेश में स्थापित कर लिया है। पार्टी में सक्रिय नहीं रहने वालों को वे पूरे दम से चेतावनियां देते हैं और विषयक पर बेहत तीखे हमले करते हैं। इस दौरान पार्टी हालांकि विधानसभा चुनाव हारी, लेकिन हार बहुत बुरी नहीं थी और पार्टी ने 70 का आंकड़ा छू लिया। वहीं भाजपा के अबकी बार

चार सौ पार के नारे के बीच वे लोकसभा चुनाव में भी पार्टी को 8 सीटें दिलाने में कामयाब रहे। उनका गमछा डांस सोशल मीडिया पर छाया हुआ है और प्रदेश के सबसे बड़े जाट वोट बैंक वे बड़े स्थापित नेता बन चुके हैं। हालांकि यह उनके लिए एक बाधा भी है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि डोटासरा इस कुर्सी पर कायम रहते हैं तो आने वाले समय में बड़ी कुर्सी के प्रबल दावेदार होंगे।

टीकाराम जूली - धीरे-धीरे

पकड़ बनाता चेहरा

नेता प्रतिपक्ष के पद पर टीकाराम जूली



की नियुक्ति एक राजनीतिक समीकरण के चलते हुई थी और उनके नाम पर आश्चर्य भी व्यक्त किया गया था, क्योंकि जूली गहलोत सरकार में

एक मंत्री से ज्यादा बड़ी पहचान नहीं रखते थे, लेकिन पिछले डेढ़ साल में विधानसभा और विधानसभा के बाहर उन्होंने अपने प्रदर्शन से खुद को प्रदेशव्यापी पहचान रखने वाले नेता के रूप में स्थापित कर लिया है। विधानसभा में सहज और सरल अंदाज में सरकार को प्रभावी ढंग से धेरते हैं और नेता प्रतिपक्ष के पद की गरिमा को बखूबी बनाए रखते नजर आते हैं। वहीं सदन के बाहर भी पूरी तरह सक्रिय हैं और हाल में भाजपा नेता ज्ञानदेव आहूजा के मंदिर विवाद ने उन्हें पार्टी में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। अनुसूचित जाति से होने के कारण पार्टी के जातिगत समीकरण में पूरी तरह फिट बैठते हैं, वहीं उम्र भी ज्यादा नहीं है। यानी युवा नेतृत्व की मांग भी पूरी करते नजर आते हैं। पार्टी के जानकार उन्हें लम्बी रेस का ऐसा खिलाड़ी मानते हैं जो धीरे-धीरे ही सही, लेकिन गहरी जड़े जमा रहा है।

मेवाड़ का खाली सियासीपन, नेतृत्व का संकट आखिर क्यों?

विद्यासत तो मिली, वारिस नहीं



मृदुलिका सिंह
लेखिका, पत्रकार

गुलाबचंद कटारिया के संवैधानिक पद पर जाकर राज्यपाल बनने, किरण माहेश्वरी और गिरिजा व्यास के निधन से इनकी कमी केवल व्यक्तित्वों की नहीं है— यह नेतृत्व, दृष्टिकोण और जनसंपर्क की कमी भी है। जब तक भाजपा और कांग्रेस जैसी पार्टियां मेवाड़ में युवा, पढ़े-लिखे और समाज से जुड़े नेताओं को आगे नहीं लातीं, तब तक यह राजनीतिक शून्यता बनी रहेगी। राजस्थान की राजनीति को नई दिशा देने के लिए मेवाड़ को एक बार फिर नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभानी होगी और यह तभी संभव है जब युवाओं को न केवल प्रतिनिधित्व दिया जाए, बल्कि जिम्मेदारी भी सौंपी जाए।



क हते हैं कि जब कोई वृक्ष बहुत विशाल हो जाता है, तो वह अपने नीचे उगने वाले नहीं पौधों को बढ़ने की जगह नहीं देता। ऐसे में धूप और स्थान की कमी के कारण छोटे पौधे पनप नहीं पाते। कुछ ऐसा ही हुआ है मेवाड़ की राजनीति में। पार्टी चाहे कोई भी रही हो, जो चेहरा बनकर नेतृत्व कर रहे थे, उन्होंने नई खेफ को आगे नहीं आने दिया। बात भले ही हमेशा युवाओं को मौका देने की होती रही, लेकिन राजनीतिक गणित से युवा चेहरों को लीडरशिप से वंचित रखा गया।

राजस्थान व केन्द्र की राजनीति में मेवाड़ क्षेत्र के कई दिग्गज नेताओं ने दशकों तक अहम भूमिका निभाई है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस, दोनों ही दलों में ऐसे नेता रहे हैं, जिन्होंने संगठन और सरकार दोनों स्तरों पर प्रभावी उपस्थिति दर्ज करवाई। गुलाबचंद कटारिया, स्व. किरण माहेश्वरी (भाजपा) और स्व. गिरिजा व्यास (कांग्रेस) जैसे नेताओं ने न केवल अपनी पार्टियों को मजबूत किया, बल्कि मेवाड़ जैसे सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र को नेतृत्व भी प्रदान किया। लेकिन इन वरिष्ठ नेताओं के सक्रिय राजनीति से निष्क्रिय होने या निधन के बाद, यह प्रश्न गहराता जा रहा है कि अब नेतृत्व कौन संभालेगा? क्या कोई ऐसा युवा चेहरा है जो इन नेताओं की तरह जनसंपर्क और नेतृत्व क्षमता रखता हो, जो न केवल पार्टी, बल्कि पूरे क्षेत्र की आवाज बन सके?

मेवाड़ की राजनीतिक पृष्ठभूमि

मेवाड़ क्षेत्र राजस्थान की राजनीति में हमेशा से एक निर्णायक भूमिका में रहा है। यहां से चुने गए कुछ नेता मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री भी बने हैं। यह क्षेत्र राजनीतिक रूप से सजग, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और सामाजिक रूप से संगठित रहा है।

भाजपा में गुलाबचंद कटारिया, जो उदयपुर से आते हैं, लंबे समय तक भाजपा के प्रमुख नेताओं में शामिल रहे। उन्होंने गृहमंत्री और नेता प्रतिपक्ष जैसे पदों पर रहते हुए प्रदेश की राजनीति पर गहरी छाप छोड़ी। उनकी छवि एक सख्त प्रशासक और सुलझे हुए जनसेवक की रही है।

किरण माहेश्वरी जो नगर परिषद में पार्षद से राजनीतिक की सीढ़ी पर चढ़ी और सीधी सभापति बन गई। किरण राजनीति में जिन तेज कदमों से आगे बढ़ी, उससे एकबारी लगने लगा था कि उदयपुर की ओर एक नई 'किरण' होगी। लेकिन उनकी गति को राजनीति के कुछ चेहरों ने रोक दी। इसके बाद वे उदयपुर से निकलकर सीधे राजसमंद गईं और वहां से विधायक बनी। वह भाजपा की एक सशक्त महिला नेता के रूप में पहचानी गई। उन्होंने शहरी विकास से लेकर महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर उल्लेखनीय कार्य किया। उनकी लोकप्रियता पार्टी की सीमाओं से परे थी। वे वसुंथरा सरकार में मंत्री भी रही।

कांग्रेस की ओर से गिरिजा व्यास उदयपुर से एक बड़ा चेहरा था। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष से लेकर केंद्र में मंत्री और महिला आयोग की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं। उदयपुर से जीतने वाली गिरिजा भी बाद में चित्तौड़गढ़ से चुनाव लड़ी। एक कॉलेज शिक्षिका से सांसद बनीं। उन्होंने महिला मुद्दों को संसद और समाज, दोनों स्तरों पर गंभीरता से उठाया।

...इन तीनों नेताओं का प्रभाव न केवल पार्टी तक सीमित था, बल्कि वे अपने क्षेत्रों में जननेता के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते रहे।

अब... एक शून्यता

आज जब हम मेवाड़ की राजनीति पर नजर डालते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि इन वरिष्ठ नेताओं के बाद ऐसा कोई युवा चेहरा नहीं उभरा है, जो पूरे क्षेत्र की आवाज बन सके।

भाजपा में अर्जुनलाल मीणा (उदयपुर सांसद) और कांग्रेस में रघुवीर मीणा जैसे नेता सक्रिय तो हैं, लेकिन इनका जनाधार सीमित है। वे अब तक भी उस स्तर की जनस्वीकृति या नेतृत्व क्षमता नहीं दिखा पाए हैं, जो पूर्व नेताओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। वहीं भाजपा में भी युवाओं को मौका देने की बजाए पुराने चेहरों पर ही भरोसा जाताया गया। जब गुलाबचंद कटारिया को सबसे पहले असम का राज्यपाल (वर्तमान पंजाब के राज्यपाल) बनाया, तब लगा अब मेवाड़ का भाजपा नेता कौन होगा। तब एक नाम उभर कर आया चित्तौड़गढ़ के सीपी जोशी। इसी बीच उनको प्रदेश अध्यक्ष भी बना दिया गया, लेकिन सीपी भी प्रदेश का जिम्मा मिलने के बाद मेवाड़ को पूरा समय नहीं दे पाए।

युवाओं का मोहब्बंग

राजनीति में युवाओं की भगीदारी अब केवल रैलियों और सोशल मीडिया अभियानों तक सीमित रह गई है। न तो पार्टियां उन्हें निर्णय करने की भूमिका देती हैं, न ही उन्हें जमीनी स्तर पर काम करने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। इससे मेवाड़ जैसे क्षेत्र, जहां शिक्षा और समझ की कोई कमी नहीं है, वहां के युवा राजनीति से दूर होते जा रहे हैं। कॉलेज यूनियनों, पंचायत और निकाय चुनावों में सक्रिय युवाओं को प्रोत्साहित करने की बजाए, पार्टी नेतृत्व वंशवाद, गुटबाजी और पुराने चेहरों पर ही केंद्रित रहा है।

भाजपा (BJP) के प्रमुख नेता



गुलाबचंद कटारिया (उदयपुर): 1977 से 2023 तक विधायक (उदयपुर शहर से) राजस्थान सरकार में गृहमंत्री, शिक्षा मंत्री, पंचायती राज मंत्री नेता प्रतिपक्ष (विधानसभा)... वर्तमान में पंजाब के राज्यपाल



स्व. किरण माहेश्वरी (राजसमंद): 2004 में अजमेर से सांसद (लोकसभा)

- 2008 से राजसमंद से विधायक
- राजस्थान सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री
- महिला सशक्तिकरण की प्रबल समर्थक... 2020 में निधन



मीनाक्षि माहेश्वरी (राजसमंद): किरण माहेश्वरी की पुत्री

- वर्तमान में विधायक (2021 उपचुनाव से)
- अनुभव सीमित, लेकिन राजनीति में सक्रिय, किरण की परछाई अब इनमें दिखने लगी



अर्जुनलाल मीणा (उदयपुर): दो बार सांसद (2014, 2019)

- आदिवासी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व
- संसदीय समितियों में सक्रिय भूमिका, सांसद का टिकट कटने के बाद सक्रियता कम



सीपी जोशी: चित्तौड़गढ़ से सांसद

- भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष रहे
- इनके कार्यकाल में हुए चुनाव में भाजपा की सरकार बनी

कांग्रेस के प्रमुख नेता



स्व. गिरिजा देवी (चित्तौड़गढ़/उदयपुर): 1991, 1996, 1999, 2004 में लोकसभा सांसद

- केंद्रीय मंत्री: आवास एवं शहरी गरिबी उन्मूलन
- राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष
- राजस्थान महिला कांग्रेस की अध्यक्ष



सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): कई बार विधायक व सांसद

- पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, कांग्रेस
- केंद्रीय मंत्री: ग्रामीण विकास, पंचायती राज, सड़क परिवहन, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष



रघुवीर सिंह मीणा (उदयपुर): पूर्व सांसद (2009–2014)

- वरिष्ठ कांग्रेस नेता
- आदिवासी क्षेत्रों में प्रभाव
- संगठनात्मक भूमिका में सक्रिय



उदयलाल आंजना: चित्तौड़गढ़ जिले से आने वाले उदयलाल आंजना चित्तौड़ सांसद रहे

- वे निम्बाहेड़ा विधायक रहे
- वे सरकार में सहकारिता मंत्री भी रहे

क्या है समाधान?

राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि युवा नेतृत्व को तैयार करना समय की मांग है। विशेषकर मेवाड़ जैसे क्षेत्रों में, जहां जनता पढ़ी-लिखी और राजनीतिक रूप से सजग है।

युवाओं को पार्टी के निर्णयात्मक पदों पर लाना होगा, जिससे वे नीति-निर्धारण में भागीदारी कर सकें।

वरिष्ठ नेताओं को अपनी राजनीतिक विरासत युवाओं को सौंपने का साहस दिखाना होगा।

ब्लॉक, जिला और मंडल स्तर पर सक्रिय कार्यकर्ताओं को अवसर देने के लिए पारदर्शी प्रक्रिया अपनानी होगी।

राजनीति को सेवा और करियर का संतुलन बनाना होगा, जिससे योग्य, ईमानदार और प्रतिबद्ध युवा इसमें आकर्षित हों।

गुलाबचंद कटारिया के संवैधानिक पद पर जाकर राज्यपाल बनने, **किरण माहेश्वरी** और **गिरिजा देवी** क्वास के निधन से इनकी कमी केवल व्यक्तित्वों की नहीं है- यह नेतृत्व, दृष्टिकोण और जनसंपर्क की कमी भी है। जब तक भाजपा और कांग्रेस जैसी पार्टियां मेवाड़ में युवा, पढ़ी-लिखे और समाज से जुड़े नेताओं को आगे नहीं लातीं, तब तक यह राजनीतिक शून्यता बनी रहेगी। राजस्थान की राजनीति को नई दिशा देने के लिए मेवाड़ को एक बार फिर नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभानी होगी और यह तभी संभव है जब युवाओं को न केवल प्रतिनिधित्व दिया जाए, बल्कि जिम्मेदारी भी सौंपी जाए।

बाड़मेर में कांग्रेस की जय हिंद सभा खुलकर सामने आ गई आंतरिक कलह



दुश्यंत राजपुरोहित
वरिष्ठ पत्रकार

अमीन खान और मेवाराम जैन का निष्कासन इस सियासी ड्रामे का केंद्रीय हिस्सा है। शिव विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के कद्दाकर नेता रहे अमीन खान को 2024 के लोकसभा चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार रविंद्रसिंह भाटी को समर्थन देने के लिए पार्टी से छह साल के लिए निलंबित किया गया था। दूसरी ओर, मेवाराम जैन का निष्कासन एक कथित अश्लील वीडियो कांड के बाद हुआ, जिसने कांग्रेस की एक कांग्रेस इकाई में गहरी गुटबाजी को उजागर करती है, जहां हरीश चौधरी का खेमा और अमीन-मेवाराम के समर्थक आमने-सामने हैं।

रे गिस्तानी जिला बाड़मेर अपनी सीमावर्ती शान और देशभक्ति की कहानियों के लिए ख्यात है। 26 मई को यहां आयोजित कांग्रेस की जयहिंद सभा भारतीय सेना के शौर्य और बलिदान को सम्मान देने के लिए कांग्रेस की राष्ट्रीय पहल का हिस्सा थी, लेकिन स्थानीय नेताओं की गुटबाजी, पुरानी रंगशों और सियासी तकरार के कारण सियासी रंगमंच में तबदील हो गई। अमीन खान, मेवाराम जैन और हरीश चौधरी के बीच का तीखा टकराव इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहा, जिसमें निष्कासन, नरेबाजी, और सियासी तंज ने माहौल को गरमा दिया। बाड़मेर की सियासत में यह घटना एक नए अध्याय की शुरुआत बन गई, जिसने कांग्रेस की आंतरिक कलह को नंगा कर दिया।

वीरेंद्र धाम में यह जयहिंद सभा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जश्न मनाने, सेना के प्रति सम्मान व्यक्त करने और केंद्र सरकार से पहलागाम में आतंकी हमले तथा अचानक सीजफायद को लेकर जवाब मांगने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। सभा में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा, सचिव पायलट, राज्य कांग्रेस प्रभारी सुखिंजरसिंह रंधावा, और बायतु विधायक हरीश चौधरी आदि कांग्रेस के दिग्गज नेता मौजूद थे। गहलोत ने मंच से केंद्र की भाजपा सरकार पर निशान साथते हुए कहा कि आप सीजफायद की बात चल रही थी, तो देश को इसकी जानकारी दी जानी चाहिए थी। उन्होंने अमेरिका की मध्यस्थता पर तंज कसते हुए पूछा, “पंचायती करने वाला अमेरिका कौन होता है?” यह बयान भाजपा की तिरंगा यत्रा के जवाब में था, जिसे कांग्रेस ने “सियासी ड्रामा” करार दिया।

सभा का असली ‘तड़का’

सभा का असली तड़का तब लगा, जब निष्कासित नेताओं अमीन खान और मेवाराम जैन के समर्थकों ने हरीश चौधरी पर गंभीर आरोप लगाए। समर्थकों का दावा था कि हरीश ने जानबूझकर गहलोत, पायलट और डोटासरा के कांग्रेसी नेताओं को जसदेर तालाब के रास्ते वीरेंद्र धाम भेजा, ताकि अमीन और मेवाराम के समर्थकों को नेताओं का स्वागत करने का मौका न मिले। यह आयोग इतना गंभीर था कि सभा स्थल पर “हरीश चौधरी मुर्दाबाद” और “गद्दार वापस जाओ” जैसे नारे गूंजने लगे। नाराज समर्थकों ने हरीश को “षड्यंत्रकारी” तक करार दिया, जिससे आयोजन का माहौल तनावपूर्ण हो गया। यह घटना बाड़मेर की कांग्रेस इकाई में गहरी गुटबाजी को उजागर करती है, जहां हरीश चौधरी का खेमा और अमीन-मेवाराम के समर्थक आमने-सामने हैं।

अमीन खान और मेवाराम जैन का निष्कासन इस सियासी ड्रामे का केंद्रीय हिस्सा है। शिव विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के कद्दाकर नेता रहे अमीन खान को 2024 के लोकसभा चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार रविंद्रसिंह भाटी को समर्थन देने के लिए पार्टी से छह साल के लिए निर्वाचित किया गया था। दूसरी ओर, मेवाराम जैन का निष्कासन एक कथित अश्लील वीडियो कांड के बाद हुआ, जिसने उनकी सियासी और सामाजिक साख को गहरी चोट पहुंचाई। इस कांड ने हरीश चौधरी को उन पर हमला बोलने का मौका भी दिया। सभा में हरीश ने बिना नाम लिए तंज कसते हुए कहा कि “चरित्रहीन और दुराचारी” लोगों के लिए कांग्रेस में जगह नहीं है। इस बयान ने मेवाराम के समर्थकों को भड़का दिया, जिन्होंने हरीश पर “सियासी सफाई” के नाम पर व्यक्तिगत हमले करने का आरोप लगाया।

गहलोत ने सभा में अमीन खान का जिक्र करते हुए उनकी वापसी की संभावना जताई, लेकिन मेवाराम पर सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि पार्टी को “चरित्र और सिद्धांत” वाले नेताओं की जरूरत है। अमीन खान ने हरीश पर पलटवार करते हुए दावा किया कि उनकी “गलत रणनीति” और “अहंकार” के कारण कांग्रेस को बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर में हार का सामना करना पड़ा। मेवाराम ने भी चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि वे जल्द “सच्चाई सामने लाएंगे”। उन्होंने अपने निष्कासन को “सियासी साजिश” करार दिया।

सभा के बाद अमीन और मेवाराम ने पार्टी आलाकमान से मुलाकात की, लेकिन कांग्रेस ने साफ कर दिया कि उनकी वापसी के लिए स्थानीय स्तर पर सहमति जरूरी है। यह सहमति हरीश चौधरी के प्रभाव वाले बाड़मेर में आसान नहीं है, क्योंकि हरीश और उनके विरोधी खेमे के बीच सत्ता की जंग चरम पर है। इस तरह वीरेंद्र धाम की यह सभा, जो सेना के सम्मान का मंच बनना थी, हरीश, अमीन और मेवाराम की आपसी रंगिश का अखाड़ा बन गई। बाड़मेर की सियासत में यह नया अध्याय आने वाले दिनों में और रंग दिखाएगा, क्योंकि कांग्रेस की एकता पर सवाल गहराते जा रहे हैं।

बाड़मेर में कांग्रेस का शक्ति प्रदर्शन: पार्टी के कई दिग्गज जुटे नोटी और राजस्थान सरकार पर सवालों की बौछार



सीमावर्ती जिले बाड़मेर में 26 मई को आयोजित कांग्रेस की "जयहिंद सभा" ने न केवल भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम को सम्मान देने का मंच प्रदान किया, बल्कि केंद्र सरकार की मोटी सरकार और राजस्थान की भजनलाल शर्मा सरकार पर तीखे सवाल उठाने का अवसर भी बन गया। लंबे समय बाद बाड़मेर में हुए कांग्रेस के इस बड़े आयोजन में पार्टी के दिग्गज नेताओं का जमावड़ा देखने को मिला। इस आयोजन में ऑपरेशन सिंदूर, अमेरिकी हस्तक्षेप, और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे राष्ट्रीय मुद्दों व राज्य सरकार की नीतियों आदि पर भी चर्चा हुई।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के निर्देश पर 20 से 30 मई के बीच देश के 15 शहरों में जयहिंद सभाओं के आयोजन के तहत बाड़मेर को विशेष रूप से शामिल किया गया। सभा में उपस्थित भीड़ हालांकि आयोजकों के अनुसार सीमित थी, फिर भी पूर्व सैनिकों और स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों की भागीदारी ने इस सभा को प्रभावी बना दिया।

राजस्थान सरकार पर निशाना

सभा में केंद्र सरकार के साथ-साथ राजस्थान की भजनलाल शर्मा सरकार भी कांग्रेस के निशाने पर रही। नेताओं ने राज्य सरकार पर बिजली, पानी और मूलभूत सुविधाओं के प्रबंधन में विफलता का आरोप लगाया। सचिन पायलट ने कहा कि उन्हें पता था कि कांग्रेस के नेता आ रहे हैं, इसलिए बिजली गुल कर दी गई। यह दुर्भावनापूर्ण रखेया है। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भी राज्य सरकार पर फिल्हाई का आरोप लगाया। नेताओं ने स्थानीय मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित किया। बाड़मेर में पानी की कमी, बिजली की अनियमित आपूर्ति, और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर कांग्रेस ने सरकार को घेरने की कोशिश की। हरीस चौधरी ने कहा कि बाड़मेर की धरती ने हमेशा देश की रक्षा की है, लेकिन आज यहां के लोग मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर और अमेरिकी हस्तक्षेप पर सवाल

जयहिंद सभा का एक प्रमुख उद्देश्य ऑपरेशन सिंदूर के बाद की परिस्थितियों पर केंद्र सरकार से जवाब मांगना था। ऑपरेशन सिंदूर भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाने के लिए चलाया गया एक सफल सैन्य अभियान था। इस अभियान ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जवाब दिया, जिसमें 26 लोग मारे गए थे, जिनमें ज्यादातर पर्यटक थे।

कांग्रेस नेताओं ने सभा में इस बात पर जोर दिया कि ऑपरेशन सिंदूर भारतीय सेना की वीरता और शौर्य का प्रतीक है, न कि किसी एक पार्टी या व्यक्ति की उपलब्धि। राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा, "मोदीजी को आदत हो गई है कि जब भी चुनाव आता है, वे सेना की वीरता के पीछे छुप जाते हैं। कभी बालाकोट, कभी ऑपरेशन सिंदूर को अपनी उपलब्धि बताकर बोट मांगते हैं, जबकि यह काम सेना ने किया है, सरकार ने नहीं।" कांग्रेस नेताओं ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस बयान का हवाला दिया, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि उनके प्रशासन ने भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर में मध्यस्थिता की थी। सचिन पायलट ने कहा, "जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने खुद युद्धविराम की घोषणा की, तो सरकार को समझे आकर बताना चाहिए कि यह सीजफायर किन शर्तों पर हुआ।" अशोक गहलोत ने 1971 के युद्ध का जिक्र करते हुए कहा, "इंदिरा गांधी की सरकार ने पाकिस्तान के दो टुकड़े किए थे, और उस समय किसी तीसरे देश को हस्तक्षेप का मौका नहीं दिया गया। आज सरकार को चाहिए कि वह देश को स्पष्ट जवाब दे।"

सेना का सम्मान और नेताजी का नारा

जयहिंद सभा में कई पूर्व सैनिकों और स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों को आमंत्रित किया गया था, जिन्हें मंच पर सम्मानित किया गया। गोविंदसिंह डोटासरा ने कहा कि जयहिंद का नारा नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दिया था। इसका मतलब है- भारत की जय, भारतीयों की जय, सेना की जय। आज हम उसी भावना से सेना को सलाम कर रहे हैं। कांग्रेस ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि उनकी यह सभा किसी राजनीतिक मकसद से नहीं, बल्कि सेना के सम्मान और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए आयोजित की गई है।

भाजपा ने इसे "खीज सभा" करार दिया

जयहिंद सभा को लेकर स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक चर्चा हुई। भाजपा ने इसे "खीज सभा" करार दिया और कांग्रेस के आरोपों को खारिज किया। राजस्थान भाजपा अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि कांग्रेस राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर गलत जानकारी फैलाकर जनता में भ्रम पैदा कर रही है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पूरे देश में गर्व का महाल है, लेकिन कांग्रेस बेवजह सवाल उठा रही है।

किस करवट बैठेगी बिहार की सियासत कठिन चुनौती में नीतीश कुमार



राधा रमण
वरिष्ठ पत्रकार

पिछले करीब 16 वर्षों से बिहार की सत्ता में छोटे भाई की भूमिका का निर्वहन कर रही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस बार येन केन प्रकारेण बिहार की सत्ता पर काबिज होने के लिए कमर कस चुकी है। बीते एक साल में शायद ही कोई हफ्ता होगा जब कोई केंद्रीय मंत्री बिहार में नहीं रहा होगा। हर हफ्ते राज्य में केंद्रीय मंत्रियों का दौरा लगा ही रहता है। इसके अलावा पहली बार राज्य सरकार के मंत्रियों की संख्या जनता दल (यूनाइटेड) के मंत्रियों की संख्या से ज्यादा है।



आर्थिक तौर पर पिछड़ा माना जाने वाला बिहार राजनीतिक रूप से काफी जागरूक प्रदेश रहा है। 90 के दशक तक बिहार की सियासत कांग्रेस समर्थन और कांग्रेस विरोध परिक्षिका थी। लेकिन 1990 की 10 मार्च को लालप्रसाद यादव के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद से अब तक बिहार की राजनीति लालू समर्थन और लालू विरोध पर केंद्रित हो गई है। बहुचर्चित चारा घोटाले में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने और जेल जाने से लेकर सजायापता होने के बावजूद लगभग 35 वर्षों से बिहार की सियासत में लालू एक बड़ा मुद्दा है। यहां तक कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी पिछले 20 वर्षों से लालू समर्थन और लालू विरोध की लहर पर सवार होकर ही सत्ता सुख भोग रहे हैं।

भले ही चुनाव आयोग ने अपील तक बिहार में विधानसभा चुनाव की घोषणा नहीं की है, लेकिन नवबंबर-दिसंबर में वहां विधानसभा के चुनाव प्रस्तावित हैं। बात राजनीतिक सरगर्मी की करें तो पिछले एक साल से सियासी दलों ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। पिछले करीब 16 वर्षों से बिहार की सत्ता में छोटे भाई की भूमिका का निर्वहन कर

रही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस बार येन केन प्रकारेण बिहार की सत्ता पर काबिज होने के लिए कमर कस चुकी है। बीते एक साल में शायद ही कोई हफ्ता होगा जब कोई केंद्रीय मंत्री बिहार में नहीं रहा होगा। हर हफ्ते राज्य में केंद्रीय मंत्रियों का दौरा लगा ही रहता है। इसके अलावा पहली बार राज्य सरकार में भाजपा के मंत्रियों की संख्या जनता दल (यूनाइटेड) के मंत्रियों की संख्या से ज्यादा है। यही नहीं, बीते एक साल में छह बार प्रधानमंत्री बिहार का दौरा कर चुके हैं। प्रधानमंत्री जब भी बिहार आते हैं हजारों करोड़ स्पष्टीय की परियोजनाओं की सौगत दे जाते हैं। हालांकि विपक्षी पार्टियां राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस प्रधानमंत्री की घोषणाओं को ढपोरशंखी बताते हुए कहते हैं कि उन्होंने साल 2015 के विधानसभा चुनाव के दौरान आरा में सवा लाख करोड़ की आर्थिक सहायता देने की बात कही थी, आज तक नहीं दिया।

बात बीते विधानसभा चुनाव की करें तो 2020 के चुनाव में 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा में राष्ट्रीय जनता दल को सबसे अधिक 75 सीटें मिली थीं। दूसरे स्थान पर भारतीय जनता पार्टी रही, भी अंदरखाने पाला बदल चुके हैं।

जिसे 74 सीटों पर विजय मिली थी। बीते 20 वर्षों में सत्ता के लिए सबसे मुफीद रहे नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) को महज 43 सीटों पर संतोष करना पड़ा। इसी तरह कांग्रेस को 19, बाम दलों में भाकपा-2, माकपा-2 और भाकपा माले को 11, असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन को 6, जीतनराम मांझी की हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा को 4, बहुजन समाज पार्टी को 1, अपने को 'मोदी का हनुमान' बतानेवाले चिराग पासवान की पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी को 1, निर्दलीय सुमित कुमार सिंह को 1 और शेष 4 सीटें अन्य क्षेत्रीय दलों को मिली थीं। लेकिन समय के साथ ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के पांच और बसपा के एक विधायक के पाला बदल लेने के कारण फिलहाल बिहार में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। फिलहाल उसके 80, राजद के 77 और जनता दल (यू) के 45 विधायक हैं। इनमें राजद के 4 विधायक तो तकनीकी रूप से ही राजद में बने हुए हैं। हकीकत में वे सरकार के साथ हो लिए हैं। इसी तरह कांग्रेस के 2 विधायक भी अंदरखाने पाला बदल चुके हैं।

सुविधा की सियासत के माहिर खिलाड़ी हैं नीतीश

नीतीश कुमार नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री बने हैं। वह वर्ष 2000 में पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। हालांकि महज सात दिनों के लिए। इतनी बार और इतने लंबे समय तक मुख्यमंत्री बनने वाले वह बिहार के पहले राजनेता हैं। वैसे तो नीतीश की राजनीति लालू विरोध की रही है, लेकिन इस दौर में दो बार 2013 और 2022 में वह राजद के समर्थन से भी मुख्यमंत्री बने हैं। इसीलिए तेजस्वी यादव उन्हें पलटू चाचा भी कहते हैं। चूंकि नीतीश के समर्थन के बिना बिहार में न तो भाजपा सत्ता की सीढ़ी तक पहुंचती है न ही राजद। इसीलिए नीतीश दोनों दलों की मजबूरी हैं। कभी वह राजद के साथ मिलकर भाजपा को ढपोरशंखी और साम्प्रदायिक पार्टी बताते हैं, तो कभी भाजपा से गलबहियां करके लालू के राज को जगलाराज बताकर लोगों से समर्थन मांग लेते हैं। एक बार तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नीतीश के डीएनए पर भी सवाल उठा चुके हैं। फिर भी नीतीश सार्वजनिक रूप से कहते फिर रहे हैं कि दो बार गलती से महागठबंधन की तरफ चला गया था। अब कहीं नहीं जाऊंगा। याद दिलाना जरूरी है कि महागठबंधन के साथ होने पर भी नीतीश दोनों बार यही कहते रहे हैं कि अब भाजपा के साथ नहीं जाएंगे और समय आने पर पाला बदल लेते हैं। सुविधा की सियासत के नीतीश माहिर खिलाड़ी हैं।

कौन कब दोस्त- कब दुश्मन, कहना मुश्किल

राजनीति में कब कौन दोस्त और कौन कब दुश्मन बन जाए, कहना कठिन है। बता देना जरूरी है कि देशभर में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के खिलाफ इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इक्लूसिव अलायंस (ईडिया) के सूत्रधार नीतीश कुमार ही हैं। तब उन्हें लगता था कि ईडिया गठबंधन उन्हें अपना संयोजक बना लेगा और अगर बाजी पलटती है तो वह आसानी से प्रधानमंत्री पद तक पहुंच सकते हैं। लेकिन इस पर ईडिया गठबंधन में आम सहमति न बनते देख नीतीश भाजपा के साथ जा खड़े हुए। तब लालू की कोशिश नीतीश को केंद्रीय राजनीति में भेजकर अपने बेटे तेजस्वी को एकछत्र बिहार का नेता बनाने की थी।

बिहार का खेल समझती है भाजपा



भाजपा भी यह बात समझती थी। इसीलिए उसने नीतीश को अपने पाले में करने में देर नहीं की। इसका लाभ भी भाजपा को हुआ। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने नीतीश की पार्टी जदयू को 16 सीटें चुनाव लड़ने को दी। इनमें से 12 पर विजय मिली। अगर यह सीटें विपक्ष को मिल जाती तो नरेंद्र मोदी चाहकर भी तीसरी बार प्रधानमंत्री नहीं बन पाते। हालांकि नीतीश की पार्टी से ज्यादा बढ़िया स्ट्राइक रेट 'मोदी के हनुमान' कहे जानेवाले चिराग की पार्टी लोक जनसक्ति पार्टी (रामविलास) का रहा। भाजपा ने उन्हें पांच सीटें दी थी, उन्होंने पांचों जीत ली। जीतनाराम मांझी की हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा (हम) को एक सीट मिली थी, जो उन्होंने जीत लिया।

इस बार दायरा बढ़ा सकती है भाजपा

बिहार की सियासत पर बारीक नजर रखनेवाले लोग बताते हैं कि नीतीश इस बार कठिन राजनीतिक चुनौती में फंस गए हैं। विधायकों की संख्या अधिक होने के कारण भाजपा इस बार स्वाभाविक तौर पर अधिक सीटों पर चुनाव लड़ना चाहेगी। दूसरे, इस चुनाव में नीतीश को भरे मन से चिराग की पार्टी के लिए भी प्रचार करना पड़ेगा। ज्ञात रहे कि 2020 के विधानसभा चुनाव में चिराग की लोजपा की वजह से ही नीतीश की जदयू को 78 से 43 सीटों पर सिमट जाना पड़ा था।

प्रशांत किशोर का बड़ा दाव



नीतीश के लिए इस बार बड़ी चुनौती जनसुराज के संस्थापक और चुनाव लड़ने-जिताने में माहिर प्रशांत किशोर बनेंगे। प्रशांत किशोर (पीके) कभी जदयू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थे। कई मौकों पर नीतीश कुमार ने यह खुलासा किया था कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के कहने पर उन्होंने प्रशांत किशोर को पार्टी का उपाध्यक्ष बनाया था। अब पीके ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी 'जनसुराज' राज्य की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। पीके अपनी सभाओं में नीतीश और तेजस्वी पर ही निशाना साधते रहे हैं। प्रशांत किशोर की जीमीनी पकड़ मजबूत बताई जा रही है। वह 2014 के चुनाव में नरेंद्र मोदी के चुनावी रणनीतिकार रह चुके हैं। इसके अगले साल बिहार विधानसभा के चुनाव में पीके नीतीश कुमार के भी रणनीतिकार रह चुके हैं। इस बीच प्रशांत ने अपनी पार्टी 'जनसुराज' में पूर्व केंद्रीय मंत्री और जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके रामचन्द्र प्रसाद सिंह (आरसीपी सिंह) की पार्टी 'आप सबकी आवाज़' का विलय करकर बड़ा दाव चल दिया है। रामचन्द्र प्रसाद सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे हैं। वह नीतीश के गृह जिले नालंदा के ही मूल निवासी हैं और जाति से कुर्मी हैं। वे राजनीति में आने से पहले कई वर्षों तक बिहार के मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव रहे हैं। उन्हें नीतीश ही राजनीति में लेकर आये थे। कुछ वर्षों तक वे परोक्ष रूप से जदयू के फंड मैनेजर भी थे। बाद में खुश होकर नीतीश ने उन्हें राज्यसभा भेज दिया और पार्टी ही सौंप दी। मोदी -2 सरकार में रामचन्द्र प्रसाद सिंह इस्पात मंत्री थे। बाद में जदयू से अलग होने पर भाजपा में चले गए। अब चुनाव से ठीक पहले रामचन्द्र प्रसाद सिंह के भाजपा छोड़कर सक्रिय होने से जाहिर है नुकसान नीतीश का ही होगा।

प्रशांत व आरसीपी के साथ आने से बढ़ी बेचैनी



बिहार की राजनीति के जानकार पहले से ही 'जनसुराज' को भाजपा की बी टीम बताते रहे हैं। अब प्रशांत और आरसीपी दोनों के साथ आने से सबसे ज्यादा बेचैनी जदयू और उसके हितचिंतकों को ही है। तभी तो जदयू के मुख्य प्रवक्ता और वर्षों से नीतीश के साथी रहे नीरज कुमार पीक और आरसीपी दोनों को विषेला सांप बता रहे हैं। यही नहीं केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी भी दोनों को विषणु और कीटाणु कह रहे हैं। फिलहाल कहना जल्दीबाजी होगी कि पीक और आरसीपी की सक्रियता और हाथ मिलाने से फायदा भाजपा को होगा या राजद को। लेकिन इतना तय है कि नुकसान नीतीश और जदयू का ही होगा। इसके अलावा भारतीय पुलिस सेवा से इस्तीफा देकर सियासत में हाथ आजमाने उत्तरे शिवदीप लांडे भी 'हिंद सेना' बनाकर राज्य की सभी 243 सीटों पर उम्मीदवार उतारने पर आमादा हैं। लांडे की छवि ईमानदार प्रशासक की रही है। हालांकि वह महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। बिहार की सियासत में क्या गुल खिलाते हैं, यह समय बताएगा।

कांग्रेस व कन्हैया की सक्रियता से राजद के छूटे पसीने



दिक्कत महागठबंधन में भी कम नहीं है। कांग्रेस और कन्हैया कुमार के सक्रिय होने से राजद को पसीने छूट रहे हैं। उधर, निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव दुबारा से कांग्रेस में शामिल हो गए हैं। यह लालू की अनिच्छा के बावजूद हो रहा है। राहुल गांधी भी अपने पूरे लावलश्कर के साथ गाहेबगाहे बिहार धूम रहे हैं। वह पिछले पांच माह में पांच बार बिहार का दौरा कर चुके हैं। इस बीच कांग्रेस ने बिहार का प्रभारी और प्रदेश अध्यक्ष बदल दिया है। वह पार्टी में नई जान फूंकने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं।

नीतीश पर हावी है उम्र

फिलवक्ता बिहार की क्रान्ति नहीं है। अपराधी खुलेआम क्रान्ति को अंगूठा दिखाते फिर रहे हैं। हत्या और अपहरण की वारदातें बढ़ गई हैं। विपक्ष इसे जमकर हवा दे रहा है और नीतीश निरीह शासक की मानिंद चुप्पी ओढ़े हैं। उन पर उम्र हावी हो गई है। वे कब क्या बोल जाएं और कब किसके पैर छू लें, कहना कठिन है। ऐसे में लालू के जंगलराज का सबाल अबकी बार कितना हावी होता है, समय बताएगा।



फिलहाल, बिहार में राजनीतिक गतिविधियां जोरों पर हैं। एनडीए के कुनबे में भाजपा, जदयू के अलावा जीतनराम मांझी की हिन्दस्तान अवाम मोर्चा, चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) और उपेन्द्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक समता पार्टी शामिल हैं। दूसरी तरफ महागठबंधन में राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, भाकपा (मार्क्सवादी लेनिनवादी), मुकेश सहनी की विकासशील इंसान पार्टी, तृणमूल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी शामिल हैं। इसके अलावा पूर्व केंद्रीय मंत्री और चिराग के चाचा पशुपति पारस की राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी भी महागठबंधन के दरवाजे पर दस्तक दे रही है। ऐसे में इतना तो तय है कि बिहार में इस बार आमने-सामने की लड़ाई नहीं होने वाली। ऐसे हालात में सियासत का ऊंट किस करवट बैठेगा, फिलहाल कहना जल्दबाजी होगी।

भारत में शिक्षा: गुरुकुल से भव्यता तक कर्मी आंतरिक विकास और जीवन की दिशा की शिक्षा

‘ शिक्षा मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है।
- स्वामी विवेकानन्द

‘ सच्चे शिक्षण का पहला सिद्धांत यह है कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता... मन को अपनी स्वयं की वृद्धि में परामर्श करना होता है। -श्री अरविंदो



दी.एस. यादव, डीपीसीएस स्कूल, जोधपुर

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य संकट को देखते हुए हमें माता-पिता की भूमिका को भी समझना होगा। कई बार माता-पिता अपने अधूरे सपनों को बच्चों पर थोप देते हैं। उन्हें ऐसी पढ़ाई और करियर में धकेलते हैं, जो उनकी रुचि के विरुद्ध होते हैं। यह दबाव बच्चों की आवाज दबा देता है। माता-पिता को शिक्षा के सहयोगी के रूप में देखना चाहिए, न कि शासक के रूप में। उनकी समझ और सहानुभूति बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ा सकती है। जब बच्चे कहें, “मैं जीतिहास पढ़ना चाहता हूं,” या “मुझे कला पसंद है,” तो उन इच्छाओं को खुले दिल से स्वीकारना चाहिए।



यह केवल दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि शिक्षा की एक मौन जागृति है। एक ऐसी चेतना जो हमें याद दिलाती है कि शिक्षा कभी केवल परीक्षा की तैयारी या आंकड़ों का खेल नहीं थी, बल्कि आत्मा की खोज, आंतरिक विकास और जीवन की दिशा थी। चार दशकों से इस क्षेत्र में काम करते हुए मैंने शिक्षा की यात्रा को देखा है - उस गुरुकुल की जीवंतता से लेकर आज के डिजिटल सुग की प्रतिस्पर्धा तक।

जीवन का हिस्सा था गुरुकुल मॉडल

भारत का प्राचीन गुरुकुल मॉडल केवल एक संस्थान नहीं था, वह जीवन का हिस्सा था। वहां शिक्षा पढ़ाई तक सीमित न होकर जीवन के हर पहलू में गहरी छाप छोड़ती थी। छात्र गुरु के सान्निध्य में रहते थे, जो न केवल ज्ञान के वेद, गणित, संगीत, खगोल विज्ञान, चिकित्सा जैसे विषय सिखाते, बल्कि विवेक, श्रद्धा, निस्वार्थ सेवा और चरित्र निर्माण भी करते। गुरु केवल शिक्षक नहीं, मार्गदर्शक, दाशनिक और नैतिक प्रेरणा का स्रोत थे।

नालंदा विश्वविद्यालय, जो विश्व की प्राचीनतम शिक्षण संस्थाओं में से एक था, भारत के ज्ञान-संस्कृति की जीवंत मिसाल थी। पूरे एशिया से विद्वान यहां ज्ञान की गंगा में डूबने आते थे। इस विश्वविद्यालय में बहु-विषयक अध्ययन और वाद-विवाद की परम्परा थी, जिसने भारत को वैशिक ज्ञान का केंद्र बनाया।

भारत की शिक्षा परम्परा में महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान था। गर्णी, मैत्रेयी जैसे विद्युती दार्शनिकों ने ज्ञान के क्षेत्र में पुरुषों के साथ बराबरी से भाग लिया। यह दिखाता है कि शिक्षा यहां किसी विशेष वर्ग या लिंग का अधिकार नहीं, बल्कि सार्वभौमिक सम्पदा थी।

मैकाले ने बदल डाली पूरी तस्वीर

ब्रिटिश काल में शिक्षा ने एक भटकाव लिया। 2 फरवरी 1835 को थॉमस बिंगटन मैकाले ने भारतीय शिक्षा के स्वरूप को पूरी तरह बदलने वाली नीति पेश की। अंग्रेजी भाषा और परिच्चयी ज्ञान को प्राथमिकता दी गई, जिससे संस्कृत, फारसी और स्वदेशी ज्ञान की उपेक्षा हुई। यह केवल शिक्षा में बदलाव नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का क्षरण था। इसके परिणाम आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में झलकते हैं।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार माना गया। साक्षरता बढ़ी, स्कूल और विश्वविद्यालय बढ़े। परंतु, शिक्षा का केन्द्रित उद्देश्य बदल गया। वह समग्र विकास से रोजगारोन्मुखता की ओर बढ़ गया। कक्षाएं क्षमता से अधिक भौड़भाड़ वाली हो गई, और गुरु-शिष्य संबंध औपचारिकता बनकर रह गए। आज की शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल अंक और प्रमाण-पत्र बनकर रह गया है। गुणवत्ता की जगह मात्रात्मक विस्तार ने ले ली। बच्चे केवल परीक्षा परिणामों के अंकड़े बन गए हैं।

आंकड़ों का खेल बनी आधुनिक शिक्षा



- आज की शिक्षा प्रणाली एक प्रतियोगिता का मैदान बन गई है। बोर्ड के परिणाम पदकों की तरह प्रदर्शित होते हैं, टॉपस की सीखने का खेल बघाई जाती है, और कोंचिंग उद्योग फल-फूल रहा है। सीखने का आत्म-सात होना कहीं खो गया है। छात्रों को आश्चर्य, सवाल करने और कल्पना करने के बजाय, निर्धारित पैटर्न के उत्तर लिखने पर मजबूर किया जा रहा है। शिक्षण नहीं, परीक्षा पास करना प्राथमिकता बन गई है। छात्र परीक्षा की चिंता से ग्रस्त, सीखने की प्रक्रिया से कट गए हैं।
- सीबीएसई ने दो बोर्ड परीक्षा आयोजित करने का विकल्प दिया है, जिसका उद्देश्य तनाव कम करना है। यह प्रयास सराहनीय है, लेकिन परीक्षा की अधिकता से छात्रों पर और बोझ पढ़ सकता है। अधिकांश समय पढ़ाई, परीक्षा तैयारी और पुनः परीक्षा में ही व्यतीत होता है, जिससे वास्तविक सोच-विचार और समझ के लिए जगह नहीं बचती।

बच्चों पर उम्मीदों व प्रतिस्पर्धा का बोझ

- आज के बच्चे केवल किताबें नहीं, बल्कि माता-पिता की उम्मीदें, समाज के दबाव, और साथियों के प्रतिद्वंद्विता का बोझ भी उठाते हैं। उनकी सहज हँसी चिंता में बदल चुकी है। उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा दब चुकी है। कोंचिंग क्लास और करियर की डोर उन्हें उस मार्ग से दूर ले जाती है, जिसे वे स्वयं चुनना चाहते हैं।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, “सीखने के लिए सोचने और कल्पना करने की स्वतंत्रता आवश्यक है।” पर आज, अनेक बच्चे इस स्वतंत्रता से बंचित हैं। उनके लिए शिक्षा एक दबाव, दमधोटू वातावरण बन चुकी है। जब बच्चों को विषय और करियर चुनने की स्वतंत्रता मिलती है, तभी सीखने का अनुभव खुशी और उत्साह से भर जाता है। उन्हें डर के बिना अपने सपनों और चिंताओं को व्यक्त करने की आजादी होनी चाहिए।



माता-पिता के अधूरे सपनों में दबा बचपन

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य संकट को देखते हुए हमें माता-पिता की भूमिका को भी समझना होगा। कई बार माता-पिता अपने अधूरे सपनों को बच्चों पर थोप देते हैं। उन्हें ऐसी पढ़ाई और करियर में धकेलते हैं, जो उनकी रुचि के विरुद्ध होते हैं। यह दबाव बच्चों की आवाज दबा देता है। माता-पिता को शिक्षा के सहयोगी के रूप में देखना चाहिए, न कि शासक के रूप में। उनकी समझ और सहानुभूति बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ा सकती है।

जब बच्चे कहें, “मैं इतिहास पढ़ना चाहता हूं,” या “मुझे कला पसंद है,” तो उन इच्छाओं को खुले दिल से स्वीकारना चाहिए।



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक नई उम्मीद

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा के पुनर्जागरण का संदेश लेकर आई है। यह नीति छात्र-केंद्रित शिक्षा की ओर बढ़ती है, जहां अंकों से नहीं, बल्कि संभावनाओं से मूल्यांकन होता है।
- यह नीति अंतर-विषयी अध्ययन को बढ़ावा देती है, जहां ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह न केवल कठोर विषय विभाजन को समाप्त करती है, बल्कि कक्षा को एक ऐसा स्थान बनाती है जहां जिज्ञासा, सहयोग और रचनात्मकता फलती-फूलती है। इस नीति की सफलता शिक्षकों, समुदाय और शासन की भागीदारी पर निर्भर है।

बच्चे से महानता तक: शिक्षा का असली लक्ष्य

- आज भी सवाल बना रहता है— वह बालक कहां है? वह बच्चा जो सीखने की जिज्ञासा और आत्मविश्वास से भरा था, रैंकिंग की डौड़ में खो गया है। अभिभावक अपनी महत्वाकांक्षा से बच्चों का भविष्य निर्धारित करते हैं, जबकि अंक केवल एक औंजार हैं, न कि अंतिम मापदंड।
- शिक्षक वह प्रकाश स्तंभ हैं जो ज्ञान के द्वार खोलते हैं। पर आज शिक्षकों की स्थिति कमज़ोर हुई है, उनका समान घटा है। शिक्षा के मंदिर में शिक्षक की उपस्थिति के बिना केवल कागजी इमारतें हैं। हमें शिक्षकों को पुनः सम्मानित करना होगा।

आइए बदलाव की पहल करें

आधुनिक समय में गुरुकुल प्रणाली का पुनर्गठन एक जरूरी आवश्यकता है, जिसमें सादगी, अखंडता, खोज और परस्पर जुड़ाव जैसे जीवन मूल्यों को शामिल किया जा सके। हमें केवल टॉप्स तैयार करने के बजाय विचारकों को तैयार करने पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रदर्शन को मापना नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्रों की उपस्थिति और आत्म-अन्वेषण की यात्रा को प्रोत्साहित करना चाहिए।

अंत में जे. कृष्णमूर्ति के विचारों को साझा करना चाहिए, ‘हमें यह समझने की आवश्यकता है कि शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान की प्राप्ति नहीं है, बल्कि यह अंतरिक प्रकृति की समझ और आत्म-अन्वेषण की यात्रा भी है। जब हम दोनों दिशाओं में सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। बाहर की ओर दुनिया में और भीतर की ओर स्वयं में— तो हम न केवल बच्चों को शिक्षित करते हैं, बल्कि उन्हें जागृत भी करते हैं।’

आइए हम शिक्षा को एक नए दृष्टिकोण से देखें और छात्रों को आत्म-अन्वेषण की यात्रा पर ले जाएं, जहां वे न केवल ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि बुद्धि और समझ भी विकसित करें।

विराट कोहली व रोहित शर्मा: तकनीक, जज्बा और जुनून के पर्याय टेस्ट क्रिकेट के स्वर्णिम युग का पटाखेप

रोहित शर्मा व विराट कोहली की शैली में जमीन-आसमान का फर्क था। कोहली जहां जुनून से भरे, उर्जा से लबरेज और लगातार बैकफुट पर गेंदबाजों को दबाव में लाने वाले खिलाड़ी रहे, वहीं रोहित संयम, टाइमिंग और लय से खेल को नियंत्रित करने वाले बल्लेबाज़ रहे। पर दोनों में एक बात समान रही— टीम को आगे रखने की भावना। ये वो खिलाड़ी थे, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत रनों से अधिक टीम की जीत को महत्व दिया।



राकेश गांधी
वरिष्ठ पत्रकार

भा रातीय क्रिकेट के दो ध्रुव, दो महारथी—विराट कोहली और रोहित शर्मा ने हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेकर उस स्वर्णिम युग का पटाखेप कर दिया, जिसमें भारत ने विश्व पटल पर न सिर्फ़ क्रिकेट की शैली बदली, बल्कि अपनी मानसिकता और आत्मविश्वास से पूरी दुनिया को चकित किया। सुगील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और वी.वी.एस. लक्ष्मण जैसे दमदार खिलाड़ियों के बाद अब एक और पीढ़ी को 'अलविदा' कहने का वक्त आ गया है।

बना रहेगा कलात्मक बल्लेबाजी का महत्व

भारतीय क्रिकेट में टेस्ट क्रिकेट की बुनियाद बहुत गहरी रही है। विराट और रोहित ने इस बुनियाद को नए जमाने की उर्जा, आक्रमकता और तकनीकी परिपक्वता से सशक्त किया। यद्यपि दोनों खिलाड़ियों ने वनडे और टी20 में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं, लेकिन टेस्ट क्रिकेट में उनकी उपरिस्थिति ने यह सिद्ध किया कि तकनीक, मानसिक दृढ़ता और कलात्मक बल्लेबाजी का महत्व कभी खत्म नहीं होता।



आंकड़ों की दृष्टि से

विराट कोहली ने अपने टेस्ट करियर में 113 टेस्ट मैच खेले, जिनमें उन्होंने 29 शतक और 29 अर्धशतक सहित 8848 रन बनाए। उनका औसत 49.15 का रहा, जो किसी भी मध्यक्रम बल्लेबाज के लिए उल्लेखनीय है। लेकिन विराट की खासियत केवल रन बनाना नहीं था, बल्कि मुश्किल हालात में टीम को नेतृत्व देना, जीत का मार्ग प्रशस्त करना और विपक्षी टीम को मानसिक रूप से चुनौती देना भी था।

'ड्रा' की बजाय 'जीत' की नीति

'आक्रमक खेल' के जरिए कोहली ने टेस्ट क्रिकेट को एक नई पहचान दी। उन्होंने टीम को 'ड्रॉ' के लिए खेलने की बजाय 'जीतने' के लिए तैयार किया। विदेशों में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका में सीरीज़ जीतने की भारत की जो हिम्मत दिखी, उसमें विराट का कपानी शैली महत्वपूर्ण रही। उनके नेतृत्व में भारत ने 68 टेस्ट में से 40 जीते, जो किसी भारतीय कप्तान द्वारा सर्वाधिक जीत है।

साहस व परिपक्वता की मिसाल

विराट ने अपने क्रिकेट जीवन में कई उत्तरांचलाव देखे। वर्ष 2014 में इंग्लैंड दौरे पर विराट के फॉर्म पर सवाल उठे, लेकिन उसी वर्ष ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने चार टेस्ट में चार शतक जड़कर आलोचकों को जवाब दे दिया। 2018 में इंग्लैंड में 593 रन बनाना उनकी परिपक्वता की मिसाल था। कोहली की बैटिंग तकनीक के दो रूप दिखते हैं—शुरुआत में हाथ खोलते विराट, और बाद के वर्षों में धैर्य और चयनित आक्रमकता के साथ खेलने वाले विराट। उन्होंने अपनी शैली को समय के साथ ढाला और तकनीक में निरंतर सुधार किया।

रोहित शर्मा: संघर्षपूर्ण शुरुआत के बाद धमाकेदार पारियां

रोहित शर्मा ने वर्ष 2013 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट डेब्यू में दो शतक जड़े, लेकिन उसके बाद उनका टेस्ट करियर संघर्षपूर्ण रहा। मध्यम क्रम में खेलते हुए वे कई बार बाहर हुए, लेकिन 2019 में जब उन्हें टेस्ट ओपनर बनाया गया, तब जाकर असली यानि धमाकेदार रोहित उभर कर सामने आए। रोहित तनाव रहित खेल पसंद करते हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे टेस्ट खेल रहे हैं या एक दिवसीय क्रिकेट। वे सभी में एक ही तरह का अपना स्वाभाविक खेल खेलना पसंद करते हैं।

टाइमिंग व संयम सबसे बड़ी ताकत

रोहित ने 56 टेस्ट में 4137 रन बनाए, जिनमें 12 शतक और 16 अर्धशतक शामिल हैं। उनका औसत 45.22 रहा— जो कि एक ओपनर के तौर पर अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। विशेषकर उपमहाद्वीप के बाहर। टेस्ट क्रिकेट में रोहित की सबसे बड़ी ताकत यही— उनकी टाइमिंग और संयम। उन्होंने स्पिन के खिलाफ अद्वितीय महारत दिखाई, और स्पिंिंग पिचों पर अपने फुटवर्क में उल्लेखनीय सुधार किया।

■ वर्ष 2021 में इंग्लैंड दौरे पर लॉडर्स में 83 और ओवल में 127 रन की पारी उनकी परिपक्व बल्लेबाजी का प्रतीक है। वह वो श्रृंखला थी, जिसने साबित किया कि रोहित अब केवल लिमिटेड ओवर स्पेशलिस्ट नहीं, बल्कि एक भरोसेमंद टेस्ट ओपनर भी है।



कोहली और रोहित: टीम की जीत सर्वोपरि



रोहित शर्मा व विराट कोहली की शैली में जमीन-आसमान का फर्क था। कोहली जहां जुनून से भरे, उर्जा से लबरेज और लगातार बैकफुट पर गेंदबाजों को दबाव में लाने वाले खिलाड़ी रहे, वहीं रोहित संयम, टाइमिंग और लय से खेल को नियंत्रित करने वाले बल्लेबाज रहे। पर दोनों में एक बात समान रही— टीम को आगे रखने की भावना। ये वो खिलाड़ी थे, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत रनों से अधिक टीम की जीत को महत्व दिया।

भारतीय क्रिकेट पर असर

‘ड्रॉ’ की बजाए ‘जीत’ की सोच की ओर अग्रसर... इन दोनों ने भारतीय क्रिकेट को पुरानी ‘टेस्ट ड्रॉ’ कराने की सोच से निकालकर ‘टेस्ट जीतने’ वाली सोच की ओर अग्रसर किया। चाहे वह ऑटेलिया में ऐतिहासिक श्रृंखला जीत हो, या इंग्लैंड में चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में जूबाना- रोहित और विराट दोनों ही इसका प्रमुख चेहरा रहे। आने वाली पीढ़ी के लिए मिसाल... श्रेयस अय्यर, शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ियों ने इन्हीं की छाया में क्रिकेट सीखा है। विराट और रोहित का फोकस केवल रन बनाना नहीं था, बल्कि ड्रेसिंग रूम में अनुशासन, फिटनेस और पेशेवर संस्कृति को बढ़ावा देना था।

क्या टेस्ट क्रिकेट को झटका लगेगा?... यह कहना जल्दबाजी होगी कि रोहित और विराट की विदाई से टेस्ट क्रिकेट कमज़ोर होगा। सुरील गावस्कर, दिलीप वैगसरकर, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, वीवीएस लक्ष्मण, सौरव गांगुली की विदाई पर भी कुछ ऐसा ही लगा था, लेकिन फिर विराट, रोहित, धोनी, जडेजा जैसे खिलाड़ियों ने भारत की ताकत को बनाए रखा। हां, यह निश्चित है कि उनके जैसा अनुभव, निरंतरता और प्रभाव जल्दी नहीं मिलता। अब जिम्मेदारी युवा खिलाड़ियों और कोचिंग स्टाफ पर है कि वे इस विरासत को संभालें और आगे बढ़ाएं।

एक युग का समापन, नए युग का आगाज

विराट कोहली और रोहित शर्मा ने टेस्ट क्रिकेट को न सिर्फ जीवित रखा, बल्कि उसे एक नई चेतना और लोकप्रियता भी दी। आज जब वे इस मंच से विदा ले रहे हैं, तो उनके आंकड़े, रिकॉर्ड्स और शॉट्स तो दर्ज हैं, पर जो चीज़ सबसे ज़्यादा याद रहेगी, वह है उनकी भावना — भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट को इस विरासत की रक्षा और विकास की जिम्मेदारी लेनी होगी। आने वाले समय में जब कोई युवा खिलाड़ी पहली बार टेस्ट कैप पहनेगा, तो उसे यह मालूम होना चाहिए कि वह जिनके नक्शा-ए-कदम पर चल रहा है, वे विराट और रोहित जैसे महारथी रहे हैं— जिन्होंने ‘टेस्ट’ को गर्व से जिया और भारत को जीतना सिखाया।

रचना की बजाय आत्म-प्रचार पर जोर



दिनेश सिंदल कवि, लेखक

आज का रचनाकार रचना पर कम व उसके प्रचार-प्रसार व आत्म- प्रचार पर ज्यादा श्रम करता है। वह कोशिश करता है कि उसकी किताबें छपे, उनके विमोचन के भव्य कार्यक्रम हो, उसे मालाओं, शॉलों से लाद दिया जाए। जगह- जगह उसे पुरस्कार, सम्मान मिले। अखबारों में उसकी फोटो छपे। यह सब पाने के लिए कुछ पुरस्कार- समारोह तो वह स्वयं आयोजित करता है। अपने किसी मित्र को अपने शहर में बुला कर सम्मानित करता है। बदले में मित्र उसे अपने शहर में बुला कर सम्मानित करता है।

दि ल्ली में एक बार विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने अभिनंदन समारोह के अवसर पर कुछ इस तरह के भाव व्यक्त किए थे- मेरे देश के भाई मेरा इसलिए आदर नहीं करते हैं कि मैं सचमुच कवि हूं। वे तो केवल मुझे इसलिए कवि मानते हैं कि मुझे कविता पर नोबेल पुरस्कार मिल चुका है और विदेशों में मेरा आदर-सत्कार होता है।

सचमुच अधिकांश लोग व्यक्ति के वास्तविक गुणों को नहीं देख पाते। वे उसकी बाही प्रतिष्ठा, उसके आत्म-विज्ञान को आदर देते हैं।

अतः आज का रचनाकार रचना पर कम व उसके प्रचार-प्रसार व आत्म- प्रचार पर ज्यादा श्रम करता है। वह कोशिश करता है कि उसकी किताबें छपे, उनके विमोचन के भव्य कार्यक्रम हो, उसे मालाओं, शॉलों से लाद दिया जाए। जगह- जगह उसे पुरस्कार, सम्मान मिले। अखबारों में उसकी फोटो छपे।

यह सब पाने के लिए कुछ पुरस्कार- समारोह तो वह स्वयं आयोजित करता है। अपने किसी मित्र को अपने शहर में बुला कर सम्मानित करता है। बदले में मित्र उसे अपने शहर में बुला कर सम्मानित करता है। इस तरह समानों- पुरस्कारों की एक लंबी फेरहरिस्त तैयार होती है। फिर वह इसी फेरहरिस्त को लेकर सरकारी प्रतिष्ठानों में घूमता है। अकादमियों के चक्कर लगाता है और अनुकूल सरकार आने पर वह सरकारी पुरस्कार भी पा लेता है।

एक गार्या है- एक बार ट्रेन में दो व्यक्ति यात्रा कर रहे थे। परिचय करने के लिए एक ने दूसरे से पूछा- आप क्या करते हैं? दूसरे ने जवाब दिया- कवि हूं। सुनते ही पहला बोला कौन सी पार्टी के?

बालकवि बैरागी कहा करते थे कि साहित्य मेरे सर का ताज है। राजनीति को मैं अपने पांव की जूती समझता हूं। पर कभी- कभी सर के ताज की रक्षा के लिए जूती को हाथ में लेना पड़ता है। हाँ, इतना तक तो ठीक है, किंतु ये क्या की जूती को ही सर पर उठा कर घूमते रहें।

इसीलिए आज कविता ने अपना श्रोता खो दिया, अपना पाठक खो दिया। कवि ने अपनी गरिमा खो दी। उसका सामाजिक हस्तक्षेप खत्म- स्पा हो गया।

विंस्टन चर्चिल ने कहा था की महानता की कीमत जिम्मेदारी है। किसी समाज की दुर्दशा चौर उचकों से नहीं, बुद्धिजीवियों के निकायेन से होती है।

कांटे पर लगे आटे की तरह है सरकारी पुरस्कार

यहां यह भी कहना चाहूँगा की सरकारी पुरस्कार कांटे पर लगे आटे की तरह होते हैं। मछुआरे का उद्देश्य मछली को आटा खिलाना नहीं होता, उसे कांटे में फंसाना होता है।

इसीलिए आज की अधिकांश कविता, कविता न रह कर पद पुरस्कार पाने की एक कागजी कार्यवाही बन कर रह गई है।

अपने ही विद्यार्थियों, अपने ही दल (गुट कहुं तो ज्यादा अच्छा रहेगा) के लोगों द्वारा अपने पद लिखवाना। फिर उसे छपवाने के लिए सम्पादकों को खुश करना। पुरस्कार के लिए गुटबाजी करना। अकादमी पदाधिकारियों की, अफसरों की जी हजूरी करना। सरकारी दफतरों की दौड़-धूप। न जाने क्या- क्या करना पड़ता है आज के रचनाकार को।

स्वयं के खेंचे से विदेश यात्राएं करना। उसके प्रचार-प्रसार के लिए मित्रों द्वारा अपने ही पैसों से अपने सम्मान में समारोह आयोजित करवाना। अपनी रचनाओं का अन्य भारतीय व विदेशी भाषों में पैसे देकर अनुवाद करवाना। अपने पैसों से उसे छपवाना। आत्म प्रचार के लिए ऐसे ही कारों में रत रहता है आज का कवि।

ऐसे में आप लेखकीय स्वाभिमान या सेल्फ रेस्पैक्ट की बात तो सोच ही नहीं सकते।

सम्मान, अंतकार, तालियां, वाह-वाह, लिफाफे, ये सभी अच्छा हैं, ठीक है। पर हाँ! ये तब तक ठीक हैं जब तक कि आप इसके द्वारा मानवता को न भूल जाओ। एक रचनाकार के दायित्व को न भूल जाओ। इन सब का आनंद लो, मगर इनसे जुड़ो मत। इन्हें पा लो, मगर इन पर अपनी पहचान को मत टिकाओ। इन्हें चाहो, मगर उनकी कामना मत करो। यह सब बनावटी शक्ति के विभिन्न रूप है। जो आपके अहंकार को बड़ा ही करेंगे।

अफसर की बजाए लेखक होना बेहतर

शरद जोशी ने एक जगह कहा था, आदमी के पास अगर दो विकल्प हो कि वह या तो बड़ा अफसर बन जाए और खूब मजे करें या फिर छोटा मोटा लेखक बन कर अपने मन की बात कहने की आजादी अपने पास रखें। तो भाई, बड़े अफसर की तुलना में छोटा लेखक होना ज्यादा मायने रखता है। उन्होंने कहा, लेखक के पक्ष में एक और बात जाती है कि उसके नाम के आगे कभी स्वर्णीय नहीं लगता।

आज की हमारी समीक्षा भी रचना का मूल्यांकन नहीं करती, वह रचनाकार का मूल्यांकन करती है। आज का श्रोता व पाठक भी रचना को नहीं सुनता- पढ़ता। वह रचनाकार को सुन/पढ़ रहा होता है। यही कारण है कि हम किसी रचनाकार को उसके पद, उसके पुरस्कारों की लंबी फेरहरिस्त के साथ प्रस्तुत करते हैं। ताकि श्रोता उसे बड़ा लेखक समझ कर सुने।

यहां मुझे यह कहने में कठिन संकोच नहीं हो रहा कि इस दौर के अधिकांश कवि, कविता के नाम पर या तो किसी राजनीतिक पार्टी का घोषणा-पत्र लिख रहे हैं या पद, प्रतिष्ठा, पुरस्कार पाने के लिए कागजी कार्यवाही कर रहे हैं।

मैं देख रहा इस तरह दुनिया के हाल को जैसे मरीज देखता है अस्पताल को

ये रहा हुआ कि गुम वो अंधेरों में हुए हैं रखना था जिन्हें थाम के जलती मशाल को

आज इन्हाँ ही किसी नए विषय के साथ।
फिर कभी किसी नए विषय के साथ।

मधुबाला के बाद सबसे ज्यादा खूबसूरत हीरोइन मानी जाती है डिम्पल कपाड़िया

पहली ही फिल्म से बड़े पर्दे पर राज

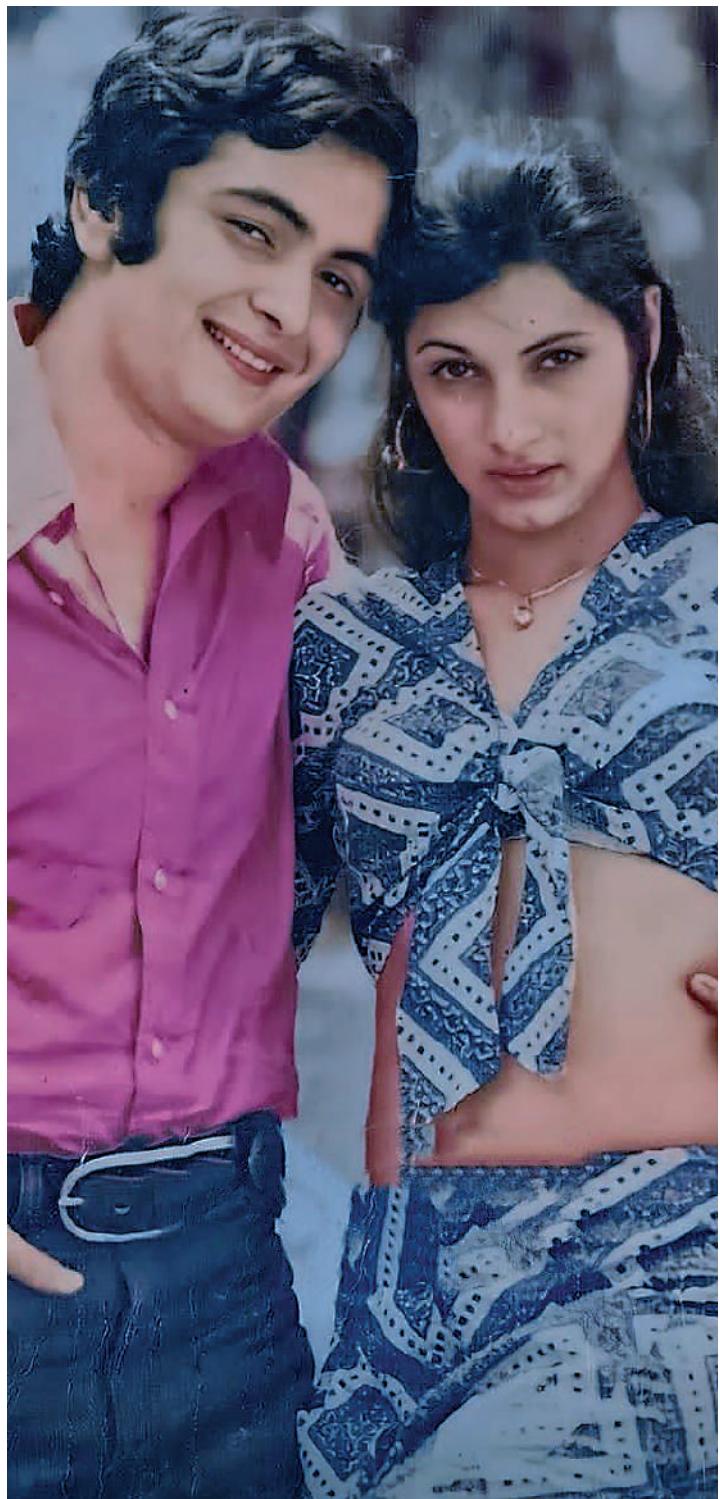


सुधांशु थाकुर
लेखक, समीक्षक

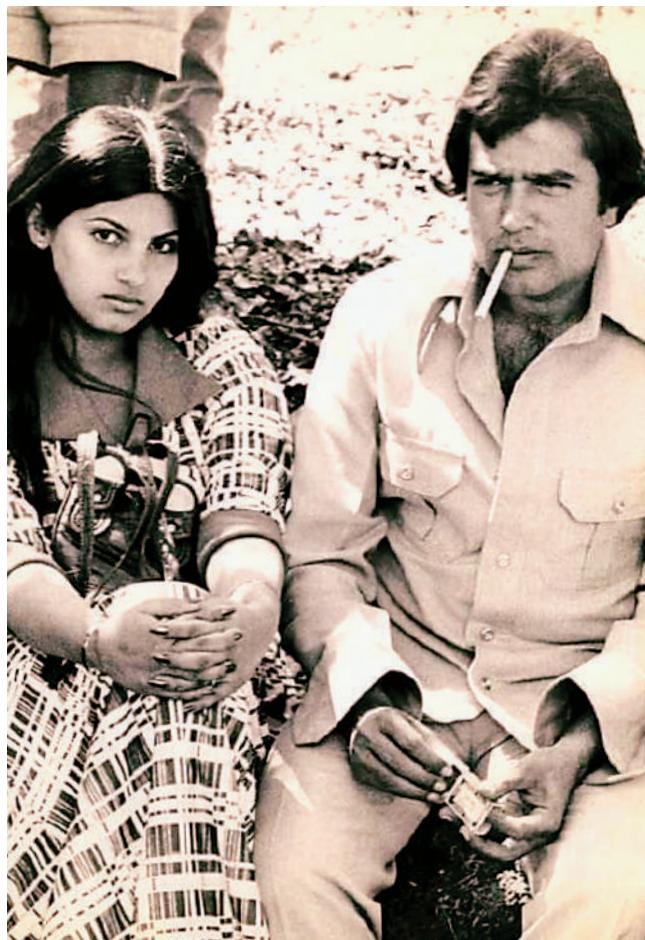
‘बॉबी’ फिल्म अभी रिलीज भी नहीं हुई थी कि डिम्पल की खूबसूरती पर तब के सुपरस्टार राजेश खन्ना फिदा हो गए। डिम्पल के सौंदर्य का उन पर ऐसा जादू चला कि उन्होंने शादी का प्रस्ताव रखा। राजेश डिम्पल से लगभग दोगुनी उम्र के थे, पर डिम्पल ने इस बेमेल विवाह के परिणाम पर सोचे विचारे बिना ही शादी के लिए हां कर दी। डिम्पल सुपरस्टार राजेश खन्ना की फैन थी। ‘बॉबी’ के रिलीज होने के पहले ही डिम्पल राजेश खन्ना के आशीर्वाद की रानी बन चकी थी। ‘बॉबी’ जबरदस्त हिट तो हुई ही, हिंदी सिनेमा की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म भी बन गई। ऋषि कपूर और डिम्पल कपाड़िया रातोंरात चमकते सितारे बन गए, लेकिन डिम्पल के करियर पर राजेश खन्ना ने ब्रेक लगा दिया और फिल्मों में काम करने से मना कर दिया। इस तरह डिम्पल की प्रतिभा घर की चारदीवारी में कैद हो गई। यहाँ से इन दोनों के संबंधों में दरार पड़ी शुरू हो गई, जो समय के साथ-साथ और चौड़ी होती चली गई। डिम्पल ने एक दशक के लिए फिल्मों को अलविदा कह दिया था। इसी दौरान उनकी दोनों बेटियों ट्रिवंकल खन्ना और रिंकी खन्ना का जन्म हुआ। डिम्पल और राजेश खन्ना की शादी भी ज्यादा दिन नहीं चली और साल 1982 में डिम्पल राजेश खन्ना से अलग हो गई, लेकिन दोनों ने तलाक नहीं लिया था।

सा ल 1973. निर्देशक राजकपूर

की फिल्म ‘बॉबी’ रिलीज हुई। इस फिल्म में उनके बेटे ऋषि कपूर के साथ एक नई लड़की को लान्च किया। इस लड़की का नाम था डिम्पल कपाड़िया। बेहद खूबसूरत डिम्पल की अदायी से दर्शक सम्मोहित हो गए और इस फिल्म से वह रातों-रात सुपरस्टार बन गई थी। अपनी पहली ही फिल्म में लाल रंग की बिकनी पहनकर डिम्पल ने सबको चौंका दिया था। पहली ही फिल्म के लिए उनको बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। लेकिन इस दौरान एक महत्वपूर्ण बात और हुई। वह यह कि डिम्पल की शादी हो गई। सही सुना आपने.. शादी! हुआ यूं कि ‘बॉबी’ फिल्म अभी रिलीज भी नहीं हुई थी कि डिम्पल की खूबसूरती पर तब के सुपरस्टार राजेश खन्ना फिदा हो गए। डिम्पल के सौंदर्य का उन पर ऐसा जादू चला कि उन्होंने शादी का प्रस्ताव रखा। राजेश डिम्पल से लगभग दोगुनी उम्र के थे, पर डिम्पल ने इस बेमेल विवाह के परिणाम पर सोचे विचारे बिना ही शादी के लिए हां कर दी। डिम्पल सुपरस्टार राजेश खन्ना की फैन थी। ‘बॉबी’ के रिलीज होने के पहले ही डिम्पल राजेश खन्ना के आशीर्वाद की रानी बन चकी थी। ‘बॉबी’ जबरदस्त हिट तो हुई ही, हिंदी सिनेमा की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म भी बन गई। ऋषि कपूर और डिम्पल कपाड़िया रातोंरात चमकते सितारे बन गए, लेकिन डिम्पल के करियर पर राजेश खन्ना ने ब्रेक लगा दिया और फिल्मों में काम करने से मना कर दिया। इस तरह डिम्पल की प्रतिभा घर की चारदीवारी में कैद हो गई। यहाँ से इन दोनों के संबंधों में दरार पड़ी शुरू हो गई, जो समय के साथ-साथ और चौड़ी होती चली गई। डिम्पल ने एक दशक के लिए फिल्मों को अलविदा कह दिया था। इसी दौरान उनकी दोनों बेटियों ट्रिवंकल खन्ना और रिंकी खन्ना का जन्म हुआ। डिम्पल और राजेश खन्ना की शादी भी ज्यादा दिन नहीं चली और साल 1982 में डिम्पल राजेश खन्ना से अलग हो गई, लेकिन दोनों ने तलाक नहीं लिया था।



डिम्पी, डिम्पी कह कर ढूँढते रह गए राजेश खन्ना



डिम्पल के राजेश खन्ना से अलग होने का किस्सा भी बड़ा अलग है। ये बात उन दिनों की है जब राजेश खन्ना हीरोइन टीना मुनीम के साथ मॉरीशस में फ़िल्म सौतन की शूटिंग कर रहे थे। फ़िल्म के निर्देशक सावन कुमार टाक बताते हैं कि उस फ़िल्म की शूटिंग के दौरान ही राजेश खन्ना का टीना मुनीम से रोमांस शुरू हुआ था और डिम्पल कपड़िया उनके जीवन से बाहर चली गई थीं। टाक कहते हैं, 'डिम्पल मॉरीशस आई थीं, जब उन्होंने अपनी आंखों से देखा कि राजेश टीना मुनीम के बहुत नजदीक जा रहे हैं तो वो वापस मुंबई चली गई। एक दिन राजेश खन्ना शूटिंग से वापस आए तो वो उन्हें डिम्पी, डिम्पी, डिम्पी कह कर ढूँढ रहे थे, लेकिन उन्हें डिम्पल कहीं नहीं मिली। मैंने कहा काका आपने एक चीज नोटिस नहीं की। ड्रेसिंग टेबल के शीशे पर क्या लिखा है। उन्होंने पूछा, क्या? उस पर लिखा था, 'आई लव यू गुड बाया।' टाक आगे बताते हैं, 'बाद में पता चला कि डिम्पल जहाज से वापस मुंबई चली गई थीं। मुझे लगा कि इतनी बड़ी बात का भी राजेश खन्ना पर कोई असर नहीं हुआ और वो पहले की तरह टीना मुनीम के साथ शूटिंग करते रहे। उसके बाद डिम्पल उनके घर आशीर्वाद में कभी नहीं लौटी।'

वर्ष 1984 में प्रदर्शित फ़िल्म जख्मी शेर से डिम्पल ने फ़िल्म इंडस्ट्री में कमबैक किया, लेकिन यह फ़िल्म सफल नहीं हुई। वर्ष 1985 में डिम्पल को एक बार फिर से ऋषि कपूर के साथ सागर में काम करने का अवसर मिला। रमेश सिंही के निर्देशन में बनी इस फ़िल्म में डिम्पल ने अपने बोल्ड अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लिया। सागर के बाद डिम्पल की छवि फ़िल्म इंडस्ट्री में एक बोल्ड अभिनेत्री के रूप में बन गई। वर्ष 1986 में प्रदर्शित फ़िल्म 'जख्मी औरत' डिम्पल की महत्वपूर्ण फ़िल्मों में शुमार की जाती है। इस फ़िल्म में उन्होंने एक इंस्पेक्टर का किरदार निभाया था, जिसका बलात्कार हो जाता है और वह अपराधियों से अपना बदला लेती है।

'लेकिन' व 'रुदाली' डिम्पल की यादगार फ़िल्में



वर्ष 1991 में प्रदर्शित फ़िल्म 'लेकिन' डिम्पल की महत्वपूर्ण फ़िल्म साबित हुई। इस फ़िल्म से जुड़ा रोचक तथ्य है कि गायिका लता मंगेशकर ने इस फ़िल्म का निर्माण किया था। फ़िल्म में उनकी आवाज में 'यास सिली सिली' गीत श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुआ था। वर्ष 1993 में प्रदर्शित फ़िल्म 'रुदाली' डिम्पल की यादगार फ़िल्मों में एक है। राजस्थान की पृष्ठभूमि पर बनी इस फ़िल्म में उन्होंने 'शनिचरी' नामक एक ऐसी युवती का किरदार निभाया, जो तमाम दुःख के बाद भी नहीं रो पाती। हालांकि यह फ़िल्म टिकट खिड़की पर असफल साबित हुई, लेकिन अपने दमदार अभिनय से डिम्पल ने दर्शकों के साथ ही समीक्षकों का भी दिल जीत लिया।

अब तक तीन फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार

डिम्पल कपड़िया अब तक तीन बार फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार से सम्मानित की जा चुकी हैं। डिम्पल ने करीब पांच दशक लम्बे सिने कैरियर में 85 फ़िल्मों में अभिनय किया है। डिम्पल के करियर की उल्लेखनीय फ़िल्मों में कुछ हैं, अर्जुन, एतबार, काश, राम लखन, बीस साल बाद, बंटबारा, प्रहर, अजूबा, नरसिंहा, गर्दिंश, क्रांतिवीर, दिल चाहता है, बीइंग सायरस, दबंग, कॉकटेल, पटियाला हाउस और फाइंडिंग फैनी इत्यादि। डिम्पल को बॉलीवुड इतिहास की सबसे खूबसूरत हीरोइनों में से एक माना जाता है। एक मशहूर पत्रिका ने उन्हें बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत अभिनेत्रियों में मधुबाला के बाद दूसरा स्थान दिया था। डिम्पल ने सागर, जांबाज, जख्मी औरत जैसी फ़िल्मों में बिंदास दृश्य किए, जो उस दौर में बड़ी बात मानी गई।

राजेश खन्ना के बाद नए अफेयर की खबरें

व्यक्तिगत जीवन की बात करें तो पति राजेश खन्ना से अलग होने के बाद डिम्पल के जीवन में सभी देओल आए। सनी ने उनके साथ कई फ़िल्मों में काम किया। दोनों की जोड़ी ऑनस्क्रीन हिट साबित हुई और इसके साथ ही उनके अफेयर की खबरें भी सामने आने लगी। सनी और डिम्पल की लव स्टोरी



90's में काफी सुर्खियों में रही। अपने पहले प्यार अमृता सिंह से अलग होने के बाद सनी की लाइफ में डिम्पल आई। उस वक्त शादीशुदा (वाइफ पूजा) होने के बावजूद सनी ने डिम्पल को अपनी बीवी जैसा दर्जा दे रखा था। कहा जाता है कि दोनों ने गुपचुप तरीके से शादी भी कर ली थी। फ़िल्मी मैर्जीस में छपे लेखों के मुताबिक, जब सनी और डिम्पल एक दूसरे को डेट कर रहे थे तो डिम्पल की बेटियां ट्रिवंकल और रिंकी खन्ना सनी को 'छोटे पापा' कहकर बुलाने लगी थीं। डिम्पल अभी भी फ़िल्मों में एविटर है। 1957 में जन्म लेने वाली डिम्पल कपड़िया इस साल 8 जून को 68 साल की हो जाएंगी। हैप्पी बर्थडे डिम्पल कपड़िया।

जून में रिलीज होगी बहुप्रतीक्षित गुजराती फिल्म 'जलसो'



जोधपुर निवासी साहब राज नाहटा इन दिनों गुजराती फिल्म इंडस्ट्री का सबसे चर्चित नाम बने हुए हैं। उनकी प्रोडक्शन कंपनी लोटस फिल्म इंटरनेशनल की बहुप्रतीक्षित मल्टीस्टार गुजराती फिल्म 'जलसों' जून 2025 के दूसरे हफ्ते में रिलीज होने जा रही है। इस फिल्म को बालीवुड के सबसे मशहूर ट्रेड एनालिस्ट और परिक्रा 'फिल्म इन्फॉर्मेशन' के प्रकाशक संपादक कोमल नाहटा प्रस्तुत कर रहे हैं। यह फैमिली ड्रामा फिल्म सम्पूर्ण गुजरात और सौराष्ट्र के साथ मुंबई, दक्षिणी राजस्थान के कुछ सिनेमा स्क्रीन्स पर भी फिल्म रिलीज की जाएगी।

इस फिल्म के निर्देशक राजीव एस रुद्धा हैं, जिन्होंने इस फिल्म की कहानी भी लिखी है। कहा जा रहा है कि गुजराती सिनेमा के इतिहास में आज तक इतनी बड़ी स्टार कास्ट किसी एक फिल्म में नजर नहीं आई है। इस फिल्म में गुजराती के साथ-साथ हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के भी कई बड़े कलाकार नजर आएंगे। इन कलाकारों में अरुणा ईरानी, धर्मेश व्यास, भविन भानुशाली, पूजा जोशी, हेमंत पांडे, हितेन तेजवानी, गौरी प्रधान, हेमंग दवे, उत्सव नाइक, नवश राज, छाया वोरा, सोनाली देसाई, मुरली पटेल, पद्मेश पांडित, कुरुश देबू, इशिका श्रीसत, प्रीति गोस्वामी,



हंसी परमार, जय पटेल, नीरव पटेल और ओजस रावल (स्पेशल अपीयरेंस) जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

फिल्म के गीतकार हैं मिलिंद गढ़वाली और यश ईश्वरी। इनके लिखे गीतों को मधुर धुनों में पिरोया है

प्रसिद्ध संगीतकार राजेश शर्मा ने फिल्म की रिलीज के पहले ही इसका संगीत सुपर डुपर हिट साबित हो चुका है। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की मशहूर और बड़ी म्यूजिक कंपनी इट्स ने इस 'जलसों' फिल्म के म्यूजिक राइट्स खरीदे हैं। यह कमोबेश पहली बार है कि किसी गुजराती फिल्म का संगीत मुंबई में रहने वाले कुमार तौरानी, रमेश तौरानी की बड़ी संगीत कंपनी इट्स ने खरीदा है। फिल्म का स्क्रीन प्लॉ और डायलॉग कल्प त्रिवेदी ने लिखे हैं। वही फिल्म की सिनेमैटोग्राफी की है यूजीन डी सूजा ने। सम्पादन किया है पार्थ भट्ट और कोमल वर्मा ने। ड्रैन कैमरा का संचालन अतुल पराशर ने किया है। फिल्म की शूटिंग गुजरात के नवसारी सहित कई मशहूर स्थलों पर की गई है। फिल्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अहमदाबाद के मशहूर 'अक्षर क्रूज' पर भी शूट किया गया है। 'जलसों' का हिंदी में अर्थ होता है बड़ी पार्टी, मौज-मजा और मनोरंजन। फिल्म का ट्रेलर रिलीज हो चुका है, जिसकी व्यूअरिंग लाखों में पहुंच चुकी है। फिल्म के ट्रेलर को मिले रिस्पांस को देखकर लग रहा है कि यह फिल्म अपने नाम के अनुरूप अपने दर्शकों को भरपूर मनोरंजन देने जा रही है।

शब्दों का दीप: 'किताब घर' से समाज सुधार तक श्रीनाथ मोदी की यात्रा

परिवर्तन व प्रेरणा का माध्यम है साहित्य



बलवंत राज मेहता
वरिष्ठ पत्रकार



मोदी जी की भूमिका केवल बाल साहित्यकार तक सीमित नहीं थी। वे एक सजग और निर्भीक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने मृत्यु भोज, बाल विवाह, जात-पांत और अंधविश्वास जैसी रुद्धियों पर सीधा प्रहार किया। एक ओर वे बच्चों को हंसाते थे, तो दूसरी ओर बड़े-बूढ़ों को समाज के प्रश्नों से जूझने की प्रेरणा देते थे। उनके लिखे नाटक गांव-गांव में खेले गए, जहां वे इन कुप्रथाओं के खिलाफ सहज भाषा में संदेश देते थे। उन्होंने ग्राम सुधार को अपनी लेखनी और रंगमंच दोनों से गहरे जोड़ा। जब लोग चुप रहते थे, तब मोदी जी हारमोनियम लेकर मोहल्लों में निकलते और गीतों के माध्यम से जनजागरण करते। यही कारण है कि उन्हें सिर्फ लेखक नहीं, समाज-शिल्पी कहना अधिक उपयुक्त है।

श्री नाथ मोदी एक ऐसे दीपक थे, जिनकी लौ केवल बच्चों की आंखों में चमक नहीं भरती थी, वह समाज की जड़ताओं को भी पिघलाने की हिम्मत रखती थी। वे केवल शब्दों के जादूर नहीं थे, वे समाज के विवेक के जागरणकर्ता थे। 20 जून को उनकी 120वीं जयंती हमें याद दिलाती है कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि परिवर्तन और प्रेरणा का माध्यम होता है और श्रीनाथ मोदी इसके सबसे सुंदर उदाहरण थे।

बीसवीं सदी के प्रारंभ में, जब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और समाज कुरीतियों से त्रस्त, तब एक युवक ने जोधपुर की गलियों में हारमोनियम लेकर बच्चों को गीत सुनाने, कहनियां सुनाने और समाज को जगाने की पहल की। वह युवक सिर्फ लेखक नहीं था, बल्कि वह एक मिशन था। श्रीनाथ मोदी ने बच्चों के लिए कहनियां लिखीं, कविताएं, रचीं, व्यंग्य और संवादों से समाज को झकझोरा, और साथ ही शिक्षक के रूप में ज्ञान का दीप हर घर तक पहुंचाया।

राह दिखाती शब्दों की विरासत... उनकी जीवन यात्रा एक लंबा आंदोलन थी, बिना किसी पद, पुरस्कार या प्रचार के। आज, जब हम उनकी 120वीं जयंती पर उन्हें स्मरण कर रहे हैं, यह केवल किसी साहित्यकार की पुण्यतिथि नहीं है, यह आत्मचंतन का अवसर है। हम सबको यह सोचने का समय है कि क्या हम उस दीपक की लौ को आगे बढ़ा पा रहे हैं? श्रीनाथ मोदी जोधपुर की साहित्यिक और सामाजिक चेतना में वैसा ही स्थान रखते हैं, जैसा मरुधरा में कोई मीठा, शीतल कुआं— दुर्लभ, किन्तु जीवनदयी। वे अपने पीछे शब्दों की जो विरासत छोड़ गए हैं, वह आज भी हमें राह दिखाती है। हमें जरूरत है उस शब्द-दीप को फिर से जलाने की, उस साहिसिक लेखनी को फिर से पढ़ने की, और उस प्रेरक व्यक्तित्व को नई पीढ़ी से परिवित कराने की।

मूल्यों की पाठशाला थी उनकी कहानियां

जोधपुर की सांस्कृतिक फिजा में बाल साहित्य के क्षेत्र में जो प्रकाश उन्होंने फैलाया, उसकी मिसाल आज भी दी जाती है। जब बालकों के लिए गुणवत्तापूर्ण, नैतिक शिक्षा देने वाले साहित्य का अभाव था, तब उन्होंने यहां 'किताब घर' की स्थापना की। यह सिर्फ एक प्रकाशन संस्था नहीं थी, यह एक आंदोलन था— बचपन को दिशा देने का, किताबों को मित्र बनाने का, और अक्षरों से संस्कार रखने का। उनकी कहानियां केवल मनोरंजन नहीं थीं, वे मूल्यों की पाठशाला थीं। उनके पात्र हंसते थीं, सोचते थीं, और बच्चे उनके साथ जीवन जीना सीखते थे।

लेकिन मोदी जी की भूमिका केवल बाल साहित्यकार तक सीमित नहीं थी। वे एक सजग और निर्भीक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने मृत्यु भोज, बाल विवाह, जात-पांत और अंधविश्वास जैसी रुद्धियों पर सीधा प्रहार किया। एक ओर वे बच्चों को हंसाते थे, तो दूसरी ओर बड़े-बूढ़ों को समाज के प्रश्नों से जूझने की प्रेरणा देते थे। उनके लिखे नाटक गांव-गांव में खेले गए, जहां वे इन कुप्रथाओं के खिलाफ सहज भाषा में संदेश देते थे। उन्होंने ग्राम सुधार को अपनी लेखनी और रंगमंच दोनों से गहरे जोड़ा। जब लोग चुप रहते थे, तब मोदी जी हारमोनियम लेकर मोहल्लों में निकलते और गीतों के माध्यम से जनजागरण करते। यही कारण है कि उन्हें सिर्फ लेखक नहीं, समाज-शिल्पी कहना अधिक उपयुक्त है।

'मैं शिक्षा देता हूं, सलामी नहीं'

शिक्षक के रूप में भी उनका दृष्टिकोण बिल्कुल विशिष्ट था। वे विद्यार्थियों को मोम समझते थे और स्वयं को उस दीये के रूप में प्रस्तुत करते थे, जो उन्हें आकार देने के लिए स्वयं को जलाता है। उनके पढ़ाने का तरीका अनुभवप्रकर और प्रेरणात्मक था। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल दिग्गी या परीक्षा में अच्छे अंक नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और व्यक्तिगत विवेक की वृद्धि होनी चाहिए। यही कारण था कि उन्होंने स्वयं बच्चों के लिए अंकगणित की सरल और सृजनात्मक पुस्तकें लिखीं, जो आज तक अप्रकाशित हैं। इन पुस्तकों में उन्होंने न केवल सूत्र दिए, बल्कि सोचने की शैली भी सिखाई। उनकी निर्भीकता का परिचय उस समय मिला, जब एक अंग्रेज अफसर ए.पी. काक्स ने स्कूल निरीक्षण के दौरान उनसे खड़े होकर सलामी देने को कहा। श्रीनाथ मोदी ने विनम्र पर दृढ़ स्वर में उत्तर दिया— "मैं शिक्षा देता हूं, सलामी नहीं।" यह कथन मात्र शब्द नहीं थे, यह उस युग में स्वाभिमान की मशाल थी, जिसने शिक्षकों की गरिमा को परिभाषित किया।

■ उनकी प्रतिभा और लेखनी इतनी तीव्र थी कि ब्रिटिश दूरुपत तक भयभीत हो उठी। उनकी कुछ कृतियां, विशेषकर व्यंग्य-नाटक, जिनमें शासन, समाज और सामंती सोच की आलोचना थी, कभी प्रकाशित नहीं हो सकी। यह पीड़ा उनके भीतर थी। वे जानते थे कि उनकी रचनाएं समाज को दिशा दे सकती हैं, पर सत्ता को असहज करती थी। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी, उन्होंने लेखनी को रोका नहीं, भले ही वह पाठकों तक पूरी तरह नहीं पहुंच सकी। उनकी अप्रकाशित रचनाएं आज भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर की अमूल्य निधि हैं, जो आने वाले शोधकर्ताओं के लिए एथप्रदर्शक बनेंगी।

■ श्रीनाथ मोदी की कल्पना और रचना-शक्ति ने सिर्फ कागज पर नहीं, समाज की नसों में संवेदना और चेतना प्रवाहित की। उन्होंने बसंत पुस्तक मेला जैसे आयोजनों के माध्यम से साहित्य को त्वोहार बना दिया। वह पुस्तक मेला केवल किताबों की बिक्री का आयोजन नहीं था, वह विचारों का उत्सव था, बच्चों की कल्पनाओं का रंगमंच था। उस मेले में जब श्रीनाथ मोदी की पुस्तकें सजतीं, तो बच्चों की आंखों में चमक और मन में उत्सुकता भर जाती।

ग्रहों की चाल



ज्योतिश्री : विपुल डोभाल

ईमेल : vipravaani@gmail.com

मोबाइल : 9928424374



मेष

महीना कुछ सुखद समाचार लेकर आता दिल रहा है। नए प्रैग्रां प्रस्तुत आरंभ या पुराने घले में प्रगाढ़ता आती दिखाई दे रही है। भूमि भवन या वाहन की खरीद के लिए यह माह अच्छा है। स्वास्थ्य को लेकर अत्यधीनी थोड़ा सा ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। भाग्य वृद्धि कारक समय है। कई रुके हुए कार्य इस महीने पूर्ण होते दिखाई दे रहे हैं। संतान पक्ष का किसी दूरगामी स्थान पर स्थानांतरण हो सकता है। आय के साधन बढ़ेंगे और अनावश्यक व्यय पर लगाम लगेगी। बालाजी की उपासना आपके लिए इस महीने शुभ है।



वृषभ



सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह समय मित्र-जुलै असर वाला रहेगा। अपने क्रोध और भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए आप बढ़ेंगे तो सफलता प्राप्त होगी। कोई कार्यक्रम से संबंधित मामलों में निराशा हाथ लग सकती है। संतान पक्ष की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। सरकारी विभागों में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। भाग्य साठ प्रतिशत साथ देता दिखाई दे रहा है। किंतु पर्नी के साथ और प्रेम संबंधों में थोड़ी अनवन हो सकती है।

इस महीने पीली चीजों का दान और भगवान गणेश की उपासना आपके लिए शुभ रहेगी।



धनु

इस महीने अत्यधिकता से अधिक रिस्क लेने से बचें। विशेष रूप से शेष मार्केट, कमोडिटी इत्यादि में इन्डेक्ट करने वाले सर्वत रहें। भूमि, भवन या वाहन की खरीद में बाधा आ सकती है। संबंधित कागजों की पूरी तरह जांच करके ही आगे बढ़ें। व्यवस्थ का मानसिक तनाव रहेगा। पर्ली को स्वास्थ्य कष्ट रह सकता है। आपको भी छोटी-मोटी चोट एक्सीडेंट का भय बना हुआ है। भाग्य का प्रतिशत बहुत कम है। संतान की ओर से अत्यधीनी कुछ सुखद समाचार प्राप्त हो सकते हैं। फेफड़ों से संबंधित रोग हो सकता है। इस महीने शनि के बीज मंत्रों का जाप करना आपके लिए शुभ रहेगा।



मिथुन

प्रतियोगी परीक्षाओं और सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए यह महीना अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकता है। राजकीय विभागों में कार्यरत जातकों के लिए प्रोत्तिति के असर प्राप्त हो सकते हैं। आपके ऊपर कार्यमार्ग बदल सकता है, किंतु साथ ही ऊर्जा का सर्त भी ऊर्जा रहेगा और आप अपनी जिम्मेदारियां को पूरी तरह से बहन करने में सक्षम रहेंगे। कुटुंब में तावाकी रिति बन सकती है। अपने कर्म पर विश्वास रखें तो आपको इस महीने शुभ फल प्राप्त होता है। नहीं दिखाई दे रहा है। आय से अधिक व्यय होते दिखा रहा है। इस महीने शनि देव की उपासना और गुरु की सेवा आपके लिए शुभ फलदारी होगी।



कर्क

भावनाओं में रहकर कोई निर्णय न लें। याचाएं या भाग दोड़ होने की संभावना है। कुटुंब में किसी भी विवाद से बचाव रखें। भाग्य साथ देता हुआ नहीं दिखाई दे रहा है। सरकारी पदों पर असीन जातकों के लिए यह महीना अर्थिक रूप से लाभ दे सकता है। कला और लेखन के क्षेत्र में अगर आप कार्यरत होते रहे तो भी यह समय आपके लिए शुभफलदारी है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। अन्यथा नुकसान उठा सकते हैं। शांत मन से लिए गए निर्णय आपके लिए लाभप्रद रहेंगे। शनि देव की उपासना और पीली वस्तुओं का दान इस माह आपके लिए शुभ रहेगा।



कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह महीना थोड़े संघर्षों के बाद सफलता देता हुआ दिखाई दे रहा है। परिवार में तावाकी रिति हो सकती है। कोई भी दस्तावेज बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। खास तौर पर सरकारी विभागों में अगर आप कार्यरत होते आप पर आरोप प्रत्यारोपण सकते हैं। भाग्य 50 प्रतिशत ही साथ देता दिखाई दे रहा है। कोई कार्यक्रम इत्यादि प्रक्रिया से इस महीने दूर रहना आपके लिए शुभ रहेगा। सूर्य को जल अर्पित करें और गुरुजनों की सेवा करें तो आपके लिए यह माह कुछ हृदय तक बेहतर हो सकता है।



तुला

तुला राशि के जातकों के लिए यह समय कर्म प्रधान दिखाई पड़े रहा है। कड़ी मेहनत के बाद ही सफलता प्राप्त होगी। भाग्य बिल्कुल साथ नहीं दे रहा है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होती दिखाई दे रही है, जिसके कारण रोगों में बढ़ाती रहेगी। संतान के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित दिखाई पड़े रहे हैं। पल्नी के साथ मन मुताबूर रहेगा। प्रेम संबंधों में भी खटास आती दिखाई दे रही है। शत्रु परास्त होंगे। भाई बहनों के साथ संबंध प्राप्त होते दिखाई दे रहे हैं। इस महीने बालाजी की उपासना आपके लिए शुभ रहेगा।



वृश्चिक

रुके हुए कार्य थोड़ा प्रयास करने से आगे बढ़ सकते हैं। आपके पराक्रम और भाग्य का मिलकर बहुत बेहतरीन असर होता दिखाई दे रहा है। किसी वरिष्ठ जन या गुरुजन के द्वारा अपमान महसूस हो सकता है। संतान पक्ष की ओर से कुछ कष्ट रह सकता है। किसी बाहरी व्यक्ति के कारण दांपत्य जीवन में तलेरा उत्तर हो सकता है। माता-पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित दिखाई दे रहे हैं। सूर्य को जल अर्पित करना शुभ रहेगा। साथ ही साथ प्रत्येक गुरुवार घने कोंदाल व गुड़ का दान भी मान-सम्मान की रक्षा करेगा।



मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह महीना शुभ फल प्रदान करने वाला है। सुख और आय में वृद्धि होगी। संतान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होने की पूरी संभावना तय रही है। पॉर्टफोली और संबंधित विवाद समाप्त होने के आसान नजर आ रहे हैं। नए वाहन की खरीद या पुराने वाहन की मरम्मत पर धन व्यय हो सकता है। दूरगामी यात्रा के साथ ही और कुटुंब परिवार के कुछ सदस्यों से मुलाकात संभव है। शनि देव के बीज मंत्रों का जाप आपके लिए शुभ रहेगा।



कुम्भ

आपको सभी बड़े निर्णय टाल देने चाहिए, तर्वाकि वो दुरिधा के द्वंद में फँसकर द्वस्त हो सकते हैं। मन अशांत रह सकता है और बुद्धि भ्रमित रह सकती है। हालांकि कार्यक्षेत्र में आपको लाभ की स्थिति बनती दिख रही है। किंतु संतान से संबंधित कोई कष्ट रह सकता है। आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अनुकूल नहीं है। इसके अलावा भाग्य भी इन्हीं होती है। इस महीने बालाजी की उपासना आपके लिए शुभ रहेगी।



मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह समय दुविधाओं को त्याग कर ठोस निर्णय लेने का समय है। जिनके द्वारा गमी परिणाम आपके पक्ष में रहेंगे। वर्तमान आपने विवाद की रिति बन सकती है। भाई भाईयों के साथ विवाद की रिति बन सकती है। नेत्र देव हो सकते हैं और कान से संबंधित रोग भी परेशान कर सकते हैं। ऐसे कार्य जो लंबे समय से रुके हुए हैं, उनको इस महीने पूरा कर लें अन्यथा हो सकता है वह कार्य और आगे खींच जाए। भाग्य इस महीने साथ देता दिखाई दे रहा है। शनि देव की उपासना और पिता या पिता तृत्यांतियों की सेवा आपको शुभ फल प्रदान करेगी।



AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.



AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS



221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

Get Ready to Groove!

Jodhpur's Biggest

Dance Festival is Coming

Registration start

CHANNEL
24
NEWS

presents

Naachitz



THE NEW DANCING SENSATION

AGE GROUPS

05 TO 08 YRS.

09 TO 12 YRS.

13 TO 17 YRS.

18 YRS. TO ABOVE

DUET (2 PERSON)

GROUP DANCE

MOM'S SPECIAL

ARE YOU
READY?

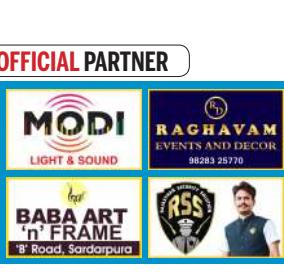
In association with



POWERED BY



SPONSORED



CO-SPONSORED



GIFT SPONSORED

FOR MORE INFORMATION
9928324422

OFFICIAL PARTNER



FASHION SHOW BY



FOOD & BEVERAGE PARTNER



FOR SPONSORSHIP... 9928026609